फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 74 संख्याः 336 प्रभात जयपुर, रविवार 7 जुलाई, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

# राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

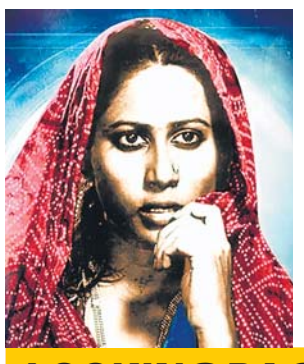

**LOOKING BACK AT MANTHAN**

"The film, through the lens of developmental politics shows how Benegal's film creates the space for a realism in cinema."

**All About Bombay Blood Group**

A national repository would improve the recruitment, retention, and coordination of rare blood donors.

# काफी रोचक रहेगा जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव इस बार

## भाजपा अपने घोषणा पत्र में वादा कर रही है कि, पाकिस्तान से पी.ओ.के. (पाक अधिकृत कश्मीर) वापस लेगी

- श्रीनंद झा -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। जम्मू व कश्मीर के आगामी विधान सभा चुनावों में भाजपा अपने चुनावी घोषणापत्र में पाकिस्तान के कब्जे वाले भाग "पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर" को "वापस अपने कब्जे" में लेने का वादा शामिल कर सकती है।

केन्द्र सरकार को लगता है सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित 30 सितम्बर की मियाद तक देश के उत्तरी राज्यों में चुनाव कराने के आदेश का सम्मान करने को तैयार है। पिछले साल 11 दिसम्बर को सुप्रीम कोर्ट ने देश के चुनाव को 30 सितम्बर 2024 तक चुनाव कराने का निर्देश दिया था। उम्मीद की जाती है कि चुनाव आयोग वर्तमान में चल रही अमरनाथ यात्रा के 19 अगस्त को समाप्त होने के बाद चुनावों की तारीखों का ऐलान करेगा।

कुछ समय पहले एक साक्षात्कार गृहमंत्री अमित शाह ने 30 सितम्बर तक इस वर्ष वादा किया था और चुनाव कराने का और इसके बाद राज्य का दर्जा बहाल करने का वादा किया था। वर्ष 2019 में, जम्मू व कश्मीर को दो भागों में बांट दिया गया था और इसको केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया था। अभी हाल ही में भाजपा की तरफ से जम्मू व कश्मीर में राजनीतिक गतिविधियों को तीव्र गति से बढ़ाया गया है। पार्टी के प्रदेश चुनाव प्रभारी जी. किशन रेड्डी व प्रभारी तरुण चुघ ने हाल ही में जम्मू में राज्य के भाजपा नेताओं के साथ चुनावी रणनीति को लेकर बैठक की थी।

इस बीच, भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा शनिवार को जम्मू के दौरे पर गए, जहां वे प्रदेश भाजपा की कार्यकारिणी समिति की बैठक को सम्बोधित करेंगे।

भाजपा जम्मू व कश्मीर में चुनावों से पूर्व कोई गठबंधन किए बगैर विधानसभा की 90 सीटों पर अपने दम पर अकेले चुनाव लड़ने की योजना बना रही है परन्तु संभावना है कि चुनावों के पश्चात "समान विचारधारा वाली पार्टियों" के साथ गठबंधन अस्तित्व में आ सकता है।

इस सप्ताह के पूर्वार्ध में, भाजपा के वरिष्ठ नेता जे.पी.नड्डा व अमित शाह ने प्रदेश इकाई के नेताओं के साथ पार्टी की चुनावी रणनीति पर चर्चा की थी और इसके साथ ही उन्हें चुनावों के लिए "तैयार रहने" का निर्देश दिया था। संयोगवश, राज्य की विधानसभा में सीटों की संख्या बढ़कर 114 हो गई है इनमें से 24 सीटें पाकिस्तान अधिकृत

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- लग रहा है कि, भाजपा गंभीर है कि, सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अनुपालना में 30 सितम्बर से पहले जे. एण्ड के. में विधानसभा चुनाव संपूर्ण हो जायें।
- ऐसा लग रहा है कि, 19 अगस्त को अमरनाथ यात्रा पूरी हो जाने के बाद, चुनाव का कार्यक्रम घोषित कर दिया जायेगा। इस बार जे. एण्ड के. विधानसभा की सीटें बढ़ाकर 114 कर दी गईं, इनमें 24 सीटें पी.ओ.के. (पाक अधिकृत कश्मीर) में हैं।
- चुनाव की तैयारी में जे. एण्ड के. के भाजपा के प्रभारी किशन रेड्डी और तरूण चुग ने रणनीति तैयार करने के लिये प्रदेशाध्यक्ष से मंत्रणा शुरु कर दी है तथा नड्डा भी श्रीनगर जा रहे हैं, प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक में भाग लेने।
- पी.डी.पी. की महबूबा मुफ्ती की हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में अनंतनाग-रजौरी में तथा उमर अब्बदुल्लाह की अपनी लोकसभा सीट पर पराजय से भाजपा काफी उत्साहित है।

## केन्द्रीय बजट 23 जुलाई को पेश होगा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। वित्त वर्ष 2024-25 के लिए केंद्रीय बजट 23 जुलाई को लोकसभा में पेश किया जाएगा। वहीं संसद का बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त के बीच आयोजित किया जाएगा। तारीखों की घोषणा संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने की।

रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, भारत की माननीय राष्ट्रपति ने भारत सरकार की सिफारिश पर बजट सत्र, 2024 के लिए संसद के दोनों सदनों को 22 जुलाई, 2024 से 12 अगस्त, 2024 तक बुलाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

- केन्द्रीय मंत्री किरण रिजिजू ने एक्स पर एक पोस्ट के जरिये बताया कि बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होकर 12 अगस्त के बीच आयोजित होगा।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पूर्ण बजट पेश करेंगी। उन्होंने 1 फरवरी को संसद में अंतरिम बजट पेश किया गया था। लगातार दूसरे कार्यकाल के लिए केंद्रीय वित्त मंत्री के रूप में नियुक्त की गईं सीतारमण लगातार सात केंद्रीय बजट पेश करने वाली पहली शख्सियत बन जाएंगी। वह मोरारजी देसाई को पीछे छोड़ देंगी जिन्होंने लगातार छह बजट पेश किए थे। बता दें कि आम चुनाव 2024 के बाद 24 जून से संसद का

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# राज्यपाल व विधानसभा स्पीकर के बीच अहम् की लड़ाई हास्यास्पद स्थिति तक पहुंची

## उपचुनाव जीतकर आए दो नये विधायकों को शपथ कौन दिलायेगा, इसका हल संविधान तथा विधानसभा की परम्पराओं के बीच लटकता रहा

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) और राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस के बीच चल रहा विवाद टी.एम.सी. के दो और विधायकों के शपथ ग्रहण के बाद आज और गहरा गया। राज्य विधानसभा के स्पीकर बिमान बनर्जी द्वारा सयंतिका बनर्जी और रेवात हुसैन सरकार को विधायक पद की शपथ दिलाने के बाद राज्यपाल ने सत्तारूढ़ पार्टी की आलोचना की।

सयंतिका बनर्जी और सरकार क्रमशः बड़ानगर और भगवानगोला निर्वाचन निर्वाचन क्षेत्रों से उपचुनाव जीते थे। इन उपचुनावों के नतीजे गत 5 जून को घोषित हुए थे। इनका शपथ ग्रहण तभी से लम्बित था, लेकिन सत्तारूढ़ तृणमूल और राज्यपाल कार्यालय के कारण इस पर सभी का फोकस था। स्पीकर बिमान बनर्जी ने अन्ततः उन्हें शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह के बाद तृणमूल के विधायकों ने सदन में "जय बांग्ला" के नारे लगाए।

तथापि, उसके बाद राज्यपाल बोस ने कहा कि राज्यपाल के दफ्तर द्वारा उनके अधीनस्थ आशीष बनर्जी की नियुक्ति किए जाने के बावजूद स्पीकर ने शपथ दिलवाकर संवैधानिक प्रक्रिया का उल्लंघन किया है। फिर भी, आशीष बनर्जी ने यह उल्लेख कर ऐसा करने से इंकार किया कि स्पीकर द्वारा शपथ दिलाये जाने के पूर्व उदाहरण मौजूद हैं।

बोस ने कहा है कि "स्पीकर द्वारा दो नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलाये जाने से हुई संवैधानिक अनीति को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को एक रिपोर्ट भेजी जाएगी।' बोस ने सोशल

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- मतगणना के बाद, रिज़ल्ट घोषित हो गया था, पर, राज्यपाल ने व्यवस्था दी कि दोनों नये विधायक उनके निवास पर आकर शपथ ग्रहण करें तथा शपथ दिलाने की जिम्मेवारी राज्यपाल ने डिप्टी स्पीकर को दी।
- विधानसभाध्यक्ष ने राज्यपाल को नीचा दिखाने की दृष्टि से विधानसभा का विशेष सत्र आहूत कर स्वयं नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिला दी।
- विधानसभाध्यक्ष ने दलील दी कि, विधानसभा केवल रूल्स से ही नहीं, संविधान के अनुसार चलती है।
- चर्चा है कि, शायद मामला सुप्रीम कोर्ट तक जाये।

# अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को विदेश पढ़ने भेजेगी तेलंगाना सरकार

## मुख्यमंत्री रैवन्त रेड्डी ने अल्पसंख्यकों के लिए एक कल्याणकारी योजना घोषित की है

- लक्ष्मण वैंकट कुची -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। तेलंगाना में रेवन्त रेड्डी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार अल्पसंख्यकों के लिये एक रूटीन कल्याणकारी योजना लेकर आई है जिसे लेकर विपक्षी भाजपा इसे "अल्पसंख्यक तुष्टीकरण" बताते हुये, जबरदस्त प्रहार कर सकती है। राज्य सरकार ने मुख्यमंत्री की "ओवरसीज स्कॉलरशिप स्कीम" के तहत, अल्पसंख्यक विद्यार्थियों से विदेश में अध्ययन करने में सहयोग/सहायता के लिये आवेदन पत्र मांगे हैं। यह योजना के चन्द्रशेखर राव के नेतृत्व वाली तेलंगाना राष्ट्र समिति सरकार ने 2015 में आरम्भ की थी।

19 मई, 2015 को राज्य सरकार ने एक विस्तृत गवर्नमैंट ऑर्डर एमएस नं. 24 के तहत यह योजना शुरू की थी। इसका उद्देश्य विदेशों में उच्च अध्ययन के लिये अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को सहयोग देना था। यह योजना अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, कैनाडा, सिंगापुर, जर्मनी, दक्षिण कोरिया, जापान, फ्रांस तथा न्यूजीलैंड के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पोस्ट ग्रेजुएट तथा पी.एचडी. कोर्स करने में पात्र अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की मदद करती है। इस योजना के अन्तर्गत चयनित उम्मीदवारों को 20 लाख रुपए तक की छात्रवृत्ति या वास्तविक ट्यूशन फीस, जो भी कम हो, प्रदान किए जाते हैं।

राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी की है कि 'स्प्रिंग ऑफ 2024' के लिये आवेदन पत्र स्वीकार किए जायेंगे। अधिसूचना के अनुसार आवेदन खिड़की 8 जुलाई से 7 अगस्त तक खुली रहेगी तथा जिन पात्र विद्यार्थियों ने 1 जनवरी से 31 जुलाई के बीच प्रवेश सुनिश्चित कर लिया है, उन्हें आवेदन करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

वस्तुतः राज्य सरकार केवल अल्पसंख्यक समुदाय के विद्यार्थियों की ही मदद नहीं कर रही है, बल्कि विदेश

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- यह योजना मई 2015 में तात्कालीन मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने घोषित की थी जिसके तहत अल्पसंख्यकों को विदेशों में पढ़ने के लिए 20 लाख रूपए तक की सहायता दी जाती है।
- राज्य सरकार ने कहा है कि, छात्रवृत्ति के लिए 8 जुलाई से 7 अगस्त तक आवेदन किया जा सकेगा।
- राज्य सरकार के इस फैसले ने भाजपा को कांग्रेस पर "मुस्लिम तुष्टीकरण" का आरोप लगाने का मौका दे दिया है।

## अमेरिका में आज़ादी के जश्न में गोलीबारी, 33 मरे

कैलिफॉर्निया, 6 जुलाई। अमेरिका में हर साल की तरह इस बार भी 4 जुलाई को लोगों ने अपने परिवार और दोस्तों के साथ आजादी का जश्न मनाया। इस दौरान देश के विभिन्न हिस्सों में गोलीबारी और हिंसा की घटनाओं में 33 लोगों की मौत हो गई। सबसे ज्यादा 11 लोग शिकागो में मारे गए।

- अमेरिका में चार जुलाई को आयोजित "इंडिपेंडेंस डे" समारोहों में देश भर में कई जगहों पर नागरिको द्वारा गोलियां चलाने की घटनाएं सामने आईं।

शिकागो सनटाइम्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, शिकागो में गोलीबारी में 11 लोग मारे गए और 55 अन्य घायल हो गए। इसमें दो महिलाएं और एक 8 वर्षीय लडका शामिल है। उधर, कैलिफोर्निया के हंटिंगटन बीच में स्वतंत्रता दिवस पर आतिशबाजी शो खत्म होने के दो घंटे बाद एक हमले में दो लोग मारे गए। उधर, क्लीवलैंड में एक 10 वर्षीय लडकी की हत्या कर दी

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# तेलंगाना में रैवन्त रेड्डी ने के.सी.आर. को दिखाया "जैसी करनी वैसी भरनी"

## तेलंगाना में पूर्व मुख्यमंत्री के.सी.आर. ने कांग्रेस के साथ जो किया अब रैवन्त रेड्डी बी.आर.एस. के साथ वही कर रहे हैं

- लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जुलाई। जानी-मानी कहावत है जैसी करनी वैसी भरनी। आप किसी के साथ जैसा व्यवहार करोगे वैसा ही व्यवहार उससे बदले में पाओगे, और यह बात बिलकुल पक्की है खास तौर से राजनीति में।

तेलंगाना के पूर्व शक्तिशाली मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने जो व्यवहार पूर्व में कांग्रेस के साथ किया था आज वही उनको तकलीफ दे रहा है।

पिछले दस वर्षों से भी अधिक समय से उन्होंने कांग्रेस के नेताओं को तोड़ने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी और इस दल को तोड़कर एक छोटे से समूह में बदल दिया था और इस प्रकार विधानसभा में अपने विधायकों की संख्या बढ़ाकर राज किया तथा संसद के चुनावों में भी उनकी संख्या में वृद्धि हुई है। चुनावों में कांग्रेस के जो विधायक निर्वाचित हुए थे उन्हें कांग्रेस से तोड़कर अपनी पार्टी में शामिल कर लिया और एक बार स्थिति ऐसी बन गई मानों तेलंगाना प्रदेश में केवल दो ही पार्टियां रह गई हों।

सत्ताधारी बी.आर.एस. तथा अपने को मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप में पेश कर रही भाजपा और कांग्रेस के लोग बी.आर.एस. व भाजपा में चले गए थे।

जब तक रैवन्त रेड्डी ने कांग्रेस की कमान नहीं संभाली थी यही स्थिति थी। रेड्डी ने कांग्रेस के अध्यक्ष बनते ही पार्टी का पुनर्गठन करना शुरू कर दिया और अपनी पार्टी के पुराने साथियों को वापस पार्टी में लाना शुरू कर दिया।

के.सी.आर. को प्रदेश की सत्ता से बाहर करने के बाद, रेवन्त रेड्डी ने चुपचाप पार्टी के पुराने सहयोगियों को मनाकर वापस लाने का कार्यक्रम शुरू किया और अब वे बी.आर.एस. के नेताओं को तोड़ रहे हैं। बी.आर.एस. के एक वरिष्ठ नेता के. केशव राव के पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- बी.आर.एस. के राज्यसभा सदस्य केशव राव एवं बी.आर.एस. के विधायकों को रैवन्त रेड्डी पहले ही कांग्रेस में शामिल कर चुके हैं और हाल ही में इसी पार्टी के दस विधान परिषद सदस्यों को भी रेड्डी ने कांग्रेस की सदस्यता दिलवाई है।
- बी.आर.एस. के वर्किंग प्रैसिडैंट के.टी. रामाराव ने इस दलबदल को लेकर कांग्रेस पर कटाक्ष किया कि, कांग्रेस ने अपने मैनिफैस्टो "न्याय पत्र" में दल-बदल रोकने के लिए संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन की बात कही है। क्या यही है कांग्रेस का न्याय पत्र?
- ज्ञातव्य है कि, जब के.सी.आर. मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने कांग्रेस के बहुत सारे नेताओं को तोड़ा, यहां तक कि, प्रदेश में कांग्रेस एक छोटा सा समूह बनकर रह गई थी। राज्य में दो ही पार्टियाँ बची थीं सत्तारूढ़ बी.आर.एस. और विपक्षी भाजपा।
- पर, जैसे ही रैवन्त रेड्डी ने तेलंगाना में कांग्रेस की कमान संभाली तो हालात बदलने लगे। वे एक-एक कर न केवल कांग्रेसियों को वापस लाए बल्कि मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने बी.आर.एस. में भारी तोड़-फोड़ मचा दी है।

## कश्मीर में दो अलग-अलग मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गये

श्रीनगर, 6 जुलाई (वार्ता) जम्मू-कश्मीर के कुलगाम जिले में शनिवार को दो अलग-अलग मुठभेड़ों में चार आतंकवादी मारे गए और एक सैनिक शहीद हो गया।

- यह मुठभेड़ ऐसे समय पर हुई है जब कश्मीर में अमरनाथ यात्रा चल रही है। मुठभेड़ में एक भारतीय सैनिक शहीद हो गया।

अधिकारियों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कुलगाम में दो मुठभेड़ें ऐसे समय में हुई हैं जब अनंतनाग जिले में नुनवान-पहलगाम मार्ग और गंदेरबल जिले में बालटाल मार्ग से पिछले शनिवार को शुरू हुई अमरनाथ यात्रा के कारण पूरे जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। दोनों मार्गों से तीर्थयात्रियों को कुलगाम जिले से होकर गुजरना पड़ता है। अधिकारियों ने बताया कि पहली

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# गहलोत राज में राज्य भंडारण निगम द्वारा अरबों रु. का घोटाला करने का आरोप लगाया डॉ. किरोड़ीलाल ने

## डॉ. मीणा ने 21 जनवरी 2024 की सी.ए.जी. रिपोर्ट का हवाला देते हुए मु.मंत्री भजनलाल को गत 16 मई 2024 को लिखित शिकायत करते हुए इस घोटाले की जांच करवाने, टैंडर निरस्त करने और दोषी बड़े अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की थी

-यादवेन्द्र शर्मा-

जयपुर, 6 जुलाई। कैबिनेट मंत्री व वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने पूर्ववर्ती अशोक गहलोत की सरकार में राजस्थान राज्य भंडारण निगम द्वारा कल्पतरू समूह की कंपनी श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. को टैंडर देने की आड़ में अरबों रुपये का घोटाला करने का आरोप लगाया है।

डॉ. किरोड़ीलाल ने 21 जनवरी 2024 की सी.ए.जी. की रिपोर्ट का हवाला देते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को गत 16 मई 2024 को शिकायती पत्र लिखते हुए इस घोटाले की जांच करवाने, टैंडर निरस्त करने और दोषी बड़े अधिकारियों के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की।

राजनैतिक गलियारों में डॉ. किरोड़ीलाल मीणा द्वारा अचानक इस्तीफा देने को लेकर अलग-अलग चर्चाएं हैं। चर्चाएं यह भी हैं कि, मंत्री किरोड़ीलाल ने अपना इस्तीफा इसलिए दिया है, कि पूर्ववर्ती अशोक गहलोत की सरकार में हुए अरबों रुपये के घोटाले उजागर करने के बाद भी मौजूदा भाजपा सरकार इस पर कोई सख्त एक्शन नहीं ले रही है।

दूसरी चर्चा यह भी है कि, डॉ. किरोड़ीलाल ने अपना इस्तीफा इसलिए भी दिया है कि, उनके प्रभाव क्षेत्र में भाजपा ने लोकसभा चुनाव-2024 में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया। किरोड़ीलाल स्वयं भी चुनाव के दौरान व बाद में भी कई बार कह चुके थे कि, अगर उनके क्षेत्र से भाजपा ने जीत दर्ज नहीं की तो वह मंत्री पद से इस्तीफा दे देंगे।

परन्तु इस घटनाक्रम के बीच, किरोड़ीलाल ने पिछली सरकार के जो घोटाले उजागर करने का दावा किया था, क्या वह पूर्णतः काल्पनिक थे अथवा उनमें कोई बड़ी सच्चाई थी?

किरोड़ीलाल मीणा ने गत 16 मई 2024 को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को जो पत्र लिखा था, उसमें 21 जनवरी 2024 को वरिष्ठ उपलेखाकार संजीव सुराणा की ओर से राज्य सरकार को भेजी गई सी.ए.जी. रिपोर्ट का हवाला दिया था। किरोड़ीलाल के आरोप थे कि, इस रिपोर्ट के मुताबिक, जून-2020 में राजस्थान राज्य भंडारण निगम ने गोदाम निर्माण, गोदामों को पी.पी.पी. मोड पर देने और उनका प्रबंधन करने के लिए श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. और ऑरिगो कंपनी के साथ एम.ओ.यू. किया था।

इस अनुबंध के मुताबिक गोदामों की वार्षिक उपयोगिता 70 प्रतिशत से कम रहने पर नुकसान की भरपाई इन दोनों कंपनियों से की जानी थी। किरोड़ीलाल का कहना है कि, वर्ष 2023-24 में डिफैक्ट की यह रकम करीब 120 करोड़ रु. वसूली जानी है। इसके बावजूद भंडारण निगम ने यह वसूली कंपनी से नहीं की, उल्टा श्री शुभम लॉजिस्टक कंपनी ने राजस्थान सरकार के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में परिवाद दायर कर दिया और अब कुछ अधिकारी अदालत में राज्य सरकार के पक्ष में कमजोर पैरवी कर रहे हैं।

किरोड़ीलाल मीणा का आरोप था कि, एम.ओ.यू. की शर्तों के मुताबिक कंपनी द्वारा किराये पर लिए जाने वाले गोदाम भी भंडारण निगम के माने जाएंगे, इससे निगम को किराये की 70 फीसदी

- किरोड़ीलाल के आरोप थे कि, जून-2020 में राजस्थान राज्य भंडारण निगम ने गोदाम निर्माण, गोदामों को पी.पी.पी. मोड पर देने और उनका प्रबंधन करने के लिए श्री शुभम लॉजिस्टिक लि. और ऑरिगो कंपनी के साथ एम.ओ.यू. किया था। तथापि, शर्तों की पालना नहीं करने के बावजूद कंपनी से 120 करोड़ रु. की पैनल्टी नहीं वसूली गई।
- सी.ए.जी. की रिपोर्ट में भी भंडारण निगम के अधिकारियों द्वारा इन दोनों कंपनियों पर मेहरबानी दिखाने और उन्हें करोड़ों रु. का फायदा पहुंचाने की बात कही गई है, जिससे किरोड़ीलाल के आरोप सत्यापति होते हैं। लेखाकारों ने बैंक गारंटी, कंपनी से पैनल्टी वसूली व अन्य प्रकरणों को लेकर जब विभाग से जवाब मांगा तो हर बार असंतोषजनक जवाब पाया।
- ऑडिट रिपोर्ट में ऑडिटर्स ने कई गंभीर गलतियां पकड़ीं, जिसमें श्री शुभम लॉजिस्टिक व ऑरिगो कंपनी को नाजायज लाभ पहुंचाने का प्रयास स्पष्ट हुआ है। स्टेट वेयर हाऊसिंग कॉर्पोरेशन इन आपत्तियों में से एक का भी संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया।

## विचार बिन्दु

जब जिन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने का मौका नहीं मिलता, तब वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।
–खलील जिब्रान

# आयुर्वेद के रसायन मानवता के लिये वरदान हैं

आज की चर्चा एक बार पुनः आयुर्वेद के रसायनों पर है। जैसा कि पहले चर्चा की जा चुकी है, जीवन में एक ऐसा समय आता है जब कितना ही बुद्धिमान डॉक्टर हो या कितनी ही बढ़िया चिकित्सा हो, रोग ठीक करना मुश्किल हो जाता है। यदि व्यक्ति का बल और मांस क्षीण हो जाये तो ऐसा भान होने लगता है जैसे आयु पूरी हो चुकी है। कोई महाव्याधि अचानक निवर्तित हो जाये व भोजन से मिलने वाले लाभ मिलना भी बंद हो जायें तो भी यही स्थिति बनती है (देखें, सु.सू.32.7–8): चिकित्स्यमानः सम्यक्‌ च विकारो योऽभिवर्धते। प्रक्षीणबलमांसस्य लक्षणं तद्गतायुषः।। निवर्तते महाव्याधिः सहसा यस्य देहिनः। न चाहारफलं यस्य दृश्यते स विनश्यति।। जानी–मानी व बहुत लोगों पर सफल और बढ़िया तैयार औषधि भी यदि किसी व्यक्ति में वांछित प्रभाव ना दे पा रही हो तो व्यक्ति को गैर–उपचार योग्य श्रेणी में माना जाता है। चिकित्सक की सलाह से तैयार कर दिये गये भोजन का वांछित परिणाम नहीं मिल रहा हो, तो चिंताजनक स्थिति मानी जाती है (देखें, च.इ.12.7–8): विज्ञातं बहुशः सिद्धं विधिवच्चावचारितम्। न सिध्यत्योषधं यस्य नास्ति तस्य चिकित्सितम्।। आहारमुपयुञ्जानो भिषजा सूपकल्पितम्। यः फलं तस्य नाप्नोति दुर्लभं तस्य जीवितम्।। बात यहाँ अति–कठिन परिस्थिति की है।

वस्तुतः आयुर्वेद के दृष्टिकोण से माना जाता है कि जब मृत्यु का समय निकट आता है तो कुछ अरिष्ट प्रकट होते हैं (देखें, च.इ.2.5): न त्वरिष्टस्य जातस्य नाशोऽस्ति मरणादृते। मरणं चापि तन्नास्ति यन्नारिष्टपुरःसरम्।। किन्तु माना यह भी जाता है कि अरिष्ट को निर्विवाद रूप से पहचानने में त्रुटि भी हो सकती है (देखें, च.इ.2.6): मिथ्यादृष्टमरिष्टाभमनरिष्टमजानता। अरिष्टं वाऽप्यसम्बुद्धमेतत् प्रज्ञापराधजम्।। कहने का तात्पर्य यह है कि हो सकता है वास्तव में अरिष्ट प्रकट ना हुआ हो, फिर भी त्रुटिवश प्रकट हुआ मान लिया जाये।

अतः यदि भ्रम की स्थिति हो तो चिकित्सा की जाये या नहीं? यदि हाँ, तो कैसी चिकित्सा उपयुक्त हो सकती है? मेरे विचार से अरिष्ट की सही या गलत पहचान के पचड़े से बाहर निकल कर चिकित्सा करना ही उचित है। ऐसे अनेक लोग हैं जिन्हें अंतिम स्थिति में पहुंचा हुआ मानकर धरती पर लिटाकर तुलसी और गंगाजल खिला–पिला दिया गया। गाय की बछिया की पूँछ पकड़ा कर दान–पुण्य भी करा दिया गया। पर वे फिर उठ खड़े हुये और कई साल चले। इसलिये जब तक प्राण हैं, चिकित्सा करना उपयोगी है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसी कौन सी चिकित्सा है जो अरिष्ट निवारण में सक्षम हो सकती है? वैसे तो अरिष्ट–निवारण की सामर्थ्य कम ही व्यक्तियों में होती है, तथापि यह असंभव नहीं है। अरिष्ट प्रकट होने के बाद भी युक्ति–व्यपाश्रय, सत्त्वावजय और दैव–व्यपाश्रय की त्रिवेणी में की गयी चिकित्सा मृत्यु को टाल सकती है। इसका संकेत वैज्ञानिक–महर्षि आचार्य सुश्रुत ने दिया है। रिष्ट उत्पन्न होने पर मृत्यु निश्चित है, तथापि मानस दोषों से मुक्त विद्वान के द्वारा या रसायन, तप, और जप में पारंगत व्यक्ति द्वारा मृत्यु का निवारण किया जा सकता है (देखें, सु.सू.28.5): ध्रुवन्तु मरणं रिष्टे ब्राह्मणैस्तत् किलामलैः। रसायनतपोजप्यतत्परैर्वा निवार्य्यते।। कठिन रोगों की स्थिति में भी बचने की संभावना यहाँ साफ़ दृष्टिगोचर है।

क्या वास्तव में रसायन इतने उपयोगी और प्रभावी हैं? संहिताओं, शोध और अनुभव तीनों में ही इस प्रश्न का उत्तर धनात्मक ही मिलता है। आइये पहले संहिताओं के वे प्रमाण देखते हैं जो केवल कठिन रोगों व परिस्थितियों के सन्दर्भ में हैं। पहला प्रमाण आचार्य सुश्रुत के उस कथन से मिलता है जिसमें रोगों की सूची देते हुये संकेत किया गया है कि ये रोग रसायन के बिना असाध्य हो जाते हैं (देखें, सु.सू.33.3): ये जुष्टा व्याधयो यान्त्यवार्यताम्। रसायनाद्विना वत्स तान् शृण्वेकमना मम।। इस संदर्भ से यह संकेत तो स्पष्ट है ही कि रसायन से रोगों को उन अवस्थाओं में जाने से रोका जा सकता है जहां वे चिकित्सा की दृष्टि से असाध्य हो जाते हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रसायन असाध्य रोगों को भी साध्य बनाते हुये चिकित्सा में मददगार हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, हालाँकि कुष्ठ और प्रमेह असाध्य होते हैं, पर आचार्य सुश्रुत ने स्वयं एक ऐसा योग दिया है जो असाध्य कुष्ठ और प्रमेह को भी ठीक कर देता है (सु.चि. 10.12): एषौषधायस्कृतिरसाध्यं कुष्ठं प्रमेहं वा साधयति। वस्तुतः यह उस सिद्धान्त की विजय है जिसमें आचार्य चरक ने चिकित्सा की सफलता में युक्ति को सर्वोपरि माना है। यहाँ निहितार्थ यह है कि यदि रसायन चिकित्सा की जाये तो ये रोग असाध्य नहीं हो पाते। आधुनिक वैज्ञानिक शोध में रसायन उसी प्रकार उपयोगी पाये गये हैं जैसा कि आचार्य सुश्रुत ने निर्दिष्ट किया है। दूसरा प्रमाण, चरकसंहिता की टीका में चक्रपाणि द्वारा महर्षि अगस्त्य को उद्धृत करते हुए कहा गया है कि रसायन, तप व जप में सिद्ध महान लोग काल मृत्यु को भी जीत लेते हैं, पर आलसी आदमी नहीं (देखें, च.सू.1.62 पर चक्रपाणि.): रसायनतपो जापयोगसिद्धैर्महात्मभिः। कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैनरैः।। तीसरा प्रमाण महर्षि–वैज्ञानिकआचार्य चरक द्वारा सोसायटल कोलैप्स या जनपदोध्वंश की स्थिति–हवा, पानी, मिट्टी और ऋतुओं के प्रदूषित हो जाने से उत्पन्न महामारियाँ–में पंचकर्म व रसायनों के द्वारा समस्या निवारण हेतु सुझाया गया रास्ता है (देखें, च.वि.3.13–14): येषां न मृत्युसामान्यं सामान्यं न च कर्मणाम्। कर्म पञ्चिवधं तेषां भेषजं परमुच्यते।। रसायनानां विधिवच्चोपयोगः शस्यते। शस्यते देहवृत्तिश्च भेषजैः पूर्वमुद्धृतैः।। रसायन द्रव्यों के साथ ही अद्रव्य रसायन भी हैं जो सत्त्वावजय और दैव–व्यपाश्रय चिकित्सा में मददगार हैं। उदाहरण के लिये दान, विनम्रता, दया, सत्य, ब्रह्मचर्य, कृतज्ञता, मित्रता, रसायन व अच्छे कार्य सब उम्रवर्धक हैं (अ.हृ.शा.3.120): दानशीलदयासत्य ब्रह्मचर्यकृतज्ञताः। रसायनानि मैत्री च पुण्यायुर्वृद्धिकृद्गणः।।

**आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है।**

संहिताओं के साथ ही आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों से भी रसायनों की क्रियात्मकता के ठोस प्रमाण मिल रहे हैं। मेरे ज्ञान में रसायन योगों पर 2100 शोधपत्र और एकल रसायनों पर कम से कम 5000 शोधपत्रों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसमें रसायनों की त्रिदोष–नियामकता पर ठोस प्रश्नचिन्ह लगाया हो। आइये कुछ उदाहरण देखते हैं।

उम्र–आधारित रोगजनन का एक प्रमुख कारण डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म में गड़बड़ी होना माना जाता है। जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाये जाने वाले तंतुनुमा अणु को डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड या डी.एन.ए.कहा जाता है। इसी में अनुवांशिक कोड निहित रहता है। जैसे जैसे डी.एन.ए. डैमेज का बोझ बढ़ता जाता है, शरीर बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है। इस कारण अनेक समस्यायें जैसे कैंसर, न्येरोडीजेनरेशन और बढ़ती उम्र के कारण होने वाली अनेक व्याधियां विकसित हो जाती हैं। शरीर की कोशिकाओं द्वारा डी.एन.ए. डैमेज के संकेत प्राप्त करना और टूट–फूट की मरम्मत करने की क्षमता उम्र के साथ घटती जाती है। इसीलिये बढ़ती उम्र में अनेक रोग लग जाते हैं।

तो क्या आयुर्वेद के रसायन बढ़ती उम्र के लोगों में डी.एन.ए. रिपेयर मैकेनिज्म की गति को बढ़ा सकते हैं? इस विषय में कई अध्ययनों से यह सिद्ध होता है कि रसायन औषधियाँ डी.एन.ए. रिपेयर की गति को बढ़ाकर बुढ़ापा आने की गति को धीमा कर देती हैं। हाल में हुये एक क्लीनिकल ट्रायल में पाया गया कि आमलकी रसायन के प्रयोग से डी.एन.ए.स्ट्रैंड में तोड़फोड़ की गति कम होती है तथा रिपेयर मैकेनिज्म तेज हो जाती है। यह रसायन सुरक्षित भी पाया गया है। एक अन्य अध्ययन में, जो 45–60 वर्ष के लोगों के मध्य किया गया, पाया गया है कि आमलकी रसायन का प्रयोग रक्त की परिफेरल ब्लड मोनोन्यूलियर सेल्स में टीलोमीयर की लम्बाई में बदलाव किये बिना टीलोमेरेज क्रियात्मकता को बढ़ा देता है। इससे चूंकि टीलोमियर के क्षरण में कमी आती है, अतः हैल्थस्पान में बेहतरी होती है। एक तीसरा उदाहरण अश्वगंधाा का दिया जा सकता है। कुल 50 स्वस्थ खिलाड़ियों के मध्य किये गये क्लीनिकल ट्रायल में यह पाया गया है कि अश्वगंधा की जड़ों का एक्सट्रैक्टकार्डियोरेस्पायरेटरी सहनशीलता को बढ़ा देता है। इसके अलावा अनेक इनवाइट्रो, इन वाईवो और क्लिनिकल अध्ययन में अश्वगंधा और आमलकी सहित तमाम रसायनों द्वारा कैंसर, मधुमेह, कार्डियोवैस्कुलर बीमारियाँ, मानसिक बीमारियों तथा अपर–रेस्पायरेटरी–ट्रैक्टसंक्रमण से बचाव होता है। एक प्रमाण–आधारित तथ्य यह भी है कि आयुर्वेद के रसायनों से बेहतर एंटी–एंग्जाइटी व वाजीकर से बेहतर एंटी–डिप्रेशेंट औषधि कोई नहीं है। बुढ़ापा आने का एक कारण ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन का बढ़ना भी है। रसायन द्रव्यों के उपयोग करते रहने से शरीर का व्याधिक्षमत्व बढ़ता है तथा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी होती है।

उत्तम बात यह है कि कुछ ऐसे द्रव्य हैं जो आहार, रसायन और औषधि, तीनों ही प्रकारों में वर्गीकृत हैं। फल व सूखे मेवे, खजूर, द्राक्षा, मुनक्का, बादाम, तिल, आँवला, लहसुन, सोंठ, कालीमिर्च, पिपली, हल्दी, केसर, जीरा, धनिया, मूंग, जल, दूध, घी, तुलसी, शहद, गुड़, त्रिकटु एवं त्रिफला आदि ऐसे द्रव्य हैं जिनके युक्तिपूर्वक सेवन के लिये किसी क्लिनिकल ट्रायल का इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है। संहिता, साइंस और अनुभव सब इन द्रव्यों के पक्ष में हैं।

मृत्यु की तिथि तय नहीं है, अपितु प्राणियों की आयु युक्ति की अपेक्षा रखती है (च.वि. 3.29: भूतानामायुर्युक्तिमपेक्षते। युक्ति से उम्र बढ़ सकती है। असल में युक्तिव्यपाश्रय आचार्य चरक द्वारा आयुर्वेदाचार्यों पर किये गये विश्वास की पराकाष्ठा है। चिकित्सा में सफलता युक्ति पर निर्भर है (च.सू. 2.16): सिद्धिर्युक्तौ प्रतिष्ठिता। जब सफलता युक्ति पर आश्रित हो तो साध्य–असाध्य या अरिष्ट की जाँच–परख से ज्यादा महत्त्व युक्ति के प्रयोग पर दिया जाना चाहिये। और इस युक्ति में रसायन महत्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसलिये मेरा मानना है कि आयुर्वेदाचार्यों की देखरेख में लिये जाने वाले रसायन मौत के मुंह से निकाल लाने की क्षमता रखते हैं। रसायनों की क्षमताओं को पहचानिये। रसायन जरा–व्याधि का नाश तो करते ही हैं, जीवन का नाश भी रोक सकते हैं।

**–अतिथि सम्पादक,**
**डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,**
**( भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंगप्रोफेसर )**
**( यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं )**

# मौसम की मार से प्याज-टमाटर सहित कई सब्जियों के भाव बढ़े

## प्याज-टमाटर ही नहीं आलू भी कर रहा आम आदमी की जेब ढीली

- हरी सब्जियां आम आदमी की थाली से दूर होती जा रही है
- सब्जियों के दाम में बढ़ोतरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ा

मौसम की मार से सब्जियों के दामों बढ़ोतरी होने लगी है।

**अजमेर, (कासं)।** प्रदेश में मानसून का आगमन हो चुका है, ऐसे में प्याज–टमाटर समेत कई सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। मंडी से लेकर खुदरा बाजार तक के दाम में बड़ा असर देखने को मिल रहा है। इस महंगाई की रेस में आलू भी पीछे नहीं है। आलू का दाम 32 से 35 पहुंच गया है। बारिश के कारण किसानों की फसल प्रभावित हुई है। सब्जियों के दामों में भारी उछाल के चलते आम जनता के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गई हैं। प्याज–टमाटर ही नहीं अब आलू भी आम आदमी की जेब ढीली कर रहा है, सब्जियों के भाव बढ़ने से अब वे आम आदमी की थाली से हरी सब्जियां दूर होती जा रही हैं।

टमाटर के साथ आलू की कीमते चर्चा में:–मानसून के साथ ही प्याज–टमाटर सहित सब्जियों के भाव आसमान छू रहे हैं। इस बार टमाटर की कीमतें सबसे ज्यादा चर्चा में हैं। बाजार में टमाटर का भाव 80 रुपए तो वहीं प्याज की 50 रुपए प्रति किलो मिल रही है, इसके साथ ही आलू जो हर परिवार की थाली का मुख्य हिस्सा होता है, आलू के दाम 40 रुपए प्रति किलो पहुंचने के साथ ही सब्जियों के दाम में बढ़ोत्तरी से महिलाओं की रसोई का बजट बिगड़ गया है। आम आदमी के लिए 40 रुपए प्रति किलो कीमत पर आलू खरीदना भी मुश्किल हो गया है। वहीं हरी सब्जियों के दामों में भी भारी बढ़ोतरी देखी जा रही है, गंवार फली 160 रुपए प्रति किलो और भिंडी 50 रुपए प्रति किलो, बैंगन 80 रुपए, फूल गोभी 80 रुपए, टिंडे 100 रुपए, तुरई 80 रुपए पहुंच गई है।

दाम बढते से घरेलू बजट पर असर:–सब्जी की कीमतों में बढ़ोतरी से आम उपभोक्ता के बजट से बाहर होने से घरेलू बजट बिगड़ रहा है। किसानों और व्यापारियों का कहना है कि मानसून के कारण सब्जियों की फसल को नुकसान पहुंचा है जिससे उनकी आपूर्ति में कमी आई है। इसके साथ ही परिवहन और भंडारण की लागत भी बढ़ गई है जो कीमतों में वृद्धि का एक अन्य कारण है। इस महंगाई के चलते आम आदमी की परेशानी बढ़ गई है। महिलाओं को घर के बजट में संतुलन बनाना मुश्किल हो रहा है।

मौसम की मार:–पानी लगने की वजह से प्याज अब दागी हो रहा है, जिससे किसानों को ट्रालियां तक यूं ही फैंकनी पड़ रही है। दूसरी ओर आलू की बात करें तो अब की बार पैदावार कम हुई है जिसके चलते दाम बढ़ रहे हैं। दूसरी ओर मंडी में की जाने वाली खरीद और खुदरा बाजार के दाम में भी अंतर होने के कारण आमजन काफी प्रभावित है। दरअसल, बदले हुए मौसम की वजह से सिर्फ टमाटर, आलू प्याज ही महंगा नहीं बिक रहा है, अन्य सब्जियों की कीमत भी आसमान छूने लगी है। ऐसे में मंडी में खरीद के लिए पहुंचने वाले लोग दाम पूछने के बाद खरीद से पीछे हट रहे हैं, क्योंकि व्यवस्था के स्तर पर खरीद बजट से बाहर हो रही है।

# शिक्षा का मानवता, देश और समाज के कल्याण के लिए अधिकाधिक उपयोग हो : राज्यपाल

- राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित

कोटा में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल ने उपाधियां प्रदान की।

**कोटा, (निसं)।** राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा का 13वां दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने की तथा सम्मानित अतिथि के रूप में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के सभापति प्रोफेसर टीजी सीताराम उपस्थित थे।

इस अवसर पर राज्यपाल मिश्र ने संविधान के मूल कर्तव्यों का वाचन कर समारोह की शुरुआत की एवं उन्होंने 127 विद्यार्थियों को डिग्रीयां एवं 44 स्वर्ण पदक प्रदान किए एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय और सभी पदक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की। कुलसचिव धीरज सोनी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि नए जीवन का आरम्भ है। यह वह समय है जब आप विश्वविद्यालय में अर्जित ज्ञान का उपयोग राष्ट्र और समाज के उत्थान में करने के लिए सक्षम होते हैं। विद्यार्थियों नें जो शिक्षा विश्वविद्यालय में प्राप्त की है, उसका मानवता के कल्याण के लिए, देश और समाज के लिए अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों में संविधान उद्यान निर्मित कराने की मंशा यही है कि हम संविधान की उदात्त परम्पराओं से सदा जुड़े रहें। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा अपनी स्थापना के बाद से ही देश में शिक्षा के प्रसार में महती भूमिका निभा रहा है। तकनीकी शिक्षा मानव संसाधन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इसके लिए हमें विश्वविद्यालयों को इस तरह से तैयार करने की जरूरत है कि वहां नित्य नवीन ज्ञान का प्रसार हो ताकि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग से भारत को फिर से विश्वगुरु बन सके। विगत वर्षों में विश्वविद्यालय द्वारा युवाओं को देश–विदेश में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किए हैं।

राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा कि देश की जो नई शिक्षा नीति बनी है, उसका मूल भी यही है कि भारत आत्मनिर्भर हो। इसीलिए शिक्षा नीति में युवाओं को कौशल विकास से जोड़े जाने पर विशेष जोर दिया गया है। विश्वविद्यालयों गुणवत्ता और नवाचार पर लगातार ध्यान केंद्रित करना होगा। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य 21वीं सदी की जरूरतों एवं चुनौतियों को ध्यान में रखकर स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को अधिक समग्र बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित जीवंत समाज और ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति म ें बदलना है।

समारोह में राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा के विभिन्न सम्बद्ध महाविद्यालयों के निदेशक, प्राचार्य, विश्वविद्यालय प्रबन्ध मण्डल एवं विद्या परिषद के सदस्य, अन्य विश्विद्यालयों के कुलपति, राजभवन से अधिकारी, विश्वविद्यालय के समस्त अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, कार्यालयाध्यक्ष, कुलसचिव, समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी, संकाय सदस्य, शिक्षक, शिक्षाविद्, विद्यार्थी व उनके अभिभावक, प्रशासनिक अधिकारी, गणमान्य नागरिक एवं आमंत्रित विशिष्ठ अतिथिगणों ने शिरकत की।

# सरकारी स्कूलों में लगे प्रबोधक का होगा प्रमोशन

**बीकानेर, (निसं)।** प्रारंभिक शिक्षा के अधीन कार्यरत 2449 प्रबोधकों को जल्दी ही वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत करने की तैयारी शिक्षा विभाग ने कर ली है। प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय ने सभी जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा, मुख्यालय) को उनके जिले में पदोन्नति के पात्र प्रबोधकों की संख्या भेजते हुए उनकी अस्थाई वरिष्ठता सूची 10 जुलाई तक अद्यतन करने के निर्देश दिए हैं।

इस अस्थाई सूची पर 3 दिवस में संबंधित प्रबोधकों से आपत्तियां मांगने के बाद 15 जुलाई तक स्थाई वरीयता सूची जारी कर दी जाएगी। 20 जुलाई तक चयन संबंधी कार्यवाही पूरी कर चयन आदेश की हार्ड और सॉफ्ट कॉपी 22 जुलाई तक प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय को वाहक स्तर पर भेजने के निर्देश दिए गए हैं।

पूरे राज्य में कुल 10392 प्रबोधक वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नति के पात्र हैं, जिसमे से वर्ष 2021 में पदोन्नत करने के लिए 5 हजार पद स्वीकृत किए गए थे। शेष रहे 5392 में से अब 2449 पदों पर पदोन्नति की स्वीकृति सरकार ने दी है। जिन नवगठित जिलों में जिला स्थापना समिति का गठन नहीं हुआ है, उन जिलों में पूर्व 33 जिलों के अनुसार ही वरिष्ठता निर्धारित की जाएगी। जिले में कुल 254 प्रबोधक पदोन्नति के पात्र थे, जिसमें से 122 को वरिष्ठ प्रबोधक पदों पर पदोन्नत किया जा चुका है। शेष 132 प्रबोधकों में से 60 प्रबोधकों को वरिष्ठता के आधार इस बार पदोन्नत किया जाएगा।

## राशिफल रविवार 7 जुलाई, 2024

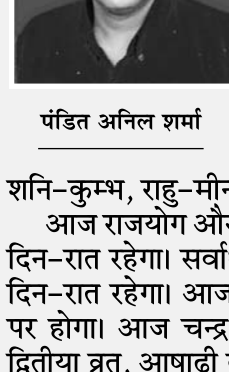
पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुकल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र सोमवार प्रातः 6:03 तक, हर्षण योग रात्रि 2:12 तक, बालव करण सांय 4:43 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–कर्क, मंगल–मेष, बुध–कर्क, गुरू–वृष, शुक्र–कर्क, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज राजयोग और रविपुष्य योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन–रात रहेगा। आज शुक्र उदय पश्चिम रात्रि 9:05 पर होगा। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, मनोरथ द्वितीया व्रत, आषाढ़ी दशहरा और रथयात्रा उत्सव है।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** चर 7:24 से 9:07 तक, लाभ–अमृत 9:07 से 12:21 तक, शुभ 2:13 से 3:56 तक।

**राहूकाल:** 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:20

**मेष**
घर–परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**वृष**
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये–पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

**मिथुन**
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

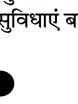
**कर्क**
मनःस्थिति ठीक रहेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

**सिंह**
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**कन्या**
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

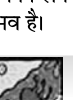
**तुला**
आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।


**वृश्चिक**
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

**धनु**
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

**मकर**
परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। घर–परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**कुंभ**
घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

**मीन**
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

# 'अभ्यर्थियों की महत्वहीन त्रुटियों के निस्तारण के लिए क्या है व्यवस्था'

- हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के सचिव और आर.पी.एस.सी. सचिव को शपथ पत्र पेश करने को कहा
- अदालत ने कहा कि किसी बेरोजगार लेकिन योग्य व पात्र उम्मीदवार के जीवन में सरकारी नौकरी के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता और ना ही उसे नियुक्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता है

**जयपुर, (का.सं.)।** राजस्थान हाईकोर्ट ने माध्यमिक शिक्षा विभाग के सचिव और आरपीएससी सचिव को व्यक्तिश: या वीसी से पेश होकर शपथ पत्र के जरिए बताने को कहा है कि भर्ती में अभ्यर्थियों की ओर से की गई छोटी-मोटी और महत्वहीन त्रुटियों के प्रभावी निस्तारण के लिए क्या व्यवस्था की गई है। जिससे सरकारी नौकरी के योग्य अभ्यर्थियों को अनुचित मुकदमेबाजी से बचाया जा सके। वहीं अदालत ने दोनों अधिकारियों से याचिकाकर्ता के पद पर बने रहने के संबंध में हुए जानकारी पेश करने को कहा है। जस्टिस सुदेश बंसल ने यह आदेश राजेश की याचिका पर दिए।

अदालत ने अपने आदेश में कहा कि किसी बेरोजगार लेकिन योग्य व पात्र उम्मीदवार के जीवन में सरकारी नौकरी के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता और ना ही उसे नियुक्ति के अधिकार से वंचित किया जा सकता है। मामले में राज्य सरकार की ओर से अपनाए तकनीकी दृष्टिकोण की अदालत सराहना नहीं करता है, खासकर तब जबकि भर्ती का उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा का चयन करना हो। इस तरह की कार्रवाई से पहले से मुकदमों के बोझ तले दबे न्यायालय में अनावश्यक मुकदमेबाजी की नौबत आती है।

याचिका में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का हिंदी वरिष्ठ अध्यापक भर्ती-2018 में चयन हुआ था। उसकी नियुक्ति को यह कहते हुए निरस्त कर दिया कि उसने आवेदन पत्र में अंग्रेजी में राकेश और हिंदी में राजेश नाम लिखा था। अदालत के दिसंबर, 2020 के अंतरिम आदेश की पालना में याचिकाकर्ता को 23 जून, 2021 को नियुक्ति दी गई। वहीं बाद में उसका आरपीएससी की ओर से आयोजित स्कूल व्याख्याता भर्ती में चयन हो गया। ऐसे में उसके नाम के विवाद को अंतिम रूप से तय किया जाए, ताकि उसे प्रोटेक्शन का लाभ मिल सके। अदालत के सामने आया कि राज्य सरकार और आरपीएससी को याचिकाकर्ता के सही नाम पर संदेह नहीं है। इसके बावजूद भी याचिकाकर्ता की नियुक्ति को अंग्रेजी में गलत नाम होने के आधार पर विवादित किया जा रहा है।

अदालत के पूछने पर बताया गया कि विज्ञापन में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है कि हिंदी और अंग्रेजी में नाम को लेकर भिन्नता हो तो अंग्रेजी में लिखे नाम को प्राथमिकता दी जाएगी। इसके अलावा राज्य सरकार की ओर से अदालत को इस बात पर भी संतुष्ट नहीं किया जा सका कि नाम की छोटी सी विसंगति को दूर करने के लिए याचिकाकर्ता को मौका क्यों नहीं दिया गया। अदालत ने कहा कि जब याचिकाकर्ता के नाम पर विवाद ही नहीं है तो उसकी नियुक्ति को लेकर विवाद क्यों किया जा रहा है।

## माँग दिवस के रूप में मनाया सहकारिता दिवस

**जयपुर, (का.सं.)।** ऑल इंडिया कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज फेडरेशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व ऑल राजस्थान कोआपरेटिव बैंक एम्पलाईज यूनियन के प्रान्तीय महासचिव सहकार नेता सूरज भान सिंह आमेरा ने बताया कि 6 जुलाई अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस को फ़ेडरेशन के राष्ट्रीय आव्हान पर देश भर के सहकारी बैंक कर्मियों ने माँग दिवस के रूप में मनाया। देश भर में सहकारी बैंक कर्मियों ने माँग के लिए बेज धारण कर माँग दिवस मनाया। माँगो के लिए सचिव सहकारिता व रजिस्ट्रार सहकारिता को ज्ञापन प्रेषित किए गये। प्रदेश के सहकारी बैंक कर्मियों के वेतनमान सुधार के लिए मुख्यमंत्री, वित्त विभाग सरकार व सहकारी विभाग स्तर से अक्टूबर 2023 में ही सम्पन्न/स्वीकृत अवधिपार लंबित 16वें वेतन समझौते को सभी सहकारी बैंकों में एकरूपता लागू करना, सहकारी बैंकों में कर्मचारी व अधिकारी के तीन साल से रिक्त पड़े पदो पर भर्ती करना आदि को लेकर माँग दिवस मनाया गया।

# हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के उर्स का समापन

मीर जी दरगाह में हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के आठवें उर्स के पहले दिन देशभर से हजारों मुरीदों ने अपनी दुआएं और मन्नतें मांगी।

**जयपुर।** संसार चंद रोड स्थित मीर जी दरगाह में हजरत सैयद महबूब उर रहमान नियाजी के आठवें उर्स के पहले दिन रात में क्लासिकल म्यूजिकल नाइट में फनकारों ने जबरदस्त अपने फन की प्रस्तुति दी। दूसरे दिन सुबह कुरानखानी हुई और दरगाह को गुसल दिया गया। शाम को कव्वाली की महफिल सजी जिसमें देश भर से कव्वाल पहुंचे बॉलीवुड फेम साबरी बंधुओं ने शानदार कलाम पेश किया, महफिल देर रात तक चली। इस मौके पर दरगाह के सज्जादा नशीन डॉक्टर सैयद हबीब उर रहमान नियाजी ने कहा कि तीन दिन के उर्स मुबारक में अलग-अलग दिन अलग-अलग कार्यक्रम हुए। पहले दिन देश भर के मशहूर क्लासिकल फनकारो ने अपने फन पेश किया। दूसरे दिन शाम को मगरिब के बाद चादरों का सिलसिला शुरू हुआ। देशभर से अकीदतमंदो ने अपनी मुरादों की चादर पेश की। रात में कव्वाली की महफिल सजी जो देर रात तक चली। तीसरे दिन कुल की रस्म के साथ उर्स का समापन हुआ और देश में ओ अमन रहे, आपसी भाईचारा हमेशा बना रहे की अर्जी लगाई गई। उन्होंने कहा कि सभी मुरिदो से वादा लिया की एक पेड़ जरूर लगाएंगे। दरगाह के नायाब सज्जादानशीन सैयद फैज उर रहमान नियाजी ने कहा देशभर से हजारों की तादाद में मुरीद जयपुर पहुंचे हैं और अपने हकीकत के फूल पेश किए हैं और अपनी दुआएं और मन्नतें मांगी सभी आए। तीनो दिन लंगर का प्रोग्राम रहा हजारों लोगों ने लंगर खाया। कुल की रस्म के साथ उर्स मुकम्मल हुआ।

## रत्न आभूषणों के बूथ पर उमड़े देश विदेश के खरीदार

**जयपुर, (का.सं.)।** शो के दूसरे दिन उप मुख्यमंत्री डॉ प्रेमचंद बैरवा और विधायक गोपाल शर्मा ने जस -2024 का अवलोकन किया ज्वेलर्स एसोसिएशन जयपुर के अध्यक्ष आलोक सोंखिया, महासचिव नीरज लुणावत ,उपाध्यक्ष राजू मंगोड़ी वाला और शो के कन्वीनर अशोक माहेश्वरी ने उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बेरवा और विधायक गोपाल शर्मा को शो का विजिट का स्वागत किया और शो का विजिट कराया।

जयपुर ज्वैलर्स एसोसिएशन के उपाध्यक्ष और जस 2024 के सहसंयोजक राजू मंगोड़ी वाला ने बताया कि उन्होंने प्रदर्शनी का दौरा किया और जयपुर के एक्जीबिटर्स की ओर से प्रदर्शित किए गए रत्न आभूषणों के एक से बढ़कर एक डिजाइन और कारीगरों की कला की सराहना की। इस मौके पर उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने कहा की जयपुर की ज्वेलरी पूरी दुनिया में मशहूर है और इस तरह के शो यहां के ज्वैलरी व्यवसाय को अंतरराष्ट्रीय मंच पर और मजबूती के साथ प्रस्तुत करती है। बीजेपी सरकार इस शो का पूरा समर्थन और सहयोग करने के लिए हमेशा तैयार है। विधायक गोपाल शर्मा ने जस -2024 में सजे रंगीन रत्नों के अनोखे संसार और खूबसूरत गहनों से बेहद प्रभावित नजर आए। उन्होंने कहा कि ज्वैलरी शो, ज्वेलर्स एसोसिएशन जयपुर की ओर से किया गया शानदार प्रयास है।

# सहकारी संस्थाएं नवीन तकनीक अपनाएं : अर्चना सिंह




रजिस्ट्रार सहकारिता अर्चना सिंह ने शनिवार को झालाना संस्थानिक क्षेत्र स्थित राइसेम परिसर में 102वें अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सेमीनार को संबोधित किया।

**जयपुर, (कासं.)।** रजिस्ट्रार सहकारिता अर्चना सिंह ने कहा कि प्रदेश में सहकारी संस्थाओं के पल्लवन के लिये आवश्यक है कि वे अधिकाधिक नवीन तकनीक को अपनायें ताकि उनकी कार्यशैली में पारदर्शिता का समावेश हो और सदस्यों का सहकारिता में विश्वास कायम रहे। उन्होंने कहा कि सहकारी संस्थाओं के विकास और प्रसार के लिये उनके संरक्षण, संवर्धन और नियंत्रण में संतुलन रखकर कार्य करने की आवश्यकता है।

सिंह ने शनिवार को झालाना संस्थानिक क्षेत्र स्थित राइसेम परिसर में 102वें अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर आयोजित सेमीनार को संबोधित करते हुये कहा कि आज से लगभग 120 वर्ष पूर्व प्रदेश में कृषि क्षेत्र में वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये सहकारिता का संस्थागत स्वरूप सामने आया था। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिवेश में समाज और व्यक्ति की आवश्यकता और पसंद में परिवर्तन आया है। इसलिये अब सहकारी संस्थाओं को स्थानीय आवश्यकताओं और पसंद को ध्यान में रखते हुये अपने कार्यक्षेत्र में बदलाव लाने की जरूरत है।

रजिस्ट्रार ने कहा कि सहकारी संस्थाओं को अपनी सेवा प्रदायगी को बेहतर करते हुये नये नये क्षेत्रों में कार्य करना चाहिये, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। उन्होंने कहा कि सहकारिता में समर्पण और ईमानदारी के साथ कार्य करें और सभी को साथ लेकर चलेंगे तो किसी भी समस्या का समाधान स्थानीय स्तर पर प्राप्त कर सकते हैं।

जयपुर डेयरी के अध्यक्ष ओम प्रकाश पूनिया ने कहा कि सहकारिता लोकतंत्र का प्राणतत्व है। जिस लोकतंत्र में सहकारिता नहीं है वह मृतप्राय है। उन्होंने कहा कि स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता, पारस्परिक सहयोग की भावना समाज को एकजुट करती है और इसी से व्यक्ति में सहकारिता का जन्म होता है। समाज में नैतिकता होने पर ही सहकारिता का प्रसार संभव है।

अन्तरराष्ट्रीय सहकारिता दिवस के मौके पर राइसेम परिसर में रजिस्ट्रार सहकारिता, जयपुर डेयरी अध्यक्ष, निदेशक राइसेम सहित सभी सहकारजनों ने पौधारोपण किया। सेमीनार में करणपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति के अध्यक्ष लखविन्दर सिंह, फागी जीएसएस के अध्यक्ष ओ. पी. शर्मा, बीलवा जीएसएस के अध्यक्ष प्रहलाद सहाय, नाबार्ड के पूर्व महाप्रबंधक आर. एस. जोधा, भूतपूर्व संयुक्त रजिस्ट्रार (नियम) लीला पुरूषोत्तम तथा राइसेम निदेशक जितेन्द्र शर्मा ने संबोधन दिया। कार्यक्रम में संयुक्त सचिव सहकारिता दिनेश कुमार जांगिड, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (प्रथम) राजीव लोचन शर्मा, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (द्वितीय) शोभिता शर्मा, प्रबंध निदेशक एसएलडीबी विजय कुमार शर्मा सहित जयपुर सीसीबी के प्रबंध निदेशक तथा राइसेम एवं सहकारिता विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

## बिल्डर रवि सूर्या अफोर्डेबल होम्स पर 55 हजार रुपए हर्जाना

**जयपुर, (का.सं.)।** जिला उपभोक्ता आयोग, जयपुर-द्वितीय ने फ्लैट की बुकिंग की राशि लेने के बाद भी तय अवधि में फ्लैट का कब्जा नहीं देने को सेवा दोष माना है। इसके साथ ही आयोग ने बिल्डर रवि सूर्या अफोर्डेबल होम्स पर 55 हजार रुपए का हर्जाना लगाया है। आयोग ने बिल्डर को निर्देश दिया है कि वह परिवादी को बुकिंग के तौर पर वसूल की गई 1.38 लाख रुपए की राशि 9 प्रतिशत ब्याज सहित लौटाए। आयोग के अध्यक्ष ग्यारसी लाल मीना व सदस्य हेमलता अग्रवाल ने यह आदेश लाखन सिंह के परिवाद पर दिए।

परिवाद में कहा गया कि उसने बिल्डर के प्रोजेक्ट सूर्या रेजीडेंसी में बुकिंग राशि देकर 2 बीएचके का फ्लैट बुक करवाया था। बिल्डर के प्रतिनिधि ने कहा कि यह प्रोजेक्ट 2019 तक पूरा हो जाएगा और वह उसे 20 दिन में ही बकाया राशि का लोन करवा देगा। इसके बावजूद भी प्रोजेक्ट समय पर पूरा नहीं हुआ। उसने जब विपक्षी के कर्मचारियों से अपनी जमा राशि वापस मांगी तो वे पहले तो टालमटोल करते रहे, लेकिन बाद में उसे डराया कि दुबारा संपर्क किया तो हाथ-पैर तोड देंगे।

# दुष्कर्म करने के आदतन अभियुक्त जीवाणु को एक बार फिर उम्रकैद

**जयपुर, (का.सं.)।** पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत क्रम-3 महानगर द्वितीय ने नाबालिगों से दुष्कर्म करने के आदतन अभियुक्त सिकंदर उर्फ जीवाणु को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख तीन हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है। यह प्रकरण चार साल की बच्ची से दुष्कर्म कर जीभ काटने से जुडा है। अभियुक्त सात साल की नाबालिग से दुष्कर्म करने के मामले में आजीवन कारावास की सजा काट रहा है।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक महावीर सिंह किशनावत ने अदालत को बताया कि 23 जून, 2019 को पीडिता के चाचा ने शास्त्री नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उसकी चार साल की भतीजी रात करीब दस बजे खेलती-खेलती घर से बाहर निकल गई थी। पुलिस और परिजनों के काफी तलाश करने के बाद भी उसका पता नहीं लगा। वहीं रात करीब दो बजे कोई उसे घर के थोडी दूरी पर छोडकर चला गया। अस्पताल जाने पर पता चला कि उसके साथ दुष्कर्म हुआ है और जीभ काटी गई है। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को कोटा से गिरफ्तार किया। सुनवाई के दौरान पीडिता ने अदालत को बताया कि अभियुक्त उसे मोटर साइकिल पर बैठाकर नाले में ले गया था और उसके साथ गलत काम किया। जब वह चिल्लाई को अभियुक्त ने चाकू से उसकी जीभ काट दी। जिस पर सुनवाई करते अदालत ने अभियुक्त को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।


**आम सूचना** दिनांक-06.07.2024

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री भागचन्द गुजराती पुत्र स्व. श्री छीतरदास गुजराती जाति बाल्मिकी निवासी डी. 93, झालाना फेज-3 सरकारी डिस्पेंसरी के पीछे, जयपुर, राजस्थान का पुत्र अरविन्द कुमार व उसकी पत्नी कविता मेरे मुवक्किल के कहने में नहीं है और अकेले गुजर-बसर करने का इरादा रखते है एवं अपनी मर्जी मुताबिक जिन्दगी बसर कर रहे है ये दोनों आए दिन मेरे मुवक्किल व उसके परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अभद्रता करते है व बदतमीजी से पेश आते है जिस कारण मेरे मुवक्किल ने अपने पुत्र अरविन्द कुमार व उसकी पत्नी कविता को अपनी समस्त अच-अचल सम्पत्ति एवं अपने परिवार से बेदखल कर दिया है एवं आज दिन से ये दोनों कोई भी ऐसा कृत्य करते है जिससे किसी को कोई भी हानी का सामना करना पडे तो उसके जिम्मेदार ये दोनों स्वयं होंगे एवं जो कोई व्यक्ति इनसे किसी भी तरह का संव्यवहार करेगा उसका वह स्वयं जिम्मेदार होगा। सूचित रहे।

रोहित तिवारी, एडवोकेट
(राजस्थान हाई कोर्ट, जयपुर),
मो. 8233994755

**राजस्थान आवासन मण्डल, वृत-तृतीय**
जे.एल.एन. मार्ग, जवाहर सर्किल के पास, जयपुर- 0141-4901853
क्रमांक : 2698 **जाहिर आम सूचना** दिनांक : 05.07.2024

राजस्थान आवासन मण्डल, जयपुर द्वारा आवास/फ्लैट संख्या-1/एफ/41 (भू-तल) मालवीय नगर, जयपुर क्षेत्रफल 118.07 वर्ग मीटर का आवंटन श्री आर.एस. यादव (राम सूरत यादव) को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 146 दिनांक 13.05.1994 जारी किया गया। उनके द्वारा उक्त आवास/फ्लैट के पंजीयन प्रपत्रों का निष्पादन कार्यालय उप पंजीयक, जयपुर, प्रथम में दिनांक 19.12.2008 को करवाया गया। श्री आर.एस. यादव (राम सूरत यादव) की मृत्यु दिनांक 06.10.2018 को हो जाने के कारण श्रीमती प्रतिमा यादव पत्नी स्व. श्री आर.एस. यादव (राम सूरत यादव) के द्वारा आवेदन पत्र के साथ क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, शपथ पत्र, पंजीकृत हकत्याग की छाया प्रति एवं मृत्यु प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर उक्त आवास/फ्लैट का प्रतिस्थापन अपने नाम करने का निवेदन किया गया है। अत: उक्त आवास/फ्लैट के प्रतिस्थापन के संबंध में किसी भी व्यक्ति/बैंक/संस्था को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में व्यक्तिगत रुप से उपस्थित होकर साक्ष्य सहित अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर देवें, अन्यथा उक्त अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर उक्त आवेनदनकर्ता श्रीमती प्रतिमा यादव पत्नी स्व. श्री आर.एस. यादव (राम सूरत यादव) के पक्ष में उक्त आवास/फ्लैट के प्रतिस्थापन की कार्यवाही कर दी जावेगी। सम्पदा प्रबंधक, वृत तृतीय, रा.आ. मण्डल जयपुर


# डॉ. मुखर्जी ने राष्ट्र को समर्पित किया अपना जीवन : मंजू शर्मा

- 'उनके नारे "एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे" को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया साकार'

**जयपुर।** जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 123वीं जयंती के अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यालय में आज उनके चित्र पर पुष्पांजली अर्पित की गई। इस दौरान जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि डॉ. मुखर्जी ने अपने जीवन को राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दिया था। कश्मीर को लेकर डॉ मुखर्जी ने नारा दिया था कि एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे। इस नारे को 70 साल बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने 70 मिनट में पूरा करते हुए कश्मीर से धारा 370 और 35 ए हटाने का ऐतिहासिक काम किया। वहीं दूसरी ओर कुछ राष्ट्र विरोधी लोग और राजनैतिक पार्टियां कश्मीर के मामले को यूएन में ले जाने का काम कर रहे थे, धारा 370 के बिल को संसद में फाड़ने का काम कर रहे थे, ऐसी राष्ट्र विरोधी शक्तियों को कमजोर करने के लिए भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को एकजुट होकर डॉ मुखर्जी के पदचिन्हों पर कार्य करने की आवश्यकता हैं।

जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने कहा कि जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश में पंडित नेहरू की परमिट व्यवस्था का भी विरोध किया था। इसी विरोध के स्वरूप उन्होंने राष्ट्र के लिए अपना बलिदान दे दिया, लेकिन उनके बलिदान को जनसंघ के बाद भारतीय जनता पार्टी ने समझा और आज कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। डॉ. मुखर्जी सच्चे अर्थों में मानवता के उपासक और सिद्धान्तवादी नेता थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी और शिक्षाविद् डॉ मुखर्जी के जीवन चरित्र को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। डॉ मुखर्जी उस दौर में जो विचार लेकर चले थे, उनके विचारों को देश में समझने वाला कोई नहीं था। इसके बावजूद उन्होंने अपने विचारों को आगे बढाया। हमें डॉ. मुखर्जी की विचारधारा को साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए। डॉ. मुखर्जी के सपने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरा करने का काम किया। कश्मीर में जिन हाथों में पत्थर हुआ करते थे, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन हाथों को रोजगार देकर उनके परिवारों को आगे बढ़ाने की दिशा में काम किया है। पुष्पांजली कार्यक्रम के दौरान भाजपा के संगठक प्रद्युम्न कुमार, प्रदेश मीडिया संयोजक प्रमोद वशिष्ठ, प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष अनुराधा माहेश्वरी और भाजपा मीडिया कार्यालय प्रभारी चंपालाल रामावत सहित अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

## पूर्व में की गई सेवा का वेतन संरक्षित करने के आदेश

**जयपुर।** हाईकोर्ट ने तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2018 में चयनित अभ्यर्थी का समान पद पर पूर्व में की गई सेवा व वेतन संरक्षित करने के आदेश दिए हैं। जस्टिस अनुप कुमार ढंड ने यह आदेश बनवारी लाल चौधरी व अन्य की याचिका पर दिए। याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता का तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2013 में चयन हुआ था। इस भर्ती में उसे बाडमेर जिला आवंटित हुआ था। वहां सेवा देने के बाद वर्ष 2018 में निकली तृतीय श्रेणी शिक्षक भर्ती में उसका चयन हो गया और उसे जयपुर जिला आवंटित हो गया। याचिका में कहा गया कि उसकी समान पद पर ही दूसरी नियुक्ति हुई है। ऐसे में राजस्थान सेवा नियम के नियम 24 के तहत उसके वर्तमान वेतन को संरक्षित किया जाए और पूर्व में की गई सेवाकाल की गणना भी की जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने याचिकाकर्ता की पूर्व की सेवाकाल की गणना करते हुए वेतन को संरक्षित करने के आदेश दिए हैं।

# कोर्ट ने 12.75 लाख रुपए का क्लेम खारिज किया

- बीमा कंपनी को वाहन चोरी की सूचना 317 दिन की देरी से देने का मामला

**जयपुर, (का.सं.)।** जिले की स्थाई लोक अदालत ने वाहन चोरी की सूचना बीमा कंपनी को 317 दिन की देरी से देने और चोरी की एफआईआर 20 दिन बाद दर्ज कराने को संदिग्ध मानकर 12.75 लाख रुपए का क्लेम खारिज कर दिया। स्थाई लोक अदालत ने कहा कि वाहन चालक को ऐसा कौनसा जरूरी काम था, जो वाहन में ही चाबी लगाकर चला गया और दूसरे दिन मौके पर आया। वहीं वाहन के मालिक ने चोरी की एफआईआर भी बीस दिन बाद दर्ज क्यों नहीं कराई। वहीं बीमा कंपनी को चोरी की सूचना 317 दिन की देरी से देना भी बीमा शर्तो का उल्लंघन है। ऐसे में परिवादी बीमा क्लेम लेने का अधिकारी नहीं है। लोक अदालत ने यह आदेश किरण सिंह का परिवाद खारिज करते हुए दिए। बीमा कंपनी के अधिवक्ता ने बताया कि परिवादी ने अपने ट्रेलर का बीमा 12 लाख रुपए में बीमा कंपनी से करवाया था। इसकी अवधि 28 नवंबर 2020 से 27 नवंबर 2021 थी। इस दौरान बीमित वाहन 15 दिसंबर 2020 को ही कोटपुतली थाना क्षेत्र से चोरी हो गया, लेकिन वाहन चालक ने बीमा कंपनी को चोरी की सूचना नहीं दी और एफआईआर भी 20 दिन की देरी से दर्ज कराई। वहीं जांच में आया कि चालक खुद ही वाहन की चाबी उसमें लगाकर चला गया था और सुबह वापस आया तो वाहन उसे नहीं मिला। वाहन चालक ने बीमा कंपनी में क्लेम किया, लेकिन कंपनी ने उसे गलत मानते हुए 29 नवंबर 2021 को खारिज कर दिया। इसे परिवादी ने स्थाई लोक अदालत में चुनौती दी थी।

**नाम परिवर्तन**

मैंने अपना नाम सुनीता सैनी से बदलकर दीपा सोलंकी पत्नी श्री जितेन्द्र कुमार रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावें। निवासी 3986 एमएसबी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

मैं आर्मी नम्बर 16022822A L/Hav. Satendra Singh Rajawat S/o Lakhan Singh Rajawat R/o BTI Road, Santosh Nagar, Bhind M.P. Pin 477001. आर्मी सर्विस रिकोर्ड में मेरी धर्मपत्नी का नाम Vandna Rajawat गलत दर्ज है सही नाम Vandana Rajawat Vide Affidavit BV 993613 Dated 06.07.2024

I have correct my husband name from Sayed Ikram Hussain Naqvi to Sayed Ikram Hussain for all puspose. Sayed Sultana Hussain (Wife), 835, Naqvi House, Mohalla Bisatiyan, Ramganj Bazar, Jaipur.

I have changed my name from Manish Kumar Sharma to Manish Sharma for all purposes R/o 16, Dev Nagar-A Jaysinghpura Khor Jaipur.

I army no. 14224294 Ex Sigmn banwari lal moond S/o Ganpat ram moond R/o Plot No. 109-4c jamnapuri murlipura scheme jaipur that I have changed my name From Banwari Lal Moond to Banwari Lal S/o Ganpat ram (as per aadhar card & other documents) vide affidavit dated 3 July 24 before district notary Jaipur.

No.6
Notice To Respondent Of The Day Fixed For The Hearing Of The Appeal
[O.41 Rule 14 C.P.C.]
In the Court: High Court of Judicature for Rajasthan at Jaipur Bench, Jaipur.
Appellant Santra Respondent Bhanwar Lal & Ors.
S.B. CIVIL FIRST APPEAL NO. 337/2021
along with
S.B. CIVIT MISC. STAY APPLICATION 28498/2021
Claim For-Specific Performance, Possession, Mesne Profit & Declaration, Injunction
Appeal against the Decision at the Court: Additional District Judge No.1, Jaipur Metropolitan Second, Jaipur
Dated: 27th Day of August, 2021
In Civil Original Case No. 443/2012

TO
1. Manju W/o Late Hansraj Joshi, Resident of Plot No. 66/67, Lohiya Bhawan Kanti Nagar, Polovictory ke Samne, Jaipur.
2. Hitesh S/o Late Hansraj Joshi, Resident of Plot No. 66/67, Lohiya Bhawan Kanti Nagar, Polovictory ke Samme, Jaipur.
3. Bhawana D/o Late Hansraj Joshi, Resident of Plot No. 66/67, Lohiya Bhawan Kanti Nagar, Polovictory ke Samne, Jaipur.

Take notice that an appeal from the decree of ADJ NO. 1 Jaipur Metropolitan Second in this case has been presented by deponent and registered in this court, and that the 12.07.2024 day..... of 2023 has beem fixed by this court for the hearing of this appeal.
If no appearance is made on your behalf by yourself. your pleader or by some one by law authorised to act for you in this appeal, it will be heard and decided in your absence.
Given under my hand and the seal of the court, this day 01.07.2024 of___

SEAL
प्रशासनिक अधिकारी न्यायिक
राजस्थान उच्च न्यायालय पीठ, जयपुर


## माथुर ने लगाया एक पेड़ माँ ने नाम

**जयपुर।** भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्य ओमप्रकाश माथुर ने प्रधानमंत्री के आव्हान पर एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम के तहत मानसरोवर स्थित अपने आवास के बाहर पेड़ लगाए। इस अवसर पर पूर्व विधायक मानसिंह किन्सरिया स्थानीय पार्षद व निगम में चेयरमैन हरीश शर्मा के साथ कॉलोनी के निवासी उपस्थित रहे।


नम्बर मिलाइए
9587884433
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।


# मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को हरियाणा का प्रभारी बनाकर किसानों का मान बढ़ाया : डॉ. सतीश पूनिया




हरियाणा भाजपा का प्रभारी बनाए जाने पर डॉ. सतीश पूनिया को कार्यकर्ताओं ने बधाई दी।

**जयपुर।** भाजपा केंद्रीय नेतृत्व द्वारा डॉ. सतीश पूनिया को हरियाणा भाजपा प्रदेश प्रभारी बनाये जाने पर प्रदेशभर से जयपुर पधारे कार्यकर्ताओं एवं आमजन ने डॉ. सतीश पूनियां को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा सहित समस्त केंद्रीय नेतृत्व का हार्दिक आभार-अभिनंदन व्यक्त किया।

इस दौरान सतीश पूनिया ने जयपुर में राणी सती नगर स्थित अपने जनसंवाद केंद्र पर जनसुनवाई की, जो वह जयपुर रहने के दौरान पिछले कई वर्षों से सुबह 8 से 11 बजे तक प्रदेशभर से पधारे कार्यकर्ताओं एवं आमजन से मुलाकात कर जनसुनवाई करते हैं।

सतीश पूनिया ने कहा कि हरियाणा राज्य के प्रभारी के रूप में जिम्मेदारी प्रदान करने हेतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का हार्दिक आभार एवं अभिनंदन व्यक्त करता हूं कि राजस्थान प्रदेश के सामान्य किसान परिवार में जन्मे मेरे जैसे सामान्य कार्यकर्ता को हरियाणा का प्रभारी बनाकर राजस्थान, हरियाणा सहित समस्त देश के किसानों का मान बढ़ाया है, इससे पहले राजस्थान जैसे बड़े प्रदेश का अध्यक्ष बनाकर भी भाजपा केंद्रीय नेतृत्व ने किसानों का सम्मान बढाया था। उन्होंने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में किसानों एवं खिलाड़ियों की धरती हरियाणा में जनता के आशीर्वाद एवं कार्यकर्ताओं के परिश्रम से फिर से प्रचंड बहुमत की भाजपा सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि, हरियाणा की नायब सिंह सैनी सरकार हरियाणा प्रदेश के विकास के लिए समर्पित होकर कार्य कर रही है, वहीं नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र की एनडीए सरकार और हरियाणा की नायब सैनी सरकार की जनहितकारी नीतियों पर हरियाणा की सभी 36 कौम की किसान सरदारी, युवा एवं माता बहनें अपने आशीर्वाद से विश्वास की मुहर लगाएंगे और तीसरी बार भाजपा हरियाणा में जीत की हैट्रिक लगाकर प्रचंड बहुमत की सरकार बनाएगी।


**आवश्यकता**

आवश्यकता है पार्ट टाइम कम्प्यूटर ऑपरेटर्स की जो हिन्दी में पेजमेकर, क्वार्क और वर्ड में काम कर सकें।
कार्य समय: सांय 8.00 से 12.00
सम्पर्क करें: अमित
मोबाईल नं.: 7905717804
राष्ट्रदूत
चमेली वाला मार्केट, जयपुर

# रतनपुर बॉर्डर पर 70 लाख का सोना, 26 लाख की नगदी पकड़ी, तीन गिरफ्तार

## तीनों आरोपी बैग लेकर पैदल जा रहे थे, संदिग्ध होने पर पुलिस ने रोककर तलाशी ली

- पुलिस तीनों ही आरोपियों से नकदी और सोने के बारे में पूछताछ कर रही है

**डूंगरपुर, (निसं)।** बिछीवाड़ा थाना पुलिस ने राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर पैदल जा रहे तीन लोगों से लाखों का सोना और कैश पकड़ा है। तीन थैलों में 70 लाख का सोना और 26 लाख रुपए का कैश मिला है। पुलिस तीनों ही आरोपियों से नकदी और सोने के बारे में पूछताछ कर रही है।

बिछीवाड़ा थानाधिकारी ने बताया कि अवैध कारोबार करने वालों के खिलाफ अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत राजस्थान-गुजरात के रतनपुर बॉर्डर पर नाकाबंदी कर गाड़ियों की तलाशी ली जा रही थी। उदयपुर से अहमदाबाद नेशनल हाईवे-48 पर रतनपुर बॉर्डर पर तीन व्यक्ति गाड़ी से उतरे। तीनों पैदल-पैदल जा रहे थे। उनके पास पीठ पर थैले लटके हुए थे। संदिग्ध होने पर तीनों को रोका और पूछताछ की। इस पर तीनों ही घबरा गए। पुलिस ने उनके थैलों की तलाशी ली। थैलों में पैकेट बनकर सोने के जेवरात और कैश भरा हुआ था। तीनों ही लोग जेवरात और कैश को लेकर कोई जवाब नहीं दे सके। इस पर पुलिस ने जेवरात और कैश पकड़ लिया।

पुलिस ने उनके पास से 962.05 ग्राम सोने के जेवरात और टुकडे बरामद किए हैं, जिसकी बाजार कीमत करीब 70 लाख रुपए बताई जा रही है। वहीं, 26 लाख 9 हजार 740 रुपए की नकदी पकड़ी है। पुलिस ने जेवरात और कैश ले जा रहे नरेंद्र कुमार जोगसन पुत्र गोंगाराम मेघवाल निवासी भेव, थाना पालडी जिला सिरोही, मुकेश कुमार पुत्र गणेशाराम मेघवाल निवासी उथमान थाना पालडी सिरोही और चंदूलाल पुत्र जैसाजी सेन निवासी कुम्हारों का वास गोल, थाना बारलूट सिरोही को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस तीनों से पूछताछ कर रही है।

रतनपुर बॉर्डर पर पैदल जा रहे तीन लोगों को लाखों का सोना और नकदी के साथ गिरफ्तार किया।

# चौरासी विधानसभा सीट उपचुनाव में बीएपी का कांग्रेस से गठबंधन से इंकार

## चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) अकेले चुनाव लड़ेगी

- सांसद राजकुमार रोत ने चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से किसी भी प्रकार के गठबंधन से इंकार किया
- सांसद राजकुमार रोत के इस ऐलान के बाद इस सीट पर होने वाले उप चुनाव में त्रिकोणीय संघर्ष होने की संभावना है

**उदयपुर, (कासं)।** बांसवाड़ा डूंगरपुर संसदीय क्षेत्र के सांसद राजकुमार रोत ने चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस से किसी भी प्रकार के गठबंधन से इंकार किया है। रोत के इस ऐलान के बाद इस सीट पर होने वाले उप चुनाव में त्रिकोणीय संघर्ष होने की संभावना है।

उल्लेखनीय है कि राजकुमार रोत के सांसद बनने के बाद चौरासी विधानसभा सीट खाली हो गई है। राजकुमार रोत चौरासी विधानसभा सीट से विधायक थे। भारतीय आदिवासी पार्टी (बीएपी) और कांग्रेस का गठबंधन हुआ था। राजकुमार रोत इंडिया गठबंधन से चुनाव लड़ा और बांसवाड़ा लोकसभा सीट से सांसद निवार्चित हुए। इसके पहले वे चौरासी विधानसभा क्षेत्र से भारत आदिवासी पार्टी के विधायक थे, सांसद बनने के बाद उन्होंने से इस्तीफा दे दिया। चौरासी विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) अकेले चुनाव लड़ेगी। भारत आदिवासी पार्टी, भाजपा और कांग्रेस ने अपने-अपने प्रभारी नियुक्त कर दिए हैं।

जानकारी के अनुसार डूंगरपुर जिले की चौरासी विधानसभा सीट पर पिछले दो चुनावों से भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) का कब्जा है, बीएपी के राजकुमार रोत यहां से लगातार दूसरी बार विधायक बने थे। पिछले चुनाव में राजकुमार रोत ने भाजपा के सुशील कटारा को 70 हजार मतों से हराया था। चौरासी विधानसभा सीट पर कांग्रेस की जमानत जब्त हो गई थी। चौरासी विधानसभा क्षेत्र में बीएपी की स्थिति मजबूत मानी जा रही है। विधायक के उप चुनाव में बीएपी इस सीट पर कब्जा बनाए रखने के लिए पूरा प्रयास करेगी। वहीं सत्तारूढ पार्टी भाजपा भी इस बार बीएपी का गढ़ ढहाने का इरादा लेकर मजबूती से चुनावी मैदान में उतरने के मूड में है। पिछले चुनाव में कांग्रेस पार्टी यहां तीसरे स्थान पर थी, कांग्रेस के उम्मीदवार ताराचंद भगोरा की जमानत जब्त हो गई थी।

चौरासी सीट पर उप चुनाव के लिए संभावित उम्मीदवारों की बात करें तो भाजपा से पूनावाडा सरपंच मनोहरलाल डामोर, बडगामा सरपंच कांतिलाल अहारी, भचडयिा सरपंच गट्टूसिंह डामोर, गंधवा सरपंच ईश्वर विहात, पूर्व प्रधान महेंद्र बरजोड में से कोई एक हो सकता है। जबकि कांग्रेस के संभावित उम्मीदवारों में कांग्रेस से पूर्व प्रधान निमिषा भगोरा, सीमलवाडा सरपंच रूपचंद भगोरा, भादर सरपंच विनोद कटारा, कारीलाल बुझ और महेंद्र भगोरा के नाम शामिल है। बीएपी में पोपट खोकरिया और अनिल चिखली के नाम चर्चा में है, लेकिन पार्टी में उम्मीदवार चयन को लेकर बनी हुई सलेक्शन प्रणाली में कोई ओर नाम भी आ सकता है। चुनावी समीकरण की बात करें तो लोकसभा चुनाव में बीएपी और कांग्रेस का गठबंधन हुआ था, जिसकी वजह से कांग्रेस ने बीएपी के राजकुमार रोत को अपना समर्थन देते हुए उम्मीदवार नहीं उतारा था।

गठबंधन की बात आती है तो उम्मीदवार किस पार्टी का होगा यह आने वाले समय में ही तय होगा, लेकिन यहां गठबंधन के आसार कम ही है, क्योंकि लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद नवनिर्वाचित सांसद राजकुमार रोत ने कांग्रेस से गठबंधन की बात को नकारते हुए कहा था कि कांग्रेस ने उन्हें समर्थन दिया था, गठबंधन नहीं हुआ था।

बीएपी अपनी परंपरागत और मजबूत सीट पर किसी भी पार्टी से समझौता नहीं करना चाहेगी, इसलिए चौरासी सीट पर उप चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबला होने के आसार हैं। उपचुनाव में भाजपा भी सरकार होने का फायदा उठाते हुए चौरासी सीट पर पूरी ताकत लगाने के मूड में है।

# ट्रक ने 66 भेड़ों सहित चरवाहे को कुचला

- मृतक के परिजनों ने गाड़ी की तलाश कर ड्राइवर पर हत्या का मामला दर्ज करवाने व मुआवजे की मांग की
- जैसलमेर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर हुआ हादसा, सीसीटीवी से गाड़ी की तलाश कर रही है पुलिस

**जैसलमेर, (नि.सं.)।** जैसलमेर-बाड़मेर सड़क मार्ग पर कई दुर्घटनाएं होने के उपरांत भी प्रशासन कोई उपाय कर नहीं पा रहा है। बीती रात्रि को जैसलमेर जिले के देवीकोट कस्बे में सड़क हादसे में एक चरवाहे और 66 भेड़ों की मौत हो गई। हादसे की जानकारी मिलने पर देवीकोट पुलिस मौके पर पहुंची और चरवाहे का शव जवाहर हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया। पुलिस अब सीसीटीवी आदि की मदद से हादसे में शामिल गाड़ी की तलाश कर रही है।

देवीकोट पुलिस चौकी के एएसआई दीपसिंह ने बताया कि कि बीती रात करीब एक बजे चरवाहे हनीफ खान (30) पुत्र सुमेर खान, मालकों की ढाणी, रामदेवरा निवासी को ट्रक ने टक्कर मारकर चरवाहे सहित 66 भेड़ों को मौत के घाट उतार दिया। जैसलमेर के राजकीय जवाहर हॉस्पिटल में मृतक के परिजन मॉर्च्यूरी के आगे इकट्ठा हो गये और गाड़ी की तलाश कर ड्राइवर पर हत्या का मामला दर्ज करवाने और मुआवजे की मांग की। ग्रामीण सफियत ने बताया कि प्रशासन की तरफ से कोई भी नुमाइंदा धरना स्थल पर नहीं आया है। इसको लेकर ग्रामीणों में काफी रोष है। जब तक ट्रक ड्राइवर नहीं पकड़ा जाएगा तब तक धरना नहीं उठाया जाएगा।

एएसआई दीपसिंह ने बताया कि देवीकोट कस्बे से लगते एनएच 68 पर छोड़ गांव के पास तीन चरवाहे अपनी भेड़ें लेकर आ रहे थे। 200 के लगभग भेड़ें सड़क पर चल रही थीं। इसी दौरान एक ट्रक तेज गति से आया और भेड़ों समेत चरवाहे हनीफ खान को कुचलता हुआ आगे निकल गया। साथ में चल रहे दो अन्य चरवाहों ने हादसे की जानकारी देवीकोट चौकी को दी। हनीफ भोपा गांव के किसी किसान की भेड़ों को चराने का काम करता था। बीती रात हनीफ दो अन्य चरवाहों देरावरसिंह व अमृतसिंह के साथ रामगढ़ से भोपा गांव जा रहा था। तीनों के पास लगभग 200 भेड़ें थी। हनीफ खान सबसे आगे चल रहा था। उसी दौरान जैसलमेर की तरफ से एक ट्रक तेज गति से आया और हनीफ खान और भेड़ों को रौंदते हुए चला गया। एएसआई दीपसिंह ने बताया कि हादसे में लगभग 66 भेड़ों कि मौत हो गई जिनमें 30 भेड़ें हनीफ खान की भी शामिल है। इसके अलावा 10 भेड़ें घायल हो गई। पुलिस ने हनीफ खान के शव को जवाहिर हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया और सीसीटीवी आदि के आधार पर ट्रक की खोज शुरू की। एएसआई दीपसिंह ने बताया कि ट्रक बाड़मेर की तरफ गया है। हम ट्रक की तलाश कर रहे हैं।

# छत से गिरकर युवक की मौत

**भीलवाड़ा, (निसं)।** लघुशंका के लिए रात में नींद से उठा युवक छत से नीचे गिर गया। हादसे में युवक की मौत हो गई। घटना, गंगापुर थाने के करणजी की खेड़ी गांव में हुई। पुलिस ने पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया। गंगापुर थाना पुलिस ने बताया कि करणजी की खेड़ी निवासी अंबालाल (43) पुत्र चुन्नीलाल बैरवा बीती रात छत पर सो रहा था। शुक्रवार रात 11.50 बजे वह लघुशंका के लिए नींद से उठा। छत पर दीवार नहीं होने से वह असंतुलित होकर नीचे जा गिरा। गंभीर रूप से घायल अंबालाल को परिजन पहले गंगापुर और बाद में जिला अस्पताल ले गये, जहां डॉक्टर्स ने उसे मृत घोषित कर दिया। शव को पोस्टमार्टम के बाद शनिवार को परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया।

# आंधी-बारिश से फैक्ट्री की दीवार ढही, तीन की मौत

**बीकानेर, (निसं)।** मानसून की दूसरी ही बारिश ने बीकानेर में कहर बरपा दिया। बीछवाला थाना इलाके के शोभासर गांव में निर्माणाधीन फैक्ट्री की दीवार ढहने से मां-बेटी समेत तीन जनों की मौत हो गई। हादसे का पता चलने पर बीछवाल पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को मलबे से निकाल कर पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। हादसे का पता चलने पर जिला प्रशासन के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे।

बीछवाल एसएचओ नरेश निर्वाण ने बताया कि शोभासर के पास फैक्ट्री का निर्माण कार्य चल रहा है। तेज तूफान में फैक्ट्री की दीवार ढह गई। दीवार के मलबे में श्रमिक भोपाल निवासी टीना (26) पत्नी दीवान सिंह, उसकी ढाई वर्षीय बेटी मनीषा एवं क्रेन चालक औरंगाबाद निवासी संजय पुत्र रामयज्ञ दब गए। हादसे की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने वहां पहुंच कर अन्य श्रमिकों की मदद से तीनों को मलबे से निकाल कर 108 एम्बुलेंस से पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया।

# एएसआई की ड्यूटी के दौरान मौत

**जैसलमेर, (निसं)।** सीमा सुरक्षा बल के एएसआई की अमरनाथ यात्रा में ड्यूटी के दौरान कठुआ गांव में मौत हो गई। शनिवार को 154 बटालियन बीएसएफ जैसलमेर के जवान एएसआई पुरुषोत्तमसिंह की कार नहर में गिरने से डूबने से मौत हो गई। एएसआई पुरुषोत्तम सिंह (56) बटालियन समेत अमरनाथ यात्रा में ड्यूटी के लिए जैसलमेर से गए थे। ड्यूटी के दौरान कठुआ (जम्मू-कश्मीर) में गाड़ी से जाते समय गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया और गाड़ी नहर में गिर गई जिससे उनकी मौत हो गई। पुरुषोत्तमसिंह हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के रहने वाले थे। उनकी पोस्टिंग जैसलमेर में थी।

# यूडी टैक्स बना 14.56 लाख, वसूला सिर्फ 27 हजार

- नगर निगम बीकानेर अपने ही राजस्व कोष को हानि पहुंचाने में जुटा हुआ है

**बीकानेर, (निसं)।** भले ही राज्य सरकार ने सभी निकायों को अपनी निजी आय में वृद्धि करने के निर्देश जारी किए हुए हों, लेकिन नगर निगम बीकानेर अपने ही राजस्व कोष को हानि पहुंचाने में जुटा हुआ है। नगर निगम की वित्तीय वर्ष 2023-24 की ऑडिट में एक होटल को नगरीय विकास कर के रूप में 14.30 लाख रुपए का अनुचित लाभ दिए जाने की बात कही है। ऑडिट के मेमो नंबर 09 एक जुलाई 2024 में बताया गया है कि निगम की ओर से गंगानगर रोड स्थित एक होटल का वर्ष 2022 में हेरिटेज होटल के रूप में पंजीकरण होने के बावजूद अप्रेल 2016 से मार्च 2022 तक नगरीय विकास कर की गणना औद्योगिक डीएलसी दरों से की गई। इससे होटल को अनुचित लाभ पहुंचाया गया।

ऑडिट मेमो के अनुसार नगर निगम बीकानेर की ओर से 9 मार्च 2024 को आवेदक से बिना आवेदन पत्र, हेरिटेज होटल के रूप में राजस्थान, भारत सरकार की ओर से जारी पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त किए बिना एवं तत्कालीन आयुक्त के मौखिक आदेशों के आधार पर ही अवधि अप्रेल 2016 से मार्च 2024 की बकाया राशि 14 लाख 56 हजार 772 रुपए को औद्योगिक डीएलसी दरों से संशोधित गणना करते हुए केवल 27155 रुपए का बिल जारी किया गया। इससे निगम कोष को 14 लाख 29 हजार 617 रुपए की हानि हुई। लेखा परीक्षा के दौरान यह भी पाया गया कि इस होटल की ओर से अपने होटल के निर्माण क्षेत्र में विस्तार करने के लिए निगम में आवेदन किया गया था। इसके अनुसार भूमि का कुल क्षेत्रफल 12212.64 वर्गमीटर था, जिसमें से पंजीकृत आर्किटेक्ट की रिपोर्ट के अनुसार कुल निर्मित क्षेत्रफल 2685.90 वर्ग मीटर अथवा 3169.36 वर्ग गज निर्मित क्षेत्र था, लेकिन निगम की ओर से होटल से 1665.44 वर्ग गज क्षेत्रफल के अनुसार ही नगरीय विकास कर की गणना की गई है, जिससे निगम को राजस्व हानि हुई है।

ऑडिट मेमो के अनुसार श्रीगंगानगर रोड स्थित इस होटल का हेरिटेज श्रेणी में पंजीकरण प्रमाण मार्च 2022 का है। जबकि निगम की ओर से होटल को इस श्रेणी का लाभ वर्ष 2016 से ही दे दिया गया। ऑडिट मेमो के अनुसार होटल की ओर से पर्यटन विभाग राजस्थान सरकार से हेरिटेज श्रेणी के अंतर्गत पंजीयन करवाया गया था। इसके लिए पर्यटन विभाग की ओर से होटल को प्रमाण पत्र 25 मार्च 2022 न्यू एप्लीकेशन के जरिये जारी किया गया था। उक्त पंजीकरण से पूर्व होटल एक पांच सितारा होटल था, जिसके लिए निगम की ओर से वाणिज्यिक डीएलसी दरों के अनुसार मांग पत्र नगर निगम की ओर से भी भेजा जा रहा था।

# जहाजपुर प्रधान के निलंबन के विरोध में कोटड़ी बंद रहा



प्रधान सीता देवी के निलंबन के विरोध में कोटड़ी के बाजार बंद रहे।

- कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं गुर्जर समाज के लोगों ने विरोध यात्रा निकाली

**भीलवाड़ा, (निसं)।** राज्य सरकार ने जहाजपुर प्रधान सीता देवी गुर्जर को नियमित बैठकें आयोजित नहीं करने सहित अन्य मामलों को लेकर शुक्रवार को पद से निलंबित करने के मामले को लेकर शनिवार को कांग्रेस के आव्हान पर कोटड़ी कस्बे को बंद करवाया। वहीं श्रीचारभुजानाथ मन्दिर से उपखण्ड कार्यालय पहुंच कर ज्ञापन सौंपा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव धीरज गुर्जर की माता जहाजपुर पंचायत समिति की प्रधान सीता देवी गुर्जर को ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग के अतिरिक्त आयुक्त एवं शासन उपसचिव ने आदेश जारी कर निलंबित कर दिया। इस आदेश को लेकर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के आव्हान पर शरनिवार को सुबह से ही कांग्रेस के कार्यकर्ता एवं गुर्जर समाज के लोग मुख्यालय स्थित चारभुजानाथ मन्दिर पर पहुंचना शुरू हुए, सामूहिक रणनीति तैयार कर मन्दिर से आदेश के विरोध में भाजपा सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए सदर बाजार, पुराना बस स्टैण्ड, नेहरू नगर होते हुए उपखण्ड कार्यालय पहुंच नारेबाजी कर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का पुतला जलाकर विरोध प्रदर्शन किया तथा राज्यपाल के नाम ज्ञापन सौंपा।

इस दौरान लोगों में आदेश को लेकर भारी विरोध नजर आ रहा था। वहीं कांग्रेस के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं नेइसे राजनैतिक द्वेशता के की गई कार्रवाई बताया। अमावस्या के बाद एकम पर बाजार बन्द होने से कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को बाजार बन्द कराने के लिए किसी प्रकार की मशक्कत नहीं करनी पड़ी। उधर, भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता जहाजपुर में प्रधान पद से निलंबित करने का विरोध प्रदर्शन जहाजपुर की बजाय कोटड़ी में करने को औचित्यहीन बताया।

# सहोदरा नदी के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने बचाया

ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने रेस्क्यू किया।

- ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के पास बने मकान पर एक परिवार फंसा हुआ था
- विधायक व जिला कलेक्टर ने बारिश से उपजे हालातों का जायजा लिया

**टोंक, (निसं)।** पीपलू उपखंड क्षेत्र के ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को एसडीआरएफ टीम ने पहुंचकर रेस्क्यू किया। तहसीलदार इंद्रजीत सिंह चौहान ने बताया कि ग्राम कुरेडी में सहोदरा नदी के पास बने मकान पर एक परिवार फंसा हुआ था, जिसकी सूचना मिलने पर मौके पर पहुंच एसडीआरएफ टीम को बुलाकर रेस्क्यू करवाया। तहसीलदार ने बताया कि ग्राम कुरेड़ी निवासी रामबाबू, शंकरलाल, रामा पत्नी दामोदर, हनुमान मीणा नदी के पास स्थित मकान पर शुक्रवार शाम से ही मकान की छत पर थे। जिनको शनिवार को एसडीआरएफ टीम ने सुरक्षित रेस्क्यू किया।

टोंक जिला कलेक्टर ने शनिवार को ग्राम बोरखंडी कला में तालाब टूटने से बाढ़ से प्रभावित क्षेत्र का दौरा कर जायजा लिया है। जिला कलेक्टर ने ग्रामीणों से रूबरू होते हुए उनकी समस्याओं को सुना। उपस्थित अधिकारियों को तुरंत ग्रामीणों को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए।

इसी प्रकार पीपलू उपखंड क्षेत्र के संदेडा, संदेडा फार्म, हरिपुरा, भूरावली, पीपलू में बारिश से उपजे हालातों का क्षेत्रीय विधायक रामसहाय वर्मा ने पहुंचकर जायजा लिया। विधायक ने प्रशासनिक अधिकारियों को आमजन को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। ग्रामीणों ने हरिपुरा से सौंधीफल तक पक्की सड़क बनाए जाने की मांग की। इस पर विधायक ने कहा कि सड़क बनाए जाने को लेकर प्रस्ताव बजट में दिया हुआ है। जल्द ही इस मार्ग पर पक्की सड़क का निर्माण होगा, जिससे भविष्य में परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी तरह भूरावली में पानी निकासी को लेकर ग्रामीणों की शिकायत पर पंचायत समिति विकास अधिकारी को निदान के निर्देश दिए।

# बनास नदी पर बनाया ईसरदा कॉपर डेम ओवरफ्लो हुआ

शनिवार सुबह बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से लबालब भरकर कॉपर डेम ओवरफ्लो हो गया।

**चौरु/उनियारा, (निसं)।** बनेठा कस्बे के समीप बनास नदी पर ईसरदा मुख्य बांध निर्माण कार्य के लिए बनाया गया दस फट भराव क्षमता का कॉपर डेम शनिवार सुबह लगभग सात बजे बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से लबालब भरकर ओवरफ्लो हो गया। ईसरदा कॉपर डेम पर चादर शुरू हो गई। बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से चैनल गेटों में से पानी लबालब तरबतर होकर बांध निर्माण क्षेत्र में होकर बनास नदी में बहता हुआ नजर आया।

पिछले 24 घंटे से ईसरदा डेम डूब क्षेत्र केचमेंट एरिया में झमाझम बारिश से शुक्रवार शाम से ही बनास नदी में जल स्तर बढ़ गया था, जिसके बाद तीन चैनल गेट खोल कर पानी की निकासी की गई थी। शनिवार सुबह अचानक बनास नदी में पानी की आवक बढ़ने से डेम लबालब हो कर ओवरफ्लो हो गया। बनास नदी में व्यर्थ बहने वाले पानी को उपयोगी बनाने के लिए तथा जयपुर, सवाई माधोपुर व दौसा जिलों को पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए बनेठा ग्राम पंचायत से तीन किलोमीटर दूर बनास नदी पेटे पट राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2004 में ईसरदा बांध का निर्माण करवाने का निर्णय लिया गया था। वर्ष 2008 में लगभग 40 करोड़ रुपए की लागत से ईसरदा कॉपर डेम का निर्माण कराया गया था।

मुख्य बांध का निर्माण कार्य तीव्र गति से जारी था। इस दौरान बनास नदीं में पानी आ जाने से संवेदक को परेशानी का सामना करना पड़ा। आनन-फानन में शुक्रवार रातभर ईसरदा डेम परियोजना के अधिकारी एवं कर्मचारी सभी मशीनों को बनास नदी के किनारे पर लाने के लिए मशक्कत करते नजर आए फिर भी कई सामान पानी में डूब गया। गौरतलब है कि बनास नदीं पर ईसरदा मुख्य बांध का निर्माण कराया जा रहा है, जिसमें 28 ब्लॉक तैयार किए गए हैं और मशीनों के द्वारा निर्माण कार्य जोरों पर चल रहा था।

शनिवार सुबह ईसरदा काफर डेम के ओवरफ्लो होने के बाद सभी मशीनों को नदी में से बाहर निकाल लिया गया है। अब लगभग निर्माण कार्य बारिश के मौसम में बंद ही रहने की संभावना जताई जा रही है। बारिश के बाद ही दुबारा से ईसरदा मुख्य बांध परियोजना का निर्माण कार्य शुरू होने की उम्मीद लगाई जा रही है।


## कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड कोटपूतली

क्रमांक-535 दिनांक-28.06.2024

### ई-निविदा सूचना संख्या 03/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पथ निर्माण कार्यो हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं केन्द्रीय/राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है।

| | |
|---|---|
| कार्य का नाम | सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली के अन्तर्गत विभिन्न कार्यो की दर संविदा |
| निविदा की कुल लागत | रूपये 160.32 लाख |
| धरोहर राशि (2प्रतिशत) | रूपये 3,20,640/- |
| निविदा फार्म डाउनलोड एवं अपलोड करने की दिनांक | मंगलवार दिनांक 03.07.2024 प्रात 9.30 बजे से सोमवार 15.07.2024 सायं 06.00 बजे तक |
| निविदा खोलने की दिनांक | मंगलवार 16.07.2024 सायं 5.00 बजे। |
| निविदा खोलने वाले कार्यालय में ई-ग्रास चालान जमा कराने की दिनांक | मंगलवार 16.07.2024 सायं 2.00 बजे तक। |
| प्रोसेसिंग शुल्क, निविदा शुल्क एवं धरोहर राशि जमा कराने की प्रक्रिया | वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प.6(5)/वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई ग्रास पर आनलाईन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न)<br>1. प्रोसेसिंग शुल्क-8685-00-102-16-02 निर्माण विभाग<br>2. निविदा शुल्क-0075-00-800-52-01<br>3. धरोहर राशि-8443-00-108-00-00<br>ऑफिस आई डी. 32827 |
| यू.बी.एन. नंबर | 1. PWD2425WSOB01912<br>2. PWD2425WSOB01913<br>3. PWD2425WSOB01914<br>4. PWD2425WSOB01915 |

निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाईट "www.dipronline.org" व विभाग की वेबसाईट "www.eproc.rajasthan.gov.in" एव "www.sppp.raj.nic.in" पर देखा जा सकता है।

(गौतम मीणा)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली

DIPR/C/5437/2024

# आपसी झगड़े में बीच-बचाव करने पहुंचे बुजुर्ग की कार से रौंदकर हत्या

## घटना से गुस्साएं लोगों ने दादी का फाटक पर जाम लगाकर प्रदर्शन किया, पुलिस ने लाठीचार्ज कर खदेड़ा

**जयपुर** (कासं)। राजधानी के मुरलीपुरा इलाके में दादी का फाटक पर कुछ लोगों की लड़ाई में बीच-बचाव करना एक बुजुर्ग को भारी पड़ गया। लड़ाई कर रहे एक युवक ने बुजुर्ग व्यापारी को कार से 15 फीट तक घसीटने के बाद रौंद दिया और वहां से भाग निकला। इस घटना के बाद इलाके में गुस्साए व्यापारियों ने जमकर विरोध प्रदर्शन किया, उन्हें खदेड़ने के लिए पुलिस ने हल्का बल प्रयोग भी किया।

पुलिस के अनुसार बनवारी कुमावत (60) दीप नगर झोटवाड़ा का रहने वाला था। 30 साल से दादी का फाटक पर फल-सब्जी की दुकान लगाता था। शुक्रवार रात करीब साढ़े नौ बजे अपनी दुकान पर बैठा था। सामने पान की दुकान के बाहर तीन-चार युवकों का झगड़ा हो गया। झगड़ा करने वाले लड़कों ने शराब पी रखी थी। झगड़ा होते देख बनवारी कुमावत बीच-बचाव करने पहुंच गया। मारपीट कर रहे लड़कों को बनवारी कुमावत समझा रहे थे। इसी दौरान एक लड़का कार में बैठकर भागने लगा। कार सवार युवक ने गाड़ी भगाने के दौरान सामने आए बनवारी कुमावत को टक्कर मार दी। करीब 15 फीट घसीटने के बाद उन्हें रौंदता हुआ भाग निकला। स्थानीय लोगों ने गंभीर हालत में उन्हें हॉस्पिटल में भर्ती करवाया। इलाज के दौरान डॉक्टर्स ने बनवारी कुमावत को मृत घोषित कर दिया। मेडिकल सूचना पर पहुंची पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए शव को मोर्चरी में रखवाया।

- आरोपी कार चालक बुजुर्ग को 15 फीट तक घसीट कर ले गया
- करीब 10 मिनट की मशक्कत के बाद ट्रैफिक जाम को खुलवाया गया

घटना को लेकर आक्रोशित व्यापारियों ने शनिवार सुबह दादी का फाटक पर दुकानें बंद कर दी। व्यापारी घटना को लेकर आक्रोश जताते हुए धरने पर बैठ गए। मृतक के परिजन मुआवजे की मांग को लेकर हंगामा करने लगे। झोटवाड़ा थाना पुलिस सूचना पर मौके पर पहुंची। पुलिस आलाधिकारियों ने समझाइश कर मामले को शांत करने का प्रयास किया। एक घंटे की समझाइश के बाद भी व्यापारी व स्थानीय लोग नहीं माने और दादी का फाटक स्थित मेन रोड पर वाहन और बैरिकेड लगाकर सड़क बंद कर दी। मृतक के परिजन मुआवजे की मांग को लेकर हंगामा करने लगे।

एक घंटे की समझाइश के बाद भी व्यापारी व स्थानीय लोग नहीं माने और दादी का फाटक स्थित मेन रोड पर वाहन और बैरिकेड लगाकर सड़क बंद कर दी गई। सुबह करीब 9 बजे इस तरह के प्रदर्शन को देखकर पुलिस ने हल्का बल प्रयोग कर लोगों को वहां से खदेड़ा। करीब 10 मिनट की मशक्कत के बाद ट्रैफिक जाम को खुलवाया गया। वार्ड नंबर-9 पार्षद किशन लाल अजमेरा ने बताया कि इनोवा में आए लड़कों का पान की दुकान पर किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया था। झगड़ा करने वाले युवक नशे में थे।बनवारी लाल कुमावत झगड़ा होते देखकर बीच-बचाव करने गए थे। इनोवा सवार लड़के बनवारी लाल कुमावत पर गाडी चढाकर निकल गए। प्रशासन से हमने परिवार को उचित मुआवजा देने की मांग रखी। आरोपियों पर सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए।

गुलाब सैनी ने बताया कि ये जान बूझकर मर्डर किया है या एक्सीडेंट, इसकी पुलिस से जांच हो। परिवार को आर्थिक मदद के साथ न्याय मिले। सभी लोगों ने इकट्ठा होकर प्रशासन के सामने यह मांग रखी थी।

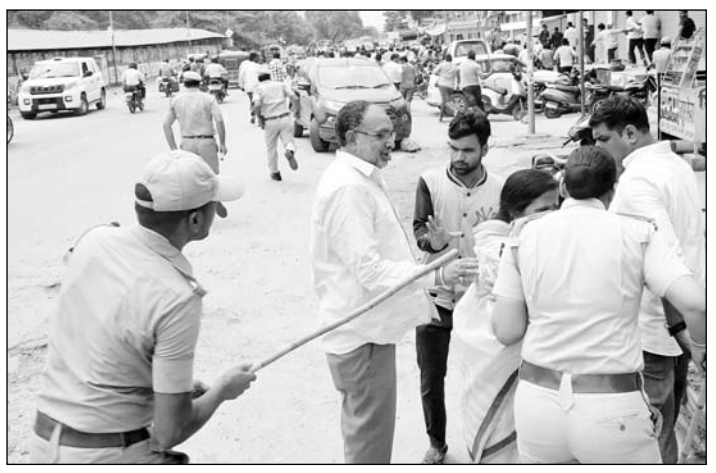

मुरलीपुरा इलाके में दादी का फाटक पर बुजुर्ग की मौत से गुस्साएं व्यापारियों और कांग्रेस नेता विक्रम सिंह ने विरोध किया तो पुलिस ने उन्हें भी आंख दिखाई। यहां तक कि पूर्व पार्षद व कांग्रेस नेत्री मंजू शर्मा पर भी लाठीचार्ज किया। फोटो-राष्ट्रदूत

# वर्षाकाल में हो रहे अमृत मिशन के काम जांचने पहुंचे आयुक्त

हैरिटेज निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा ने शनिवार को अमृत योजना 2.0 के तहत किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया।

**जयपुर** । हैरिटेज निगम आयुक्त अभिषेक सुराणा ने शनिवार को अमृत योजना 2.0 के तहत किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान आयुक्त सुराणा ने अधिकारियों को सीवर लाइन के लिए खोदी गई सड़कों को जल्द ढकने के निर्देश दिए, साथ ही बारिश में खुदाई कार्य नहीं कराने के निर्देश दिए।

- सीवर लाइन के लिए खोदी गई सड़कों को जल्द ढकने और बारिश के दौरान खुदाई कार्य नहीं कराने के निर्देश दिए

आयुक्त ने बताया कि हेरिटेज निगम क्षेत्र में जयसिंह पुरा खोर, जामडोली सहित परकोटे में अमृत 2 योजना में सीवर का कार्य किया जा रहा है। बारिश में कोई हादसा नहीं हो जाएं, इसके लिए शनिवार को सभी क्षेत्र में खुदाई पर रोक लगाई गई है। इसके अलावा किन क्षेत्र में कार्य हो रहा है, वहां भी बेरीकेट लगाने और खड्डे को जल्द भरने के निर्देश दिए। इस दौरान आयुक्त ने खोर में बने एसटीपी प्लांट का भी निरीक्षण किया। इनके अलावा वर्षा में धंसी हुई सड़कों को जल्द मरम्मत करने के निर्देश दिए।

वहीं, अतिरिक्त आयुक्त डॉ. रौनक बैरागी ने शहर के प्रमुख पार्क का निरीक्षण किया और हेरिटेज निगम की ओर से किए जा रहे पौधा वितरण की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने पार्क की सफाई, रखरखाव और हरित क्षेत्र को बढ़ावा देने के निर्देश दिए। अतिरिक्त आयुक्त ने पार्क की स्वच्छता व्यवस्था का जायजा लिया और अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे नियमित रूप से सफाई अभियान चलाएं और पार्क की हरियाली को बनाए रखें। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है बल्कि समाज में जागरूकता भी बढ़ती है। इस दौरान जिन लोगों को पौधों का वितरण किया गया और सभी उपस्थित लोगों से अपील की गई कि वे इन पौधों की अच्छी देखभाल करें और अपने आसपास के क्षेत्रों को हरा-भरा बनाएं।

# एल.आई.सी. का मिशन 'जीवन समर्थ' शुरू

भारतीय जीवन बीमा निगम ने विश्व स्तर पर प्रसिद्ध रणनीति परामर्श फर्म मैसर्स ए.टी.कियर्नी के साथ साझेदारी की है, जो कि एल.आई.सी. के मौजूदा एजेंसी ढांचे को की एंड-टू-एंड आधार पर समीक्षा करके इस एजेंसी परिवर्तन योजना को शुरू करेगी।

**जयपुर** (कासं)। भारतीय जीवन बीमा निगम (एल.आई.सी.) ने महात्वाकांक्षी मिशन 'जीवन समर्थ' शुरू किया है, जिसका उद्देश्य ग्राहकों की तेजी से विकसित हो रही जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने पूरो 14 लाख एजेंट कार्यबल को भविष्य के लिए तैयार करना है।

इसे हासिल करने के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध रणनीति परामर्श फर्म मैसर्स ए.टी.कियर्नी के साथ एल.आई.सी. ने साझेदारी की है, जो कि एल.आई.सी. के मौजूदा एजेंसी ढांचे को की एंड-टू-एंड आधार पर समीक्षा करके इस एजेंसी परिवर्तन योजना को शुरू करेगी। इसके शाखाएं डिविजन और जोनल स्तर पर एजेंसी संचालन को नया रूप देना भी शामिल होगा, जिसका उद्देश्य भारत में बीमा क्षेत्र के तेजी से बदलते उद्योग और नियामक परिदृश्य के मद्देनजर वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को स्थापित करना है।

एल.आई.सी. के सीईओ और एम.डी. एस. मोहंति ने कहा कि, जीवन समर्थ परियोजना के माध्यम से हमारा लक्ष्य लाखों भारतीय परिवारों की तेजी से विकसित हो रही जरूरतों के साथ तालमेल बैठाने के लिए अपनी एजेंसी पारिस्थितिकी तंत्र को बदलना और उन्हें उपयुक्त दीर्घकालीक बचत, सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा, यूएलआईपी और पेंशन समाधान प्रदान करना है। एल.आई.सी. एजेंट्स को सक्षम और सशक्त बनाने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए एल.आई.सी. सीईओ ने कहा कि, इस परिवर्तन अभ्यास का परिणाम हमारे पहले से बहुत प्रतिबद्ध एजेंट्स को और अधिक उपकरण व अतिरिक्त कौशल प्रदान करना होगा, जिससे एजेंट्स व एल.आई.सी के बीच बंधन और अधिक मजबूत बन सके। भारत के युवा पुरूषों व महिलाओं से जीवन बीमा मार्केटिंग को एक पुरस्कृत करियर के रूप में चुनकर एल.आई.सी. के साथ हाथ मिलाने और भारत में बीमा उद्योग के भविष्य को आकार देने में भाग लेने का आव्हान किया।

# पेपर लीक मामले में एस.ओ.जी. को तीन माह में मिली 2670 शिकायतें

## इनमें से 900 शिकायतों का सत्यापन किया जा चुका है

**जयपुर**। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) पेपर लीक मामले में लगातार नए खुलासे कर रही है। पिछले तीन माह में एसओजी द्वारा जारी हेल्पलाइन नम्बर पर 2970 शिकायतें मिल चुकी है। इनमें से 900 शिकायतों को वेरीफाई किया जा चुका है। वेरिफाई लोगों की सूची बनाकर सरकार और सम्बंधित विभागों को भेजा जा चुका है। अब इनके खिलाफ विभाग कार्यवाही करेंगे। सबसे ज्यादा शिकायतें पश्चिमी राजस्थान से मिलीं है।

एडीजी एसओजी वीके सिंह ने बताया कि लोग एसओजी को फोन कर शिकायत बता रहे कि पडोस में युवक गलत तरीके से पेपरलीक करके नौकरी पर लग गया है। लोगों ने शिकायत में पूरी डिटेल के साथ ऐसे लोगों का रिकॉर्ड भेजा है। उनकी डिटेल भी शेयर की जा रही है। पश्चिमी राजस्थान से उनके पास बड़ी संख्या में शिकायतें मिल रही हैं। ऐसी शिकायतों को वेरिफाई करके रिकॉर्ड में जांच पर लिया जा रहा है। ऐसे लोगों का भी विभागों से रिकॉर्ड शेयर कर चेक कराया जा रहा है।

एडीजी ने बताया कि हाल ही में पकड़ी गई गिरोह की छम्मी बिश्नोई गार्गी पुरस्कार भी प्राप्त कर चुकी है। छम्मी पढ़ने में काफी होशियार थी। इसलिए नकल गिरोह गैंग ने उसे लालच देकर डमी कैंडिडेट बनाने के लिए गैंग में शामिल कर लिया। पहला गार्गी पुरस्कार भी उसे मिला था। शिक्षक भर्ती में वह टीचर बन गई थी। इसके बाद रुपयों के लालच में आकर वह नकल गिरोह गैंग के संपर्क में आ गई। छम्मी डमी कैंडिडेट के रूप में एग्जाम में बैठती थी। शुरुआत में छम्मी 5 लाख से लेकर 7 लाख रुपए तक लेती थी। बाद में नकल गिरोह से डिमांड बढ़ने लगी तो वह 10 लाख से भी ज्यादा लेने लग गई थी। पिछली कुछ भर्तियों में उसने 20 लाख रुपए तक लिए थे। 2022 में छम्मी बिश्नोई डमी कैंडिडेट के रूप में एग्जाम देने के लिए गई थी। उस दौरान उसके खिलाफ बालोतरा में मुकदमा दर्ज हो गया था। तब से वह फरार चल रही थी।

नकल के रुपए से डूंगरी गांव में प्लॉट लेकर चार मंजिला लग्जरी मकान भी बनाया था। छम्मी का पति गणपत स्कार्पियो चलाता है। कोई नौकरी भी नहीं करता है। चार मंजिला मकान किराए पर दे रखा है, जिसमें ज्यादातर सरकारी टीचर ही रहते हैं। इनसे किराए का पूरा लेनदेन खुद गणपत ही करता है। फरार होने के बाद छम्मी बिश्नोई वृंदावन में रहने लगी थी। 6 हजार रुपए में उसने किराए का कमरा ले रखा था। पुलिस की टीम जब वहां पर पहुंची थी तो आरती करती हुई मिली थी। वहीं से पहचान करने के बाद उसे पकड़ा गया था। छम्मी के मोबाइल की कॉल डिटेल और वॉट्सऐप चौटिंग से एसओजी को कई खुलासे होने की उम्मीद है। एडीजी एसओजी वीके सिंह ने बताया कि नकल गिरोह ने टीएसपी एरिया को भी अपना गढ़ बनाया है। बांसवाड़ा से बहुत बड़े स्तर पर पेपरलीक करवा कर लोगों को नौकरी पर लगवाया गया है। टीएसपी एरिया से नौकरी पर लगे लोगों के डॉक्युमेंट और रिकॉर्ड चेक कराए जा रहे हैं। ओमप्रकाश ढाका का जालोर, सिरोही, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा के साथ-साथ उदयपुर में भी बड़ा नेटवर्क बना हुआ था। बांसवाड़ा में हाल ही में कार्रवाई भी की गई है।

## सार-समाचार

### किशनपोल सरकारी कॉलेज में वृक्षारोपण

**जयपुर,** (का.सं.)। राजकीय कन्या महाविद्यालय, किशनपोल ,जयपुर में आज प्राचार्य डॉ. खामोश मीणा की अध्यक्षता में अभिभावक-शिक्षक संवाद और वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन एन.एस.एस. के तत्वाधान में किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य ने छात्राओं को अनुशासित रहते हुए नियमित अध्ययन कर उज्जवल भविष्य निर्माण के लिए प्रेरित किया।प्राचार्य डॉ. खामोश मीणा ने अभिभावकों को आश्वस्वस्थ किया कि महाविद्यालय छात्राओं के लिए पूर्णतया सुरक्षित परिसर प्रदान करता है। कार्यक्रम में आये अभिभावकों ने अपने-अपने सुझाव दिए और यह बताया कि महाविद्यालय में छात्राओं को हर गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए , जिससे कि सभी छात्राओं का समग्र विकास संभव हो सके। एन.एस.एस. के स्वयंसेवक और छात्राओं सभी ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर डॉ. ममता रोकणा, डॉ.पवन असवाल , एन.एस.एस. प्रभारी डॉ. अर्चना वर्मा ने छात्राओं को महाविद्यालय गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और आगंतुक अभिभावकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।इस कार्यक्रम के पश्चात प्राचार्य ने वृक्षारोपण समिति, समस्त स्टाफ, छात्राओं और अभिभावकों के साथ महाविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया।

### सी.आई.आई. सदस्यों ने देखी खदान

**जयपुर**। सीआईआई-इंडियन वूमन नेटवर्क (आईडब्लुएन), राजस्थान चैप्टर के 22 सदस्यीय दल ने आगूचा, भीलवाड़ा स्थित हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड-रामपुरा आगूचा माइंस (आरएएम) का दौरा किया। शिक्षण मिशन का उद्देश्य दुनिया की सबसे बड़ी जस्ता खदान में से एक रामपुरा अगुचा खदान को देखना और भूमिगत खनन उत्कृष्टता में आने वाली चुनौतियों को जानना था। शिक्षण मिशन के बाद सीआईआई-इंडियन वूमन नेटवर्क (आईडब्लुएन), राजस्थान चैप्टर की अध्यक्ष, निवेदिता आर. सारड़ा, अध्यक्ष ने बताया कि हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड-रामपुरा अगुचा माइंस भूमिगत खनन उत्कृष्टता का एक बेंचमार्क है, अगुचा खदान अपने उत्कृष्ट बुनियादी ढांचे, संचालन, कम्युनिटी एन्गेजमेन्ट, पर्यावरण प्रतिबद्धता, सुरक्षा मानकों तकनीकी कौशल और नेतृत्व के लिए जानी जाती है।

### 25 फीट गहरे नाले में गिरा युवक

**जयपुर** । मानसरोवर इलाके में 25 फीट गहरे नाले में शुक्रवार रात एक युवक गिर गया। नाले में गिरने से उसके हाथ-पैर टूटने के साथ सिर में गहरी चोट लगी है। शिप्रापथ थाना पुलिस ने शनिवार सुबह पता चलने पर रेस्क्यू कर उसे नाले से बाहर निकाला। पुलिस ने घायल युवक को जयपुरिया हॉस्पिटल में एडमिट करवाया है। पुलिस ने बताया कि सुबह करीब 9 बजे रीको एरिया में स्टोन पार्क के पास नाले में एक युवक बचाने के लिए आवाज लगा रहा था। राहगीरों के आवाज सुनकर नाले में देखने पर लहूलुहान हालत में एक युवक पड़ा दिखाई दिया। शिप्रापथ थाने में लोगों ने 25 फीट गहरे नाले में युवक के गिरने की सूचना दी। सूचना पर बन्नालाल चेतक के साथ मौके पर पहुंचे। नाले से बाहर निकालने के लिए बन्ना लाल रेस्क्यू करने के लिए पेड़ के जरिए नाले में नीचे उतरे। उनके साथ किशना नाम का लड़का भी नाले में उतरा। चेतक पर मौजूद पुलिसकर्मियों से रस्सी मंगवाकर घायल युवक को बांधकर करीब 20 मिनट की मशक्कत कर बाहर निकाला गया। बन्ना लाल ने बताया कि नाले से बाहर निकालने गए युवक ने खुद का नाम केशव (25) पुत्र महेन्द्र निवासी मानसरोवर बताया। वह शुक्रवार रात नाले के ऊपर पानी की पाइप लाइन पर चल रहा था। पैर फिसलने से वह नाले में जा गिरा। सिर में चोट लगने के कारण बेहोश होने पर रातभर नाले में पड़ा रहा। होश आने पर सुबह हाथ-पैर के काम नहीं करने पर टूटने का पता चला। पुलिस ने 108 एम्बुलेस को बुलाकर घायल केशव को जयपुरिया हॉस्पिटल में एडमिट करवाया।

# मंच पर साकार हुआ भगवान कृष्ण का योगेश्वर स्वरूप

**जयपुर** । राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में शनिवार को पावन चिंतन धारा आश्रम के सांस्कृतिक प्रकल्प परिवर्तन की ओर से नाट्य प्रस्तुति "कृष्ण" का आयोजन किया गया। आश्रम के कलाकारों ने नाटक का मंचन किया। श्री कृष्ण जिन्हें हम भगवान मानते हैं, उन्हें दिन रात भजते भी हैं, परंतु क्या हम भगवान कृष्ण के सही स्वरूप को जानते हैं? इन सवालों से प्रेरणा लेकर कलाकारों ने डॉ. पवन सिन्हा गुरुजी के मार्गदर्शन में यह नाटक तैयार किया। दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, लखनऊ और अमृतसर में सफल आयोजन के बाद राजस्थान में पहली बार इस नाटक का मंचन हुआ। दर्शकों ने न सिर्फ श्री कृष्ण के योगेश्वर स्वरूप से साक्षात्कार किया बल्कि मानव जीवन की सफलता का मंत्र भी आत्मसात किए।इस दौरान दर्शकों को भारतीय ज्ञान शोध संस्थान की निदेशिका एवं आदरणीय गुरु माँ डॉ. कविता अस्थाना का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।

नाटक अन्याय से त्रस्त, अधर्म को देख धर्म से विमुख होते और भगवान से शिकायत रखने वाले आधुनिक युवाओं की जिज्ञासाओं से शुरू होता है। ऐसे युवा 'श्री नारद मुनि जी' के मार्गदर्शन में भगवान श्री कृष्ण से संसार के कल्याण के लिए प्रश्न करते हैं। कर्म क्या है, अन्याय क्यों होता है? मनुष्य को कष्ट क्यों होता है? क्या भगवान को भी कष्ट सहना पड़ा? विद्यार्थी कैसे मन को एकाग्र करें? इन सभी सवालों का हल दर्शकों को नाटक में मिलता है। स्वयं कृष्ण भगवान की योगेश्वर छवि मंच पर साकार होती है। बताया जाता है कि कृष्ण की लीलाओं का बखान किया जाता है लेकिन स्वयं कृष्ण को कितने दुख उठाने पड़े और जो संघर्ष उन्होंने किया उसके विषय में बात नहीं की जाती है। नाटक के माध्यम से यह संदेश भी दिया गया कि आत्मा अजर अमर है जो लिबास की तरह शरीर को बदलती है। नाटक में अभिषेक शर्मा ने कृष्ण, श्रेयांश त्रिपाठी ने बलराम, देवव्रत शर्मा ने नारद, प्रेशा रावत ने वृद्ध महिला का किरदार निभाया। वहीं अन्वी राणा और सुहानी प्रताप सिंह ने जिज्ञासु युवा का किरदार निभाया। बच्चों और युवाओं के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक विकास के लिए समर्पित संस्थान पावन चिंतन धारा आश्रम का एक सांस्कृतिक प्रकल्प 'परिवर्तन', जिसका उद्देश्य नाटक, नृत्य, संगीत आदि के माध्यम से संस्कृति के सही स्वरूप को जनमानस तक पहुँचाना है।

# जयपुर के लिए दीर्घकालीन मास्टर ड्रेनेज प्लान बनाने की तैयारी शुरू

## नगरीय विकास विभाग के प्रमुख शासन सचिव टी. रविकांत ने जे.डी.ए. और रूडसिको प्रशासन को इस प्रोजेक्ट पर काम शुरू करने को कहा

**जयपुर** (कासं)। नगरीय विकास विभाग के प्रमुख शासन सचिव टी. रविकांत ने शनिवार को जयपुर विकास प्राधिकरण के अफसरों की बैठक ली। उन्होंने मुख्यमंत्री की बजट घोषणाओं, इन्वेस्टमेंट समिति, ड्रेनेज प्लान, वृक्षारोपण और वाटर हार्वेस्टिंग प्रोजेक्ट के साथ-साथ लंबित प्रकरणों पर चर्चा की।

टी. रविकांत ने जयपुर शहर के लिए दीर्घकालीन ड्रेनेज मास्टर प्लान बनाने के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण को निर्देश दिए हैं। मास्टर प्लान अनुसार जे.डी.ए., नगर निगम व राजस्थान आवासन मण्डल के प्रत्येक वार्षिक बजट में ड्रेनेज सबंधित कार्यो का नियमित रूप समावेश करने एवं चरण बद्ध रूप से संपादन के निर्देश दिये गये, ताकि वर्षा के दौरान शहर में जगह-जगह वर्षा का जल एकत्रित होने की समस्या से निजात मिल सके ।

- उन्होंने जे.डी.ए., नगर निगम व राजस्थान आवासन मण्डल के प्रत्येक वार्षिक बजट में ड्रेनेज सबंधित कार्यो का नियमित रूप समावेश करने और चरणबद्ध रूप से संपादन के निर्देश दिये गये, ताकि वर्षा के दौरान जयपुर शहर में जगह-जगह वर्षा का जल एकत्रित होने की समस्या से निजात मिल सके ।

नगरीय विकास विभाग के प्रमुख शासन सचिव टी. रविकांत ने शनिवार को जे.डी.ए. प्रशासन की बैठक लेकर कई मुद्दों पर चर्चा की।

जयपुर शहर में जेडीए, निगम एवं अन्य संस्थाओं द्वारा सीवरेज का कार्य संपादन किया गया है। रविकांत ने कहा कि सीवरेज लाईन का नियमित रख रखाव, भविष्य की डिमाण्ड के आंकलन आदि को सम्मिलित करते हुए एक सीवरेज मास्टर प्लान बनाया जाना आवश्यक है, इसके लिए रूडसिको को सीवरेज मास्टर प्लान बनाये जाने के लिए निर्देशित किया। टी. रविकांत ने नाराजगी जताते हुए कहा कि जयपुर शहर में कई एजेंसियों जैसे टोरेन्ट, जलदाय विभाग, विद्युत प्रसारण निगम द्वारा भूमिगत सर्विसेज के लिए सड़क खुदाई की जा रही है।

इस कारण विभिन्न इलाकों में सड़कें क्षतिग्रस्त हो रही है और पानी एकत्रित होने से दुर्घटना का अंदेशा भी रहता है। इसलिए आमजन से जुडी इस समस्या के निदान के लिए जयपुर विकास आयुक्त की अध्यक्षता में सभी विभागों के मुख्य अभियन्ता स्तर के अधिकारियों के साथ बैठक कर रूपरेखा तैयार की जाए।

वर्षा काल में "हरित जयपुर" अभियान के अन्तर्गत जेडीए द्वारा 10 फिट उंचाई के 2 लाख पेड़ और 10 लाख पौधे रियायति दरों पर उपलब्ध कराने के लिए 25 पौध वितरण केन्द्र बनाये गये है। आमजन, जेडीए द्वारा बनाये गये क्यूआर कोड के माध्यम से नजदीक के वितरण केन्द्र से पौधे प्राप्त करने की व्यवस्था भी की गई है । इसके साथ ही इनवेस्टमेंट समिट से पूर्व सितम्बर माह में प्री-इनवेस्टमेंट समिट के लिए जेडीए को आवश्यक तैयारियां किये जाने के निर्देश भी प्रदान किये गये। इस बैठक में आयुक्त एवं सचिव जयपुर विकास प्राधिकरण, नगरीय विकास विभाग के उप शासन सचिव आर जयपुर विकास प्राधिकरण के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

ARBiT
it happens here...

**World Kiswahili Language Day**

*Kiswahili Language Day* respects the African continent's rich cultural heritage and linguistic diversity. This annual occasion is not just a celebration of a language but recognizes the key role of the *Kiswahili* language in fostering unity, peace, and multiculturalism worldwide. The formal recognition of Kiswahili Language Day began in November of 2021 at the 41st Session of UNESCO (the United Nations Educational, Scientific, and Cultural Organization) in Paris. This resolution marked Kiswahili as the first African language to receive such an honor from the United Nations.

राष्ट्रदूत
SUNDAY
07 July 2024
A-B

#AWARENESS

# All About Bombay Blood Group

A national repository would improve the recruitment, retention, and coordination of rare blood donors. Without it, efforts to maintain an adequate donor pool are fragmented and less effective.

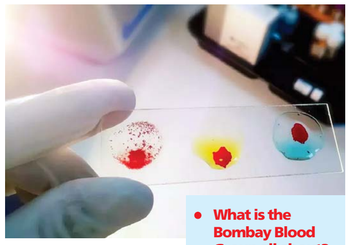

Unlike other blood groups, BBG can only receive and donate to the same blood group. According to the National Institutes of Health, only one in 10,000 Indians has it, and four in a million people worldwide.

## Challenges

- **Difficulty in locating compatible donors**

"Finding matching blood for BBG patients heavily relies on local blood banks, which may have limited supplies," said Dr Brunda M S, consultant, internal medicine, Aster CMI Hospital, Bangalore.

Delays in finding compatible blood can significantly impact patient outcomes. "In critical situations, every minute counts," said Brunda. Without a centralised database, identifying potential donors for rare blood groups, including BBG, is challenging. "Donors with rare blood types may be scattered across different regions, making it difficult to find a match quickly without a national repository," said Dixit. This delay can result in life-threatening complications for patients requiring urgent transfusions, increasing risks of adverse health outcomes or even mortality.

- **What is the Bombay Blood Group all about?**

As the name suggests, this rare blood type was first discovered in Bombay (now Mumbai), India, in 1952. Also known as 'hh' or 'Oh' blood group, this lacks the H antigen, the precursor to the A and B antigens found in the more common ABO blood group system. As a result, they cannot form A or B antigens, regardless of their genetic makeup, for the ABO blood group system. "BBG individuals produce anti-H antibodies that react against red blood cells with the H antigen, making transfusions challenging. They can only receive blood from other BBG individuals, as transfusions from any other group, including O, can cause severe reactions," said Dr Ashish Dixit, consultant at Manipal Hospital, Bengaluru.

The Bombay phenotype is inherited in an "autosomal recessive manner," requiring two copies of the hh allele from each parent to exhibit the BBG phenotype. Dixit explained that specific blood typing tests are needed to identify BBG, as standard ABO methods may not detect it. While extremely rare globally, BBG is more common in India and among individuals of Indian descent.

## Shelf life

Any blood has a shelf life of a maximum of 35-42 days depending on the blood bank maintenance. Managing the supply and demand of rare blood types is "inefficient, leading to potential wastage of donated blood and shortages when it is critically needed", noted Dixit.

## Lack of a national registry of rare blood groups

Medical experts urge the creation of a national registry to connect donors across the country, significantly increasing the chance of a timely match. Dixit said that a national repository would improve the recruitment, retention, and coordination of rare blood donors. Without it, efforts to maintain an adequate donor pool are fragmented and less effective. Establishing a national repository for rare blood groups would provide a centralised, efficient, and reliable system for managing and locating rare blood donors, thereby improving patient outcomes and healthcare efficiency.

# LOOKING BACK AT MANTHAN

*Manthan* was produced by the Gujarat Cooperative Milk Marketing Federation, the research coming from the two earlier films on Operation Flood. Lal Bahadur Shastri was impressed with the functioning of the Milk Federation. Each of the 500,000 farmer-members of the Federation paid a sum of Rs. 2.00 and the film was made. When the film was released in Bombay, truckloads of farmers came to watch the film and it is still part of the history of Indian cinema.

Dr. Shoma A. Chatterji
*Film scholar, journalist & author*

#MOVIE

Shyam Benegal's film *Manthan* (1976) was recently in the news because the Film Heritage Foundation under its founder and director Shivendra Singh Dungarpur and his team have restored a print of the film from the original celluloid print of the film, having blurred over time. This new print was recently screened to a packed theatre at the 77th Edition of the *Cannes Film Festival* and was cheered by the full theatre.

This is Benegal's third film in his rural trilogy, which turns out to be a controlled strategy in trying to disrupt a feel-good narrative of nation building, and focus on its ground realities of caste politics and government and show how collective action, taken in solidarity by people, who are socially and financially disempowered, can create their own language of independent and strong *empowerment* to fight against exploitation, in terms of caste, poverty and local political power.

Though, film historians and scholars state the example of Shyam Benegal's *Manthan* as Indian cinema's first cooperatively produced film, this is an incorrect piece of data. The first ever crowd-funded film in the history of Indian cinema was *Baadbaan*, directed and written by Phani Majumdar. When Bombay Talkies Studio was threatened by closure, 20 years after it was founded in 1934, the threatened workers were encouraged by some to produce a film so that they could save themselves from sure ruin and thus, save the studio as well. They formed the *Bombay Talkies Workers' Industrial Society* to produce Baadbaan.

Bombay Talkies, after producing 102 films over nearly two decades, fell into a financial crisis from 1939, when World War II set in. Baadbaan was the last-minute attempt by the committed workers to save their jobs and the studio. But though, Baadbaan was a wonderfully made film and was declared a hit initially, it could not work the trick and Bombay Talkies had to pull down its shutters, no thanks to the infighting between the owners after the demise of Himanshu Rai. Sadly, there is no mention of this film in any book or writings on Hindi cinema as a path-breaking project on the cooperative movement.

Benegal's *Manthan* provides a textbook case study of how cooperation can bring about a classic film that never dates with time or in terms of topicality. It was motivated by the late Verghese Kurien, known as the 'father' of Operation Flood, in whose initiative Benegal had made two documentaries on Operation Flood. But after the films were made, Kurien expressed his concern about the public viewing of the documentaries and discussed the possibility of making a full-length feature film on the *AMUL Cooperative Movement* that Kurien had begun in Gujarat.

Manthan was produced by the Gujarat Cooperative Milk Marketing Federation, the research coming from the two earlier films on Operation Flood. Lal Bahadur Shastri was impressed with the functioning of the Milk Federation. Each of the 500,000 farmer-members of the Federation paid a sum of Rs. 2.00 and the film was made. When the film was released in Bombay, truckloads of farmers came to watch the film and it is still part of the history of Indian cinema.

Writes Dr. Ruta Dharmadhikari in her paper, "The film, through the lens of developmental politics shows how Benegal's film creates the space for a realism in cinema that moves beyond the state commissioned documentaries of post-Independence India, into the narrative of cinematic fiction, based on state policy."

Manthan is based on the *Operation Flood*, the highly successful milk revolution, occasioned by Bharat Ratna awardee, Dr. Verghese Kurien. Manthan was made and released during the Emergency, which lasted in India from 1975 to 1977. Moving from the dark and pessimistic *Nishant*, (1975), the second in the trilogy, *Manthan* (1976) was made as a 'fiction feature.' It was an original script again, written jointly by Vijay Tendulkar and Verghese Kurien, along with Benegal inputting his findings, based on research of how the milk cooperatives were developing during this time.

> In Manthan, Benegal's interest in power relations come to the fore. The four-cornered struggle, between the untouchables, the traditional middle-class, the rising rural capitalists and the new cooperatives led by middle-class agents of change, is traced with a degree of political consciousness evident in later films.

The film won the 1977 National Film Award for *Best Feature Film in Hindi* and National Film Award for *Best Screenplay* for Vijay Tendulkar, and was also India's submission for the *Academy Award for Best Foreign Language Film* for 1976. Preeti Sagar won the *Best Female Playback Singer* Award for the single song number, that she belted out in the film, from Filmfare.

In Manthan, Benegal's interest in power relations come to the fore. The four-cornered struggle, between the untouchables, the traditional middle-class, the rising rural capitalists and the new cooperatives led by middle-class agents of change, is traced with a degree of political consciousness evident in later films like *Aarohan* and *Mandi*. An erotic relationship is hinted at between the leader of the cooperative (Girish Karnad) and a married *Harijan* woman (Smita Patil), but Benegal leaves it at the suggestive level.

Manthan's protagonist, Dr. Manohar Rao (Girish Karnad) is modeled along the lines of Dr. Verghese Kurien. He is foreign-educated, urban-oriented intellectual and is a representative of the neocolonial bureaucracy as the functionary of the developmental agenda of the nation. The very first shot is that of this doctor alighting from a train from the city to the small town of Kheda in Gujarat, with his suitcase. The very first shot of the doctor, no, a vet, alighting from a train in rural India, and then refusing to board an overloaded horse carriage is a seemingly simple opening to a starkly forthright and raw narrative. We are witness to unpaved roads, huts with thatched roofs and actual farmers in the background.

When Dr. Manohar Rao reaches Sanganva village to build a dairy cooperative, the local businessman Ganga Prasad Mishra (Amrish Puri), who buys milk from villagers for his private dairy, crosses his path. Mishra is a strange man because he thinks he is offering the milkmen in the village a livelihood by buying their milk produce. He is fully aware that he is exploiting them till Rao and his team begin to educate the villagers to form their own cooperative society and control the sale of milk, based on purity at prices determined by them.

The villagers, steeped in debt, and very poor, most of them belonging to the untouchable castes, feel politically and financially pressurized and are initially afraid to begin a movement that may antagonize the local businessman on one hand, and the Panchayat head (Kulbhushan Kharbanda) on the other. It takes time for the villagers to be convinced by Dr. Rao and his team to take on the cudgels against the two powerful men in the village, added to by the high-caste farmers, who force the low caste villagers to stand in a separate queue to sell their milk to be sent to the city cooperative.

> The characters are finely etched and fleshed out to present a colourful collage, not only of characters and their images but also their moods and their personalities. The most difficult nut to crack is Bhola (Naseeruddin Shah) and low-caste man, delivered by a mother, left pregnant by a city man.

The characters are finely etched and fleshed out to present a colourful collage, not only of characters and their images but also their moods and their personalities. The most difficult nut to crack is Bhola (Naseeruddin Shah) and low-caste man, delivered by a mother, left pregnant by a city man. Bhola also hates the Panchayat head, who is desperate to hold on to his power in the Panchayat elections, when this time, a poor milkman wins but is scared of accepting his victory, initially. But he is grateful to Dr. Rao for having saved his dying son, though, Rao is a vet and not a physician. Bindu (Smita Patil) is a single mother, taking care of her cow and her little son, as her husband has left her, only to return to stop her activities with the milk cooperative team and her friendship with Dr. Rao. Bhola changes his stance when he realizes that Dr. Rao means well. The final scene showing Bhola rushing to inform Dr. Rao that his dreams have been fulfilled, when Dr. Rao is waiting with Shanta to catch the train back, and Bhola unable to reach him, is mesmerizing, mainly due to the sparkling performance of Naseeruddin Shah.

Shanta (Abha Dhulia), Dr. Rao's wife, who suddenly descends from the city, fails to fit into the small town scenario specially because she finds that her husband is forever away, trying to build the milk cooperative with the help of his team and the villagers. Her performance, however, is a black mark on the entire film because she cannot act to save her life.

Govind Nihalani's camera takes in the stark, arid visuals of the landscape, with just the right dosage of ambers and browns to capture the aridness of the landscape, closing in on Bindu's dead cow, poisoned by her jealous husband, to cut into a slice of the *Harijan* girl, tied to a post after being beaten by her father for her affair with Dr. Chandavarkar, who is sent packing back to the city right in the middle of the night by Dr. Rao. Vanraj Bhatia's haunting musical score plays on the soundtrack, the musical notes of the only song '*Mero Gaam Katha Parey,*' belted out beautifully by Preeti Sagar is one of high points of the film. The screen drew loud applause at Cannes.

rajeshsharma1049@gmail.com

#WARM WELCOME

# The Chosen Family

Despite reaching the zenith of success, they were humble. The warmth and simplicity triggered a cord within.

Varnika Binani

The wind roared, and our stomachs rumbled and churned as our legs seemed to be shredded through the four hour car journey. Just as the taxi reached my husband's friends home at Delhi, his entire being came alive like Vin Diesel from Fast and Furious. A band of boys symmetrically stood bedside each other as we got out of the car. The slangs, grins, hugs didn't stop until my children lept and almost forced themselves between the boys. They yanked my children on their shoulders like they were their own and made a lasting first impression as we moved towards the direction of the lift. We were enveloped with love and laughter at the entrance of their home.

The freshness in the air was subtle. I felt like a cat on hot bricks as this was my first time meeting my husband's set of close college friends. Watching the picturesque sunset from the balcony overlooking the gigantic green garden, I tugged the cup of hot masala tea hard as I hoped to be accepted by his chosen family. Brisk walking through the crystal clear floors where even a jet black ant could be spotted, I rushed to the washroom dumbfounded at the sight of a Jacuzzi. Stepping out into the hallway and greeted by couple who owned the house, we engaged in a conversation and silently I bowed down to their inner selves as they lacked egos, and a sense of pride. Despite reaching the zenith of success, they were humble. The warmth and simplicity triggered a cord within. Soon one of the wives laid a wide spread for dinner and served my children in the same way as she served her son. Like a pack of hungry wolves, the children attacked the piping pakodas, the crispy cottage cheese and innumerable delectable vegetarian dishes all cooked with love oozing with every bite in their mouth. They savoured the desert and slept like logs with their hearts and stomachs full. It didn't seem like any of the women met my children or me for the first time. If there's love at first sight, this was it. It is then that the night had begun and their walk down memory lane made me live a 'hostel life' for a few hours.

The chatter grew louder, so did the cheer. Men with salt and pepper hair sat beside each other on the couch. Our ears were glued to my husband narrating the story of how we met. Each one of them spoke unabashedly assuming their better halves weren't around. The camaraderie was unreal and almost numbed my body. The atmosphere was surreal; the wives laughed as mere spectators to their never ending conversation. Words didn't seem to upset anyone's apple cart as the night proceeded. The glee in their eyes, the wide smiles, and the censored language ushered me to roll back with laughter and applaud at their jokes.

As they turned back the clock, reminiscing about the good old days where the struggle was saving to treat oneself to an extra dish at the mess and working out solutions to ensure each enjoyed at a local diner. I was amazed how each other's room numbers with their peculiar habits were etched in their left brain. Five years of residential campus meant they knew each other more than we knew our own spouses. I would have thought seeing them as accomplished lawyers in leading firms much like Harvey Spector would be the highlight of their lives. However, they laid emphasis on the five years that shaped them and became the centre of their universe. Watching them together answered a lot questions for me and it strengthened my belief that a man is indeed known by the company he keeps.

The bond the men shared had withered stormy nights, calm days and even turbulent personal lives. The dark secrets were conveyed through dignified gazes. As the beats of a popular Bollywood track grew louder, all of them instantly pointed their glasses to my husband. At the blink of an eye, without twitching he jumped like Amitabh Bachan from the movie Hum. I was bewildered and astounded to be informed about his nick name. Their bodies moved with child- like enthusiasm. The over excitement and high energy could be felt in every breath. Shortly after they broke into multiple forms of dance, the women distanced themselves from them.

We briefly engaged about our professional lives and the cumbersome task of handling house help. The ice was broken and soon I found myself sharing my difficulties and holding back a flood of tears. Like a game of passing the parcel, each girl spoke and we all realised the true meaning of adulting! Slowly but surely the girls were the wives I felt comfortable and confident around. A page out of Enid Blyton's Malory Tower, I didn't want the night to end. It seemed unreal to feel love, acceptance from people who were strangers (to me) a few hours ago.

With hearts aglow and spirits intertwined, the world seemed a little brighter, a little kinder, as the magic of Christmas lingered, casting its spell of unity far beyond the night. It was time for us to leave and pearls of sweat trickled down my forehead as my heart pounded heavily. They had opened their hearts and homes to their friend's wife and children. The world I came from, even friends didn't do so. As my husband and I drove back he reiterated a vital fact; it's not about your friends knowing that they have your back but you knowing that they have your back. I pondered on this profound thought until I reached home.

## THE WALL

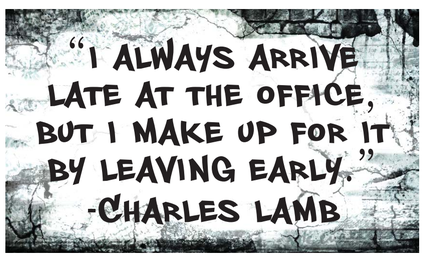


## BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

## ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

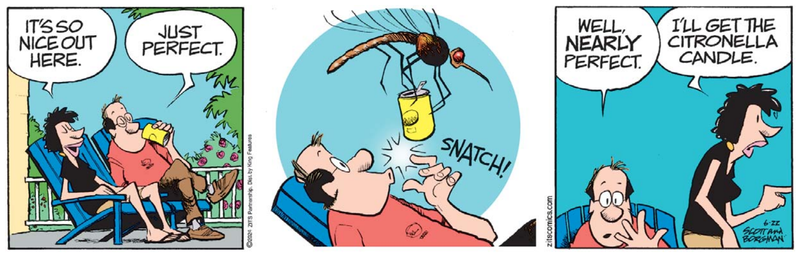

# टोल पर फायरिंग कर रंगदारी मांगने वाले दो बदमाश गिरफ्तार

## घटना के बाद से फरार चल रहे थे, एसपी ने दोनों पर ईनाम घोषित किया था

**धौलपुर,** (निसं)। धौलपुर जिले के टोल प्लाजा चिलाचौंद पर फायरिंग कर दहशत फैलाने, हत्या का प्रयास करने और 50 हजार रुपये महीना रंगदारी मांगने वाले दो ईनामी बदमाशों को आंगई पुलिस ने गिरफ्तार किया है। इनके द्वारा धौलपुर जिले के चिलाचौंद टोल प्लाजा पर टोल का भुगतान नहीं किया गया। साथ ही टोल कर्मियों से झगड़ा किया और दहशत फैलाने फैलाकर जान से मारने की नीयत से अवैध देशी कट्टे फायरिंग भी की गई। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक धौलपुर ने दोनों की गिरफ्तारी पर ईनाम घोषित कर दिया।

थाना प्रभारी रामावतार मीणा ने बताया कि कार्रवाई करते हुए श्यामवीर पुत्र सोहन सिंह मीणा निवासी कुमरपुरा थाना सरमथुरा और कमल मीणा पुत्र मनरूप मीणा निवासी सुनीपुर थाना बाड़ी सदर को गिरफ्तार किया है, जिनमें बदमाश श्यामवीर मीणा पर 15 हजार रुपये और कमल मीणा 10 हजार रुपये का ईनाम घोषित है। इस दोनों बदमाशों की गिरफ्तारी में कांस्टेबल मनोज और अर्जुन सिंह की विशेष भूमिका रही है।

थाना प्रभारी ने बताया कि दोनों बदमाशों को गांव बटीकरा के सिद्ध बाबा मंदिर के पास बीहड में से धर दबोचा है। साथ ही उनके कब्जे से वारदात में प्रयोग ली गई एक बिना नम्बरी मोटरसाइकिल को भी जब्त किया गया है। इसके साथ ही इनसे जब्त किए गए अवैध देशी कट्टा व कारतूसों के बारे में एवं उनके अन्य साथियों व हथियार की खरीद फरोख्त के संबन्ध में पूछताछ की जा रही है।

थाना प्रभारी ने बताया कि गत 30 जून को गौरीशंकर पुत्र ओमप्रकाश जाट निवासी वी. पी.ओ 12 एम. एल. डी. बडसाना श्रीगंगानगर हाल टोल मैनेजर चिलाचौंद टोल प्लाजा थाना आंगई ने एक रिपोर्ट दी थी, जिसमें उसने बताया कि 29 जून की रात्रि को एक मोटरसाइकिल पर सवार होकर आए दो बदमाशों ने टोल पर फायरिंग की और 50 हजार रुपये की रंगदारी देने की धमकी दी। मना करने पर अवैध हथियार से फायरिंग की और दहशत फैलाई, जिसमें टोल मैनेजर बाल बाल बच गया।

टोल प्लाजा पर फायरिंग कर दहशत फैलाने के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।

# बोडीगामा बड़ा में क्वार्ट्ज पत्थरों का अवैध खनन पकड़ा

## खनन विभाग की टीम के आते ही खनन माफिया हिटाची मशीन को छिपाकर भाग गए

**डूंगरपुर,** (निसं)। सलूंबर से खनन विभाग की टीम आधी रात को अवैध खनन वाली जगह पर पहुंची। मौके पर खनन विभाग ने एक हिटाची मशीन पकड़ी। वहीं एक पहाड़ी को अवैध रूप से खनन कर क्वार्ट्ज पत्थरों को निकाला हुआ बरामद किया।

- **आधी रात को पहुंची खनन विभाग की टीम, बुलाने पर भी मौके पर पुलिस नहीं पहुंची**

साबला थाना क्षेत्र के बोडीगामा बड़ा में बोडीगामा डेम के पास क्वार्ट्ज पत्थरों के अवैध खनन के खिलाफ पांच दिन में दूसरी बार कार्रवाई की गई। सलूंबर से खनन विभाग की टीम आधी रात को अवैध खनन वाली जगह पर पहुंची। मौके पर खनन विभाग ने एक हिटाची मशीन पकड़ी। वहीं एक पहाड़ी को अवैध रूप से खनन कर क्वार्ट्ज पत्थरों को निकाला हुआ बरामद किया। आधी रात को कार्रवाई को लेकर खनन विभाग ने साबला थाना पुलिस से मदद मांगी, लेकिन न तो पुलिस मौके पर पहुंची और न ही कोई मदद की है। ऐसे में रातभर खनन विभाग की टीम मौके पर ही तैनात रही। खनन विभाग ने जुर्माना भी लगाया है।

साबला थाना क्षेत्र के बोडीगामा बड़ा गांव में बोडीगामा डेम के पास ही एक पहाडी को खोदकर अवैध रूप से क्वार्ट्ज पत्थरों का खनन किया जा रहा है। इसे लेकर खनन विभाग के पास लगातार शिकायत पर 1 जुलाई को खनन विभाग ने मौके से एक जेसीबी पकड़ी थी। खनन विभाग ने ढाई लाख का जुर्माना वसूला था, लेकिन कार्रवाई के पांच दिन बाद ही खनन माफिया फिर से उसी जगह पर अवैध खनन करने लगे। माइनिंग विभाग को दोबारा मिली शिकायत पर सलूंबर से माइनिंग विभाग के फोरमैन गोपाल डांगी हथियारबंद जवान के साथ बोडीगामा डेम के पास पहुंचे। रात के अंधेरे में डेम के पास पहाड़ी पर हिटाची मशीन लगाकर क्वार्ट्ज पत्थरों का खनन किया जा रहा था। वहीं खनन विभाग की टीम के आते ही खनन माफिया हिटाची मशीन को पास के ही झाड़ियों में छिपाकर भाग गए। कीचड़ और गड्ढों के बीच खनन विभाग की टीम मुश्किल से मौके पर पहुंची। अंधेरे में मोबाइल टॉर्च की रोशनी में खनन विभाग ने पूरी कार्रवाई को अंजाम दिया। वहीं अंधेरा होने के साथ ही खनन माफियाओं के डर से माइनिंग अधिकारियों ने साबला थाना पुलिस ने मदद मांगी। इसके लिए पुलिस का एक जाब्ता मौके पर भेजने के लिए कहा, लेकिन पुलिस ने न तो मौके पर टीम भेजी और न ही किसी तरह की सुरक्षा मुहैया करवाई।

रातभर खनन विभाग को टीम गाड़ी में बैठी रही। वहीं सुबह होने पर खनन विभाग ने हिटाची मशीन को जब्त कर थाने पर रखवाने के लिए पुलिस से मदद मांगी, लेकिन इस बार भी पुलिस का बर्ताव नहीं बदला। खनन अधिकारियों ने बताया कि 5 दिन में दूसरी बार अवैध खनन किया जा रहा था। जिस पर रिपोर्ट देने गए। लेकिन हिताची मशीन जब्त करने से लेकर रिपोर्ट तक में पुलिस पल्ला झाड़ती रही। इसमें बाद खनन अधिकारियों ने मामले में 1 लाख 87 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है।

## पथराव करने के दो आरोपी गिरफ्तार

**डूंगरपुर,** (निसं)। दोवड़ा थाना पुलिस ने वाहनों पर पथराव करने के दो आरोपियों को गिरफ्तार कर दो बाल अपचारियों को डिटेन किया है। आरोपियों ने चितरेटी घाटी में लूट के इरादे से वाहनों पर पथराव किया था, जिसमें एक बच्ची गंभीर रूप से घायल हो गई थी। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है।

दोवड़ा थानाधिकारी ने बताया कि 3 जुलाई को लीलवासा निवासी घनश्याम पुत्र नारायण पंचाल ने रिपोर्ट दी थी। रिपोर्ट में बताया कि 3 जुलाई को उसकी भतीजी माही पंचाल के बीमार होने पर उसे कार में लेकर घर से निकले थे। इस दौरान रात करीब 11.20 पर चितरेटी घाटी पहुंचे। उस समय बाइक पर चार युवक खड़े थे और उनके हाथों में पत्थर थे। बदमाशो ने कार को रोकने का प्रयास किया, लेकिन कार नहीं रोकने पर बदमाशों ने पथराव शुरू कर दिया। पथराव में माही के मुंह पर पत्थर लगे जिससे वह गंभीर घायल हो गई।

# राशन डीलर्स की मनमर्जी जनता के लिए परेशानी का सबब बनी

## राशन विक्रेता राशन में दिए जाने वाले गेहूं के साथ अन्य सामग्री भी जबरन उपभोक्ताओं को दे रहे हैं

**अलवर,** (निसं)। अलवर शहर में राशन की दुकानों पर डीलर्स की मनमर्जी गरीब जनता के लिए परेशानी का बन गई है। राशन विक्रेता राशन में दिए जाने वाले गेहूं के साथ अन्य सामग्री भी जबरन उपभोक्ताओं को दे रहे हैं। इससे उपभोक्ताओं की जेब पर दोहरी मार पड़ रही है। रसद विभाग सब कुछ जानकर भी कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है। इससे राशन डीलरों के हौंसले बुलंद हो गए हैं।

शहर के वार्ड नंबर 20 में एक राशन डीलर इन दिनों गेहूं के साथ-साथ जबरन चाय की पत्ती व वॉशिंग पाउडर दे रहे हैं। यहां से राशन ले रहे लोग गरीब वर्ग के हैं जो सरकार का निशुल्क राशन लेने के लिए आते हैं। ऐसे में गेहूं के साथ जबरन सामान लेने पर पैसे चुकाने पड़ रहे हैं। इसी तरह का मामला मूंगस्का में भी सामने आया है। वहां भी एक राशन डीलर इसी शर्त पर लोगों को राशन का गेहूं देता है कि उन्हें चाय की पत्ती व वॉशिंग पाउडर खरीदना पड़ेगा।

शहर के अन्य वार्डों में भी इस तरह की शिकायतें लगातार सामने आ रही है। जिला प्रशासन व रसद विभाग को राशन डीलरों की अनियमितताओं की शिकायत की जा रही है, लेकिन इसके बाद भी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। इसके चलते राजस्थान संपर्क पोर्टल पर भी राशन डीलरों के खिलाफ शिकायत की जा रही है। उपभोक्ता हरीश महावर ने बताया कि राशन डीलर के खिलाफ अतिरिक्त जिला कलेक्टर को शिकायत दी है।

इस संबंध में मानसिंह मीणा, जिला रसद अधिकारी, अलवर का कहना है कि राशन डीलर केवल गेहूं ही बांट सकते हैं। यदि उपभोक्ताओं को जबरन सामान बेच रहा है तो गलत है। राशन डीलर अपनी जेब से चाय की पत्ती व सर्फ नहीं बांट सकते हैं। हमारे पास इस तरह की कोई शिकायत अभी तक नहीं आई है।

## अवैध निर्माण की पांच बिल्डिंग सीज

**धौलपुर,** (निसं)। धौलपुर शहर में अनुमति लिए बिना अवैध निर्माण किए जाने के मामले में नगर परिषद ने अभियान चलाकर कार्रवाई की है, जहां शनिवार को पुलिस की टीम के साथ नगर परिषद के अधिकारियों ने अलग-अलग जगह पर पांच दुकानों को सीज किया है।

नगर परिषद धौलपुर के आयुक्त अशोक शर्मा ने बताया कि कलेक्टर बीटी के निर्देश पर धौलपुर जिले में अवैध अतिक्रमण और बिना मंजूरी के बनाए गए 98 स्थान को चिन्हित किया गया है। जिनमें होटल और दुकानें शामिल हैं। उन्होंने बताया कि शनिवार को जिले में अभियान के पहले दिन पांच अवैध बिल्डिंग को सीज किया गया है। आयुक्त ने बताया कि अभियान के पहले दिन जगदीश टॉकीज पर एक, पैलेस रोड पर दो और गौरव पथ पर दो बिल्डिंग को सीज करने की कार्रवाई की गई है। उन्होंने बताया कि कई जगह बिना अनुमति के दो और तीन मंजिल से अधिक निर्माण कर लिया गया है।

# गंगापुर में हल्की बारिश, लोगों को गर्मी से राहत मिली

गंगापुर सिटी में बरसात होने से सड़कों पर पानी बहने लगा।

**गंगापुर सिटी,** (निसं)। शनिवार को दिनभर धूप खुलने से लोगों को एक बार फिर गर्मी व उमस से परेशान होता देखा गया। शाम छह बजे करीब अचानक मौसम ने पलटा खाया और आसमान काले बादल घिर आ आए जो कि धीरे-धीरे बरसना शुरू हो गए। मौसम में आए बदलाव से दिन में पड़ रही गर्मी से राहत मिली। रविवार को पूरे दिन उमस और गर्मी से परेशान रखा।

शाम को हुई बारिश के बाद लोगों ने तेज गर्मी और उमस से राहत महसूस की। यहां गंगापुर सिटी जिला मुख्यालय सहित सभी उपखण्ड मुख्यालय सहित ग्रामीण इलाकों में बारिश का दौर जारी है। गंगापुर सिटी में पिछले कुछ समय पानी की कमी के चलते जिले के ज्यादातर बांध सूख चुके थे। वहीं पेयजल संकट भी गहराया हुआ था। ऐसे में अब लोगों को मानसून से अच्छी बारिश होने से खासी उम्मीदें है। मौसम केन्द्र जयपुर केन्द्र के अनुसार अगले कुछ दिन में यहां अच्छी बारिश होने के आसार है।

# युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत

**भीलवाड़ा,** (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र में अशोक लीलैंड कंपनी में कार्यरत एक कर्मचारी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। परिजनों का आरोप है कि जबरदस्ती ब्लड डोनेट करवाने के बाद उसकी हालत बिगड़ गई और उसकी मौत हो गई।

परिजन जीजा लक्ष्मणलाल माली ने बताया कि बलिया खेड़ा निवासी रामलाल (22) पिता देवीलाल माली जो संदीप बजाज चौराहे पर स्थित अशोक लीलैंड कंपनी में कर्मचारी था। शनिवार को कंपनी में ब्लड डोनेशन का आयोजन किया गया था। परिजनों का आरोप है कि कंपनी द्वारा कर्मचारियों पर ब्लड डोनेट करने के लिए जबरदस्ती दबाव बनाया गया। रामलाल के बार-बार मना करने के बावजूद उसका डोनेशन लिया गया, जिसके बाद से उसकी हालत बिगड़ने लगी। साथी कर्मचारी उसे लेकर हॉस्पिटल पहुंचे जहां चिकित्सकों ने एमजी हॉस्पिटल के लिए रेफर कर दिया। एमजी हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने प्राथमिक परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। मौत की खबर मिलने के बाद परिजनों के साथ ही समाजजनों की भीड़ एमजी हॉस्पिटल में जमा हो गई और मुआवजे की मांग को लेकर हंगामा खड़ा कर दिया। देर शाम तक परिजनों का हंगामा जारी था।

# भीलवाड़ा में हुए सड़क हादसे में डूंगरपुर के युवक की मौत

- **परिजनों ने कार मालिक के घर के बाहर किया प्रदर्शन, मुआवजे की मांग की**
- **कार चलाने के लिए गांव के ही ड्राइवर युवक सुरेंद्र दरोगा को साथ ले गया था कार मालिक**

**डूंगरपुर,** (निसं)। बिछीवाड़ा थाना क्षेत्र के नवलश्याम गांव के एक युवक की भीलवाड़ा के पास सड़क हादसे में मौत हो गई। परिजन भीलवाड़ा से शव लेकर शनिवार सुबह गांव नवलश्याम पहुंचे, जहां कार मालिक के घर के आगे सड़क पर ही एंबुलेंस को खड़ा कर दिया। परिजनों ने हादसे के लिए कार मालिक को जिम्मेदार मानते हुए आर्थिक सहायता की मांग पर बैठ गए। करीब आधे घंटे तक हंगामे के बाद समझाइश पर मामला शांत हुआ और शव लेकर रवाना हो गए।

बिछीवाड़ा थाना क्षेत्र के नवलश्याम गांव निवासी योगेशचन्द्र कलाल का बेटा कोटा कोचिंग में पढ़ाई करता है। योगेशचंद्र कलाल शुक्रवार सुबह अपने बेटे को मिलने के लिए कोटा जा रहा था। कार चलाने के लिए गांव के ही ड्राइवर युवक सुरेंद्र दरोगा को साथ ले गया। भीलवाड़ा के पास जाते ही उनकी कार का एक्सीडेंट हो गया। जिसमें योगेशचन्द्र कलाल और ड्राइवर सुरेंद्र दरोगा दोनों गंभीर घायल हो गए। दोनों को भीलवाड़ा अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टर ने जांच के बाद सुरेंद्र दरोगा को मृत घोषित कर दिया। वहीं घटना की सूचना पर दोनों के परिवार के लोग भीलवाड़ा अस्पताल पहुंच गए। शव को लेकर सुरेंद्र दरोगा के परिवार के लोग शनिवार सुबह नवलश्याम पहुंचे। इसके बाद परिजनों ने एंबुलेंस को योगेशचन्द्र कलाल के घर के सामने ही चौराहे पर खड़ा कर दिया। परिजनों ने मुआवजे की मांग करते हुए हंगामा किया। वहीं कनबा पुलिस चौकी से हेड कांनि. शिशुपाल सिंह और टीम मौके पर पहुंची। एक्सीडेंट में योगशचंद्र कलाल के भी घायल होने से अस्पताल में भर्ती है। वहीं पुलिस ने मामले में समझाइश की। करीब आधे घंटे बाद परिजन माने और एंबुलेंस के साथ शव को लेकर घर के लिए रवाना हो गए।

# ग्रामीण की मौत को हत्या बताते हुये लोगों ने जाम लगाया

**भीलवाड़ा,** (निसं)। बदनौर थाने के गायत्री नगर में रहने वाले एक ग्रामीण की गुजरात में हुई संदिग्ध मौत को हत्या बताते हुये परिजनों व ग्रामीणों ने बदनौर-भीलवाड़ा मार्ग पर जाम लगा प्रदर्शन शुरू कर दिया। इसके चलते मार्ग पर लम्बा जाम लग गया।

बदनौर पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, परा पंचायत के गायत्री नगर गांव का महाराम (43) पुत्र लालू रैगर, ठेकेदार मूलचंद गुर्जर के साथ कुआं खुदाई कार्य के लिए गुजरात गया था, जहां उसकी मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि ठेकेदार वहीं पोस्टमार्टम कराने के बाद उसका का शव लेकर आज गायत्री नगर आ गया, जहां परिजनों ने महराम की मौत को हत्या बताते हुये शव लेने से इंकार कर बदनौर बायपास स्थित ब्यावर-भीलवाड़ा मार्ग पर जाम लगा दिया। सैकड़ों की संख्या में महिलायें व पुरुष हाइवे पर बैठ गये, जिसके चलते यातायात बाधित हो गया। सूचना पर पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे और प्रदर्शन कर जाम लगाने वाले ग्रामीणों से समझाइश शुरू की। पुलिस का कहना है कि करीब एक घंटे बाद जाम खुल गया, लेकिन अभी प्रदर्शन कर रहे परिजन व ग्रामीण मौके पर ही जमा हैं और मुआवजे की मांग कर रहे हैं।

# पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष के साथ मारपीट कर नकदी लूटी

**सादुलपुर,** (निसं)। राजगढ़ थाना पुलिस ने मोहता कॉलेज के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष के साथ मारपीट कर साढे तीन लाख रुपये छीनकर ले जाने के आरोप के पर्चा बयान पर शुक्रवार रात्रि को मामला दर्ज किया है।

थानाधिकारी पुष्पेंद्र झाझड़िया ने बताया कि सपरा अस्पताल हिसार में उपचाराधीन बिलकुपाल पुत्र हरफूल जाट (30) निवासी लसेडी पीएस राजगढ़ ने पर्चा ब्यान में बताया कि 4 जुलाई को वह राजगढ़ गया हुआ था, जहां से उसने अपने दोस्त कुलदीप पुत्र जयचन्द जाट निवासी राजगढ़ से साढ़े तीन लाख रूपये उधार लिये और राजगढ़ में अपनी स्कॉर्पियो गाड़ी लेकर अपने गांव जा रहा था। रात्रि करीब

- **पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष के पर्चा बयान पर राजगढ़ पुलिस ने मामला दर्ज किया**

8.30 बजे के आसपास लसेडी टोल नाका पर पहुंचा और अमित पायल को फोन किया कि मैं रूपये लेकर आ गया हूं, आप घर पर आकर रूपये ले जाओ। तब अमित ने कहा कि आप बस स्टेण्ड पर ही रूक जाना मैं अभी थोड़ी ही देर में आ रहा हूं। तब वह रात्रि करीब 8.35 बजे के आसपास पुलिया से आगे स्टेण्ड पर पहुंचा तो उम्मेद मेघवाल अपनी दुकान पर था। तब वह अपनी गाड़ी खड़ी करके उसकी दुकान पर चला गया। वहां पर मंगतु राम उर्फ पवन पुत्र महावीर जाट निवासी लसेडी भी बैठा था तथा वह और मंगतु राम उर्फ पवन बैठकर आपस में बात करने लगे।

मंगतुराम उर्फ पवन माल्टा शराब पी रहा था, तो वहां पर उसने भी आधी बीयर की बोतल पी ली। आरोप है कि इतने में अचानक मंगतुराम उर्फ पवन ने उसे रोककर मारपीट शुरू कर दी तथा उसके हाथ में कोई नुकीली चीज थी, फिर उसने अपने हाथ में लिये स्टील के गिलास से उसके हाथो व सीर पर मारना शुरू कर दिया। इसके हाथ में ली हुई साढ़े तीन लाख से भरी हुई रूपयों की थैली को मंगतुराम उर्फ पवन ने छीन लिया। इसी बीच दुकानदार उम्मेद ने बीच-बचाव कर उसे छुड़वाया तो मंगतुराम उसकी रूपयों से भरी हुई थैली को छीनकर अपनी मोटरसाइकिल लेकर वहां से चला गया। इतने में वहां पर अमीत भी पहुंच गया। उसके ज्यादा चोट लगने के कारण जगदीश व सुरेन्द्र आदि उसे ईलाज हेतु राजगढ़ लेकर गये। जहां से उसे हिसार रैफर कर दिया।

बिलकुपाल पायल को अस्पताल में भर्ती कराया।

## बालक की तालाब के पानी में डूबने से मौत

**करौली,** (निसं)। करौली सदर थाना क्षेत्र के अकोलपुरा गांव में बारिश के दौरान तालाब में नहाते समय 8 वर्षीय बालक डूब गया। जिससे बालक की मौत हो गई। मृतक बालक कौशल का शव करौली हॉस्पिटल की मोर्चरी में पहुंचाया, जहां पोस्टमार्टम के बाद परिजनों के सुपुर्द कर दिया है। बालक स्कूल से घर लौटते समय बारिश में नहाने रुक गया था।

करौली सदर थाना अधिकारी योगेंद्र शर्मा ने बताया कि अकोलपुरा गांव निवासी कौशल पुत्र मगन जागा कक्षा 4 में एक निजी विद्यालय का छात्र था। शुक्रवार को तेज बारिश के कारण स्कूल वाहन नहीं आया। जिसके चलते बालक स्कूल से पैदल अपने घर लौट रहा था। रास्ते में बारिश में दोस्तों के साथ नहाने रुक गया। बाद में उसका साथी घर लौट गया लेकिन छात्र घर नहीं पहुंचा तो परिजनों ने बालक की तलाश की। बालक के नहीं मिलने पर परिजन शनिवार प्रात: करौली सदर थाना पुलिस को भी सूचना दी। सूचना पर सदर थाना पुलिस अकोलपुरा गांव पहुंची और बालक की तलाश की। बालक का शव गांव के तालाब में मिला। मृतक का शव तालाब से निकाल कर करौली हॉस्पिटल की मोर्चरी लाया गया, जहां पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया। बालक के एक बड़ा भाई भी है जो मानसिक रूप से कमजोर बताया जा रहा है।

# चोरों ने एक मकान सहित दो मंदिरों को निशाना बनाया

## चोरों ने तीन लाख की नगदी सहित जेवरात पर हाथ साफ किया

**अजमेर,** (कासं)। शहर में सक्रिय चोर गिरोह ने एक बार फिर एक साथ दो थाना क्षेत्रों में चोरी की तीन वारदातें अंजाम दे डाली। क्रिश्चियन गंज थाना क्षेत्र में एक सूने मकान को निशाना बनाकर करीब तीन लाख रुपए की नगदी सहित जेवरात पर हाथ किया तो वहीं सिविल लाइन थाना क्षेत्र में दो मंदिरों को निशाना बनाया। पीड़ित मकान मालिक निजी काम से शहर से बाहर गया हुआ था, पीछे से मकान सूना था। पीड़ित पुलिस में अज्ञात चोरों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है।

क्रिश्चियनगंज थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार क्षेत्र के वैशाली नगर स्थित शिव सागर कॉलोनी की गली नंबर 5 निवासी तोलाराम लालवानी बाईपास सर्जरी के दिल्ली गए हुए थे। पीछे से मकान सूना था, जिसका फायदा उठाते हुए चोरों ने चोरी की वारदात को अंजाम दी। मकान में हुई चोरी की सूचना पड़ोसियों ने जब मकान में संदिग्ध गतिविधि देखी तो उन्होंने तोलाराम के भतीजे सुनील लालवानी को सूचना दी। जब सुनील मौके पर पहुंचा तो मकान के ताले टूटे पड़े थे और अंदर कमरों में सारा सामान बिखरा पड़ा था। चोरों ने मकान की तलाशी लेकर नकदी और जेवरात पर हाथ साफ कर लिया। लालवानी के भतीजे ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची क्रिश्चियन गंज थाना पुलिस ने घर का मौका मुआयना किया। पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पीड़ित मकान मालिक के अनुसार चोर घर से करीब तीन लाख रुपए की नगदी सहित जेवरात चुरा ले गए है। पुलिस ने आसपास के सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी है।

पीड़ित परिवार ने चोरी की वारदात की जानकारी दी।

- **पीड़ित ने पुलिस में शिकायत दी, चोरों की तलाश में जुटी पुलिस**

**दो मंदिरों के दानपात्र चुराए :-**

सिविल लाइन थाना क्षेत्र के जयपुर रोड स्थित घूघरा घाटी के पास अज्ञात चोरों ने दो मंदिरों में चोरी की वारदात अंजाम देकर मंदिर में रखे दानपात्र चुरा लिए। चोरी का पता सुबह मंदिर में पूजा करने आने वाले श्रद्धालुओं को लगा तो सिविल लाइन थाना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची सिविल लाइन थाना पुलिस ने मौका मुआयना किया। मंदिर में पूजा करने आई श्रद्धालु पूजा चौहान ने बताया कि अज्ञात चोरों ने मंदिर के दानपात्र और तांबे के घड़े चुरा लिए। इसी प्रकार पास ही हनुमानजी के मंदिर से भी दानपात्र चुरा ले गए। क्षेत्रवासियों ने बताया कि हनुमान मंदिर में पहले भी चोरी की वारदात हो चुकी है। स्थानीय लोगों ने क्षेत्र में नियमित पुलिस गश्त की मांग की है। पुलिस ने मामला दर्ज कर अज्ञात चोरों की तलाश शुरू कर दी है।

## संक्षिप्त

### भालू के हमले से वृद्ध घायल

**बौंली- बामनवास,** (श्रद्धा ओम त्रिवेदी): सवाई माधोपुर रणथंभौर वन क्षेत्र में शनिवार को करीब 12 बजे एक लकडहारे गोवर्धन माली उम्र 52 वर्ष निवासी हरिजन बस्ती नीम चौकी भालू के हमले से गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रैफर किया गया है। फलोदी रेंज के क्षेत्रीय वन अधिकारी विष्णु गुप्ता ने बताया कि गोवर्धन माली 52 वर्ष रणथंभौर नेशनल टाइगर पार्क के चिडी खो वन क्षेत्र में लकडी लेने गया था इस दौरान भालू ने हमला कर दिया। भालू ने हमले से उसके मुंह को नोंच कर उसकी चमडी उधेड दी। हमले के बाद वह घायल अवस्था में अपने घर पहुंचा। परिजनों ने इसकी सूचना वन विभाग को दी। सूचना पाकर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची जिसमें गोवर्धन के मुंह का मांस बाहर आया हुआ था, सर के ऊपर से चमडी उधड कर खोपडी दिखाई देने लगी थी। वन विभाग ने घायल का प्राथमिक उपचार के बाद हायर सेंटर जयपुर रैफर कर दिया गया है। वन अधिकारी ने बताया कि रणथंभौर नेशनल टाइगर पार्क हेविटाट एरिया में लोगों का प्रवेश वर्जित है फिर भी लोग जंगल की दीवार कूद इस क्षेत्र में घुस जाते हैं। इस कारण इस प्रकार की घटनाएं होती रहती है।

### राहुल गांधी का पुतला फूंका

**निवाई,** (निसं)। अहिंसा सर्किल पर शनिवार को सर्व हिन्दू समाज के युवाओं ने विपक्षी दल के नेता राहुल गांधी का पुतला फूंककर विरोध प्रदर्शन किया। मोन्टी शर्मा ने बताया कि राहुल गांधी ने लोकसभा में हिन्दु विरोधी बयान दिया है। जिससे सर्व हिन्दुओं में भारी आक्रोश व्याप्त है। उक्त बयान के विरोध में सर्व हिन्दु समाज के युवाओं ने अहिंसा सर्किल पर राहुल गांधी का पुतला फूंककर विरोध प्रदर्शन किया और जमकर नारेबाजी की। इस अवसर पर लक्ष्य जमात, विशाल जमात, चंद्रशखेखर, कुशाल, योगेश, राहुल शर्मा, राहुल, राकेश खारोल, गौरव, निखिल, दीपेश, राहुल जायसवाल, मायाराम गुरुजी, रवि व खुशीराम सहित कई युवा मौजूद थे।

### पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

**सिकराय,** (निसं)। राजकीय सीनियर सैकेंडरी स्कूल राणोली में शनिवार को स्कूल के स्टाफ व छात्रों के द्वारा पौधारोपण किया गया। इस दौरान प्रधानाचार्य कृपाशंकर मीना व सरपंच प्रतिनिधि समुद्र गुर्जर ने स्कूल परिसर में पौधा लगाकर पौधारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। स्कूल के स्टाफ व छात्रों ने स्कूल परिसर में छायादार व फलदार पौधे लगाकर साथ ही स्कूल के प्रधानाचार्य ने पौधारोपण किए पौधे में रोज पानी व सुरक्षा को लेकर शपथ भी दिलाई। इस दौरान अध्यापक धन्ना लाल सैनी, योगेश शर्मा, बलराम गुर्जर, दिलीप सिंह, पूजा शर्मा, सीमा मीना, मंजुलता, वर्मा, अशोक सैनी, सीयाराम मीना, हीरालाल सैनी, जितेन्द्र चौधरी आदि मौजूद रहे।

### सवारी बैठाने को लेकर मारपीट

**खाटूश्यामजी,** (निसं)। प्रसिद्ध धार्मिक नगरी में श्रद्धालुओं की भीड बढ ने के साथ ही अवैध बसों का संचालन भी हो रहा है। रोडवेज बस स्टैंड के पास अवैध बसों का जमावडा रोजाना देखा जा सकता है और सवारी बैठाने को लेकर आपस में झगडा करते है यहां तक कि मारपीट तक भी नौबत आ जाती है। सवारी बैठाने को लेकर निजी बस चालकों में आपस में झगडा हो गया व मारपीट करने लग गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने समझाइश का प्रयास किया नहीं मानने पर आधा दर्जन लोगों को गिरफ्तार कर छह बसों को जब्त किया गया। थाना एच एम हरि सिंह ने बताया कि सूचना पर पहुंची पुलिस टीम ने समझाइश का प्रयास किया लेकिन नहीं मानने पर कार्रवाई की गई।

### वरिष्ठजन सम्मान समारोह आज

**श्रीमाधोपुर,** (निसं)। श्री गौड विप्र परिषद समिति श्रीमाधोपुर की ओर से समाज के 70 या उससे अधिक उम्र के लोगो का 'वरिष्ठ जन सम्मान समारोह' का आयोजन रविवार 7 जुलाई को शाम 4 बजे से श्री गौड विप्र परिषद समिति भवन श्रीमाधोपुर में किया जाएगा। श्री गौड विप्र परिषद समिति के अध्यक्ष एडवोकेट राजेंद्र कुमार शर्मा, मंत्री डॉ चंद्र प्रकाश व्यास एवं समस्त कार्यकारिणी की ओर से वरिष्ठ जनों को आमंत्रित किया गया है। श्री गौड विप्र परिषद समिति द्वारा समय-समय पर सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहे हैं। इसी कडी में समाज के मार्गदर्शक रहे वरिष्ठ जनों को यह कार्यक्रम समर्पित है।

# वृक्षों को अपनी संतान मानकर देखभाल करें : एडीजे नीरज भामू

**सांभरझील,** (निसं)। एडीजे नीरज भामू ने कहा कि गो ग्रीन अभियान पूर्णतया सफल तभी होगा जब हम पौधारोपण करने के बाद उनको संतान मानकर देखभाल करें।

गो ग्रीन अभियान के तहत दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय में पौधारोपण के दौरान एडीजे अरविन्द जांगिड, एसीजेएम ऋचा कौशिक, मुंसिफ मजिस्ट्रेट जयश्री लमोरिया ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हरियाली को बढावा देना जरूरी है ताकि वातावरण में ऑक्सीजन का लेवल बढ सके। न्यायिक अधिकारियों ने कार्यक्रम में मौजूद सभी को 5 पेड लगाये जाने का संकल्प दिलाया। पुलिस उपाधीक्षक सारिका खंडेलवाल, तहसीलदार कृष्णा शर्मा ने उपस्थित विद्यार्थियों और अभिभावकों, कर्मचारियों को वृक्षों की महत्ता समझाई। इस मौके पर न्यायिक अधिकारियों ने जुलाई से प्रभावी तीनों कानूनों की जानकारी दी। प्रधानाचार्य टीकमचन्द मालाकार ने खेजडी के पेड़ को बचाने के लोगों के बलिदान के बारे में बताया, उन्होंने सभी अभिभावकों को भी संदेश दिया कि वह भी अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से पौधारोपण कर अभियान को सफल बनाने की अपेक्षा की। इस दौरान विद्यालय परिसर में 500 पौधे लगाए गए। 600 विद्यार्थियों को एक-एक पौधा देकर अपने परिजनों की उपस्थिति में घर पर लगाने का संकल्प दिलाया गया।

गो ग्रीन अभियान के तहत एडीजे अरविन्द जांगिड़, एसीजेएम ऋचा कौशिक, मुंसिफ मजिस्ट्रेट जयश्री लमोरिया आदि ने पौधारोपण किया।

- 3 हजार पौधारोपण का रखा लक्ष्य, पहले रोज लगाए 500 पौधे

सभी सरकारी विद्यालयों में करंज, शीशम, जामुन, अनार, देशी बबूल, पापडी, बोगन बेलिया, बील पत्र व विभिन्न किस्म के लगभग 3250 पौधों के रोपण का लक्ष्य रखा गया। अधिशाषी अधिकारी शिकेश कांकरिया, गोपाल सिंह पंवार ने वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत सांभर, नरेना, जोबनेर, किशनगढ रेनवाल क्षेत्र में 22,000 पौधे लगाना प्रस्तावित होना बताया।

## अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में तिरंगे का प्रतिनिधित्व करेगी अनिता

**कोटपूतली,** (निसं)। क्षेत्र के ग्राम मोलाहेडा निवासी खिलाडी व पहलवान अनिता बाबू पुत्री ख्यालीराम गुर्जर जिन्होंने बेटों से भी दो कदम आगे निकलकर कोटपूतली का नाम देश के नक्शे पर रोशन किया है। अनिता कोटपूतली-बहरोड जिले की पहली ऐसी शख्सियत है जो किसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में तिरंगे झण्डे का प्रतिनिधित्व करेगी।

अनिता आगामी 9 से 12 जुलाई 2024 तक नेपाल की राजधानी काठमांडु में आयोजित होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय टारगेट बॉल प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेगी। हाल ही में उन्होंने राजस्थान के अलवर में 12 से 15 जून तक आयोजित हुई 11वीं राष्ट्रीय टारगेट बॉल प्रतियोगिता में राजस्थान की ओर से भाग लेते हुये सफलता अर्जित की। जिसके चलते उनका भारतीय टीम में चयन हुआ है। अनिता की सफलता की लिस्ट में यह एक और कामयाबी है। वे पूर्व में भी कुश्ती व टारगेट बॉल की कई प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुये पदक जीतकर अपने गांव, माता-पिता व क्षेत्र का नाम प्रदेश भर में रोशन कर चुकी है। अनिता की उपलब्धि से क्षेत्र में हर्ष की लहर है। उनकी सफलता पर विधायक हंसराज पटेल ने साफा पहनाकर बधाई देते हुये उज्जवल भविष्य की कामना की व आगामी प्रतियोगिता के लिये शुभकामनायें भी दी। उन्होंने कहा कि बेटियों को भी बेटों के समान ही प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ ने का अवसर मिले तो वे जीवन में सफलता के नये किर्तिमान स्थापित कर सकती है। इस मौके पर पूर्व सरपंच व भाजपा नेता जयराम सिंह गुर्जर, पूर्व चौयरमैन एड. महेन्द्र कुमार, भाजपा मंडल अध्यक्ष एड. रमेश रावत, पार्षद प्रतिनिधि रघुवीर गोयल, रामचन्द्र, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष कमल, दीपक कटारिया, पूर्व सरपंच नाहरसिंह रावत समेत अन्य मौजूद रहे।

## स्कूल में चारदीवारी, शौचालय एवं पेयजल की मांग

**चाकसू,** (निसं)। विधानसभा क्षेत्र की ग्राम पंचायत कोथून के ग्राम बृजपुरा के ग्रामीणों ने ग्रामपंच रामसहाय बैरवा के नेतृत्व में क्षेत्रीय विधायक रामावतार बैरवा से मुलाकात की।

इस दौरान ग्रामीणों ने ग्राम बृजपुरा में स्थित रा.उ.प्रा. विद्यालय की चारदीवारी निर्माण बालिका शौचालय एवं पेयजल व्यवस्था की मांग की। ग्रामीणों ने ज्ञापन के जरिए विधायक को अवगत कराया की विद्यालय में कक्षा 1 से 8 तक संचालित है,जिनमें मात्र कक्षा-कक्ष ही हैं वे भी अध्ययन कार्य हेतु अपर्याप्त है। इसके साथ विद्यालय में चारदीवारी, पेयजल व्यवस्था एवं बालिका शौचालय का अभाव है। जिससे बच्चों व शिक्षकों को परेशानी का सामना करना पडता है। सबसे ज्यादा परेशानी महिला शिक्षकों एवं छात्राओं को उठानी पड रही है, जिनके स्कूल में शौचालय ही नहीं है। जिम्मेदार स्कूलों में शौचालय निर्माण कराने में दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। विभागीय अधिकारी ग्राम प्रधानों की जिम्मेदार तय कर अपना पल्ला झाड लेते हैं। जिससे परेशानी खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। इस दौरान ग्राम बृजपुर के भगवान सहाय हंसराज राजेश राम सहाय रतनलाल जगदीश सोनू लेखराज सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे

रामसहाय बैरवा के नेतृत्व में ग्रामीणों ने क्षेत्रीय विधायक रामावतार बैरवा से मुलाकात की व मांगों का ज्ञापन सौंपा।

## सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट के विरोध में ग्रामीणों का धरना जारी

**कोटपूतली,** (निसं)। समीपवर्ती ग्राम चतुर्भुज में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट निर्माण के विरोध में ग्रामीणों का धरना शनिवार को लगातार 10वें दिन भी बदस्तुर जारी रहा। चतुर्भुज बचाओ आंदोलन के प्रतिनिधि मंडल ने विधायक हंसराज पटेल को सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट निर्माण कार्य को रुकवाने को लेकर ज्ञापन सौंपा।

- धरणार्थियों ने विधायक हंसराज पटेल को सौंपा ज्ञापन

साथ ही ट्रीटमेंट प्लांट को अन्यत्र लगाने का आग्रह भी किया। इस पर विधायक ने प्रतिनिधि मंडल को निर्माण कार्य को रुकवाने का आश्वासन दिया। रविवार को श्री ध्यान जी महाराज की तपोस्थली पर सद्बुद्धि यज्ञ का आयोजन भी किया जायेगा। इस दौरान चंद्रशेखर शर्मा, दिलीप यादव, सत्यनारायण शर्मा, विक्रम सैन, खेमचंद स्वामी, गिरधारी सैन, रोहित स्वामी, तुलसी स्वामी, सुरेंद्र सैन, गिरिराज भारती, गंगादीन आर्य, प्रताप सिंह यादव, किशनलाल स्वामी, देशराज उर्फ मसता यादव समेत अन्य मौजूद रहे।

ग्राम चतुर्भुज में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट निर्माण के विरोध में ग्रामीणों का धरना लगातार 10वें दिन भी जारी रहा।

## 'पदस्थापना एवं सम्मान समारोह' आयोजित

**श्रीमाधोपुर,** (निसं)। रोटरी क्लब श्रीमाधोपुर सनराइज़ का 'पदस्थापना एवं सम्मान समारोह' 6 जुलाई शनिवार को प्रात: 11 बजे से रोटरी भवन में आयोजित किया गया।

समारोह की मुख्य अतिथि रोटरी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर इलेक्ट 2025-26 कोटा से रोटेरियन प्रज्ञा मेहता ने नये प्रेसिडेंट मनोज कुमार चोटिया, सेक्रेटरी शांति लाल सोनी सहित नई कार्यकारिणी का पद स्थापन कराया गया। इसमें रोटरी क्लब श्रीमाधोपुर सनराइज़ के पूर्व अध्यक्ष दिलीप सिंह शेखावत इस सत्र बतौर असिस्टेंट गवर्नर शामिल रहे। इसमें "रुक्मणि देवी हरलालका समाज सेवा सम्मान" श्मशान विकास समिति (रजि.), हरिदास आश्रम के पास, श्रीमाधोपुर को दिया गया। भंवर सिंह शेखावत शैक्षिणक अवार्ड" के लिए श्रीमाधोपुर ब्लाक के कक्षा 10 के टोपर तन्मय सैनी को, "देवांश इंदोरा शैक्षिणक अवार्ड" कक्षा 12 में साइंस की टोपर खुश्बू सैनी को, कामर्स के टोपर वंश कुमावत को तथा आर्ट्स की टोपर रीना रायपुरिया को दिया गया।"चौधरी नाथूराम भामू प्रतिभा सम्मान" की 2023 की परीक्षा में आल इंडिया 187 वीं रैंक पाने वाले बिरजू गोपाल एवं 551वीं रैंक हासिल करने पर मोहन मंगावा का सम्मान किया गया।

7वीं ओपन ताइक्वांडो इंटरनेशनल चैंपियनशिप 2024 में गोल्ड मेडल प्राप्त करने पर कंचनपुर के छात्र चेतन गौरव मिश्रा को "आयुष मेमोरियल आउटस्टैंडिंग स्पोर्ट्स अवार्ड" से सम्मानित किया गया। "जी.एल. सैनी आउटस्टैंडिंग प्रेसिडेंट/सेक्रेटरी अवार्ड" से भी सम्मानित किया गया। इसी कडी में क्लब में स्थापित "ओ.पी. कयाल बेस्ट रोटेरियन" के लिए पास्ट प्रेसिडेंट रोटेरियन सागर मल शर्मा तथा क्लब की पब्लिक इमेज सुदृड करने के लिए सभी स्थानीय पत्रकारों का सम्मान किया गया।

## बीसीएमओ ने विभिन्न चिकित्सा संस्थानों का किया औचक निरीक्षण

**कोटपूतली,** (निसं)। बीसीएमओ डॉ. पूरण चन्द गुर्जर द्वारा शनिवार को आयुष्मान आरोग्य मन्दिर-आरोग्य परम धनम् प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र राजनौता, कारौली, पवाना अहीर, कल्याणपुरा कला, चिमनपुरा, बखराना व उप स्वास्थ्य केन्द्र गोपालपुरा आदि चिकित्सा संस्थानों का औचक निरीक्षण कर विभिन्न व्यवस्थाओं की जांच की गई।

उन्होंने उपस्थिति रजिस्टर, साफ-सफाई, दवा वितरण, वार्ड, ओपीडी, टीकाकारण कक्ष, स्टोर समेत अन्य व्यवस्थाओं की जांच कर पाई गई कमियों को शीघ्र दुरूस्त करने के निर्देश दिये।

बीसीएमओ ने कहा कि चिकित्सा संस्थानों में आने वाले मरीजों को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हो, उन्हें अच्छी व गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध करवाई जायें।

सभी अधिकारी-कर्मचारी चिकित्सा संस्थान पर निर्धारित समय पर मय आईडी कार्ड व गणवेश के उपस्थित होकर कार्य करें। बीसीएमओ ने स्वास्थ्य केन्द्रों में विभिन्न व्यवस्थाओं की जांच कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। वहीं निरीक्षण के दौरान अनुपस्थित मिले कार्मिकों को कारण बताओ नोटिस जारी कर उनसे जवाब मांगा गया है।

उन्होंने स्वास्थ्यकर्मियों को आमजन की आभा आईडी बनाने, आयुष्मान स्वास्थ्य कार्ड का वितरण करने, मौसमी बीमारियों के प्रति सतर्कता बरतने के निर्देश देते हुये बारिश के मौसम में चिकित्सा संस्थानों की छतों की सफाई किये जाने के निर्देश दिये। साथ ही अधिक से अधिक वृक्षारोपण किये जाने की बात भी कही।

बीसीएमओ डॉ. पूरण चन्द गुर्जर द्वारा विभिन्न चिकित्सा संस्थानों का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं जांची।

- निरीक्षण में मिली कमियों को पूरा करने के निर्देश दिये

## मंत्री संजय शर्मा ने वन क्षेत्रों का निरीक्षण किया

**अलवर,** (निसं)। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने शनिवार को अलवर शहर के आसपास के वन क्षेत्र तोप वाले हनुमान के पास मटिया कुंड, मांच का तिराहा के पास निदानी बांध, भूरासिद्ध के आसपास वन क्षेत्रा, प्रतापबंध से बाला किला तक के वन क्षेत्र एवं कटी घाटी के पास नगर वन का निरीक्षण किया।

वन मंत्री शर्मा ने मटिया कुंड व निदानी बांध का निरीक्षण कर निर्देश दिये कि इनका रखरखाव सुव्यवस्थित रूप से रखे एवं आवश्यकतानुसार इनकी मरम्मत आदि का कार्य करावे।

उन्होंने कटीघाटी के पास नगर वन का निरीक्षण कर निर्देश दिये कि नगर वन में कराए जाने वाले निर्माण कार्य को इस तरह से कराया जाए जो एनवायरमेंट फ्रेंडली हो तथा इसको सुन्दर स्वरूप दिया जाए ताकि लोगों को इसका लाभ मिल सके। उन्होंने नगर वन में महिलाओं द्वारा एक हजार पौधे लगाए जाने हेतु खड्डे खुदवाने के निर्देश दिये। उन्होंने भूरासिद्ध के आसपास वन क्षेत्रा का निरीक्षण कर निर्देश दिये कि जूलीफ्लोरा को हटाया जाए तथा यहां पर मातृवन विकसित करने की दिशा में कार्य करें। साथ ही भूरासिद्ध क्षेत्र में एक हजार पौधे लगाने के निर्देश दिये। उन्होंने प्रतापबंध से बालाकिला का निरीक्षण कर एक हजार पौधे ट्री गार्ड सहित लगाए जावे। उन्होंने बाबू शोभाराम का निरीक्षण कर 20 जुलाई को आयोजित होने वाले जिला स्तरीय वन महोत्सव तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने निर्देश दिये कि वन महोत्सव के तहत परिसर में 2 हजार पौधे लगाए जाएंगे इसकी सभी आवश्यक तैयारी पूर्ण कर लेवे। इस दौरान डीएफओ अलवर राजेन्द्र कुमार हुड्डा सहित संबंधित अधिकारी मौजूद रहे। इसके उपरान्त मंत्री शर्मा ने चिनार स्कूल में पहुंचकर 41 पौधे लगाए। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा संचालित 'एक पेड मां के नाम अभियान के तहत अपनी मां के नाम का एक पौधा लगावे तथा उसका रखरखाव भी करें। उन्होंने बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि बच्चे देश का भविष्य है। कडी मेहनत व सच्ची लग्न के साथ कोई भी मुकाम हासिल किया जा सकता है।

- 20 जुलाई को होने वाले जिला स्तरीय वन महोत्सव की तैयारियों का जायजा लिया

## सार-समाचार

### 111 कुंडात्मक महायज्ञ का शुभारंभ

**बौंली-बामनवास,** (निसं)। क्षेत्र के मित्रपुरा तहसील के घाटा नैनवाडी गांव की पहाडी पर स्थित श्री देवनारायण मंदिर के प्रांगण में शनिवार को प्रात: 9 बजे 13सौ भव्य कलश यात्रा के साथ ही नव दिवसीय 111 कुंडात्मक श्री देवनारायण महायज्ञ एवं मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह का शुभारंभ हो गया। महामंत्री रतिराम डोई व राम सिंह गुर्जर ने बताया कि यह महायज्ञ श्री बालकानंद महाराज हरभांवता आश्रम के संयोजन में किया जा रहा है। महायज्ञ के दौरान रविवार 7 जुलाई से विधानुसार चलकर 15 जुलाई को वेद स्तुति, नित्यार्चन, हवन, पूर्णाहुति, महाआरती व संत, ब्राह्मणों की विदाई एवं महाप्रसादी सामूहिक भंडारे के साथ संपूर्ण होगा। यज्ञ के दौरान दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक कथावाचक संत श्री राम झूलन दास महाराज द्वारा कथा का वाचन किया जाएगा। यज्ञ के दौरान प्रतिदिन खुला भंडारा चलेगा। महायज्ञ में अनेको आश्रमों के संत भाग लेकर प्रवचन करेंगे। यज्ञ संजय महाराज दमन दीव स्वर्ण पदक विजेता यज्ञाचार्य के सानिध्य में होगा।

### प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

**चौमूं/कालाडेरा,** (निसं)। कस्बे में स्थित रवीन्द्र उच्च माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। समारोह में उच्च माध्यमिक विज्ञान वर्ग में यशोधर शर्मा 90.20 प्रतिशत, गणित वर्ग इकरार खान 86.40 प्रतिशत, कृषि विज्ञान वर्ग मनिषा कंवर शेखावत 88 प्रतिशत, कला वर्ग में रागिनी कुमारी 82.40प्रतिशत, माध्यमिक परीक्षा में अभिषेक यादव 93.50 प्रतिशत ने अंक प्राप्त किये। इन सभी प्रतिभावान छात्र छात्राओं को राजस्थानी पंरपरा के अनुसार साफ़ा बंधवाकर प्रतिक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। संस्थाप्रधान नगेन्द्र सिंह शेखावत ने आगुंतकों का स्वागत सत्कार किया। इस दौरान भगवान सहाय शर्मा, (अध्यक्ष ब्राह्मण समाज) सत्यनारायण बालाणी, डॉ. रामगोपाल शर्मा, बाबूलाल टेलर (राष्ट्रपति पुरस्कृत शिक्षक) रामावतार सैन (राज्यपाल पुरस्कृत शिक्षक) , यासीन तेली, गिरधारी लाल शर्मा, सुरेश सैन, विक्रम सिंह, राधेश्याम छीपा, भगवान सहाय, रामलाल यादव, सीताराम मिश्रा, कालूराम यादव, महेन्द्र सिंह, सुरेश सालोदिया, अम्बिका प्रसाद बालाणी, गोवर्धन टेलर, सहीत गणमान्य लोगों व विद्यालय स्टाफ उपस्थित था।

### शादी के 17 साल बाद मिला मातृत्व सुख

**निवाई,** (निसं)। राजकीय सामुदायिक चिकित्सालय में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिता शर्मा के नेतृत्व में चिकित्सकीय टीम ने एक प्रसूता का जटिल ऑपरेशन कर एक बच्ची का सकुशल जन्म करवाया है। अस्पताल प्रभारी डॉ. केके विजय ने बताया कि गुलाब पत्नि सुरेश मीणा निवासी रूपवास को शनिवार की सुबह करीब 9 बजे डिलेवरी के लिए भर्ती करवाया था। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिता शर्मा ने बताया कि शादी के 17 वर्ष बाद गर्भवती हुई थी। महिला की बच्चेदानी का मुंह बंद था और गर्भ में पल रहे शिशु की गर्दन नाल में फंसी हुई थी। जिसका ऑपरेशन करना एक चुनौती था। ऑपरेशन को चुनौती मानते हुए स्वीकार किया और चिकित्सकों की टीम के साथ चर्चा कर ऑपरेशन करने का निर्णय लिया। टीम में स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अनिता शर्मा, एमडी एनिस्थिसिया डॉ. अमित गोयल, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. राजेश जैन व डॉ. योगेन्द्रसिंह शेखावत, मेल नर्स सुखलाल बैरवा, कजोडमल वर्मा, अनिता व कृष्णा, रामजीलाल व चन्द्रप्रकाश सहित शामिल चिकित्साकर्मियों ने करीब दोपहर 12:30 बजे सिजेरियन डिलेवरी से बच्ची का जन्म करवाया। सफल ऑपरेशन के बाद जच्चा व बच्चा पूरी तरह स्वस्थ है। ऑपरेशन के बाद हुए बच्ची के जन्म पर परिवार में खुशी की लहर दौड गई। इस दौरान परिजनों ने डॉ. अनिता शर्मा सहित चिकित्सकों की टीम का आभार व्यक्त किया है।

### 10 हजार का ईनामी बदमाश गिरफ्तार

पावटा, (निसं)। प्रागपुरा थाना पुलिस ने शनिवार को कार्रवाई कर बंदूक की नोक पर जबरन अपरहण कर जान से मारने की धमकी व डरा धमकाकर एक बलात्कार के आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए महानिरीक्षक जयपुर रेंज जयपुर की ओर से 10 हजार का टॉप 10 ईनाम भी घोषित किया हुआ था। अपरण, जान से मारने की धमकी, बलात्कार मामले में आरोपी लंबे समय से फरार चल रहा था। कोटपुतली बहरोड जिला पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा ने बताया कि जिले मे पेंडिंग प्रकरणों के त्वरित निस्तारण के लिए अपराधियों को डिटेन कर पूछताछ के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

## संक्षिप्त

### विधायक पटेल ने सुनी शिकायतें

**कोटपूतली,** (निसं)। क्षेत्रीय विधायक हंसराज पटेल ने राजमार्ग की सर्विस लेन स्थित डाक बंगला परिसर में प्रत्येक शनिवार की भांति नियमित साप्ताहिक जनसुनवाई करते हुये आमजन की शिकायतें सुनी। साथ ही बारिश के मौसम में जल भराव, बिजली, पानी, सडक, रास्ते के विवादों समेत विभिन्न अभाव अभियोगों का मौके पर ही निस्तारण किया। विधायक ने सम्बंधित अधिकारियों को दूरभाष के द्वारा अवगत करवाया कि आमजन से जुडी किसी भी शिकायत का प्राथमिकता के साथ निस्तारण करें। साथ ही केन्द्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने का प्रयास करें। वहीं उन्होंने पावटा पंचायत समिति में भी नियमित जनसुनवाई की। विधायक को ग्राम चतुर्भुज से आये ग्रामीणों ने ज्ञापन सौंपा। इस दौरान विधायक प्रतिनिधि पंकज पटेल, पूर्व सरपंच जयराम सिंह गुर्जर, पूर्व चौयरमैन एड. महेन्द्र कुमार सैनी, पूर्व नगर मंडल अध्यक्ष रघुवीर गोयल, नगर संयोजक अरूण सैनी, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष कमल सैनी, पार्षद प्रतिनिधि दीपक कटारिया, धर्मसिंह शेखावत, कमल कसाना समेत अन्य मौजूद रहे।

### सांसद राव राजेंद्र को तुलसी का पौधा सौंपा

**पावटा,** (निसं)। जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेंद्र सिंह द्वारा एक पेड मां के नाम अभियान के तहत घर-घर पौधारोपण की शुरुआत की। विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता पवन शर्मा जवानपुरा के द्वारा पिछले 4 साल से घर-घर पौधा अभियान बरसात के महीने में चलाया जाता है। भाजपा नेता पवन शर्मा जवानपुरा ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा शुरू किये गए देशव्यापी अभियान एक पेड माँ के नाम के तहत-देशभर में मां के नाम पर पौधारोपण का कार्य किया जा रहा है। क्षेत्र के लोगों और कार्यकर्ताओं से भी अपील है कि वे एक पौधा माँ के नाम पर लगाकर देश को समर्पित करें। एक पेड मां के नाम अभियान के तहत पवन शर्मा ने सांसद राव राजेंद्र को तुलसी का पौधा सौंपा। इस मौके पर भाजपा प्रवक्ता सुभाष जोशी, युवा नेता अनिल महर्षि, मधुर महेश्वरी, कृष्ण सिंह सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

### विधायक ने वर्षा क्षेत्रों का दौरा किया

**निवाई,** (निसं)। विधायक रामसहाय वर्मा ने भारी बारिश से उपजे हालातों का जायजा लेते हुए उपखण्ड पीपलू के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचकर लोगों से चर्चा की। विधायक रामसहाय वर्मा ने उपखण्ड कार्यालय, जीएसएस पीपलू, पंचायत समिति कार्यालय, नाथडी रोड स्थित पुलिया का जायजा लेकर अधिकारियों से चर्चा की। इस अवसर पर भाजपा नेता रामप्रसाद शर्मा सहित कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

### छात्राओं को पाठ्य सामग्री वितरित

**सांभरझील,** (निसं)। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन एवं बालिकाओं के शिक्षा के प्रति रुझान के लिए भगवती प्रसाद, रामवतार, गजेंद्र कुमार, सुरेंद्र कुमार ने 150 किट वितरण किए। इस अवसर पर बालिकाओं को से कहा कि जीवन में अवसर सभी को प्राप्त होते हैं। हमें अवसर को पहचान कर जीवन को सफल बनाना चाहिए। उप प्रधानाचार्य रामेश्वर लाल मीणा ने भामाशाहों को दुपट्टा, स्मृति चिन्ह और शाकंभरी माता की तस्वीर भेंट कर आभार जताया।

### मजिस्ट्रेट एवं सहायक मजिस्ट्रेट नियुक्त

**अलवर,** (निसं)। जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट आशीष गुप्ता ने 14 से 21 जुलाई तक आयोजित होने वाले श्री जगन्नाथ महाराज मेले में कानून एवं शांति व्यवस्था बनाए रखने हेतु उपखण्ड अधिकारी अलवर प्रतीक जुईकर को मेला मजिस्ट्रेट एवं कार्यपालक मजिस्ट्रेट एवं तहसीलदार अलवर तनु शर्मा को सहायक मेला मजिस्ट्रेट नियुक्त किया है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि सम्पूर्ण रथ यात्रा एवं मेला क्षेत्रा में कानून एवं शांति व्यवस्था बनाये रखे।

### गौरी शंकर प्रदेश महासचिव नियुक्त

**कोटपूतली,** (निसं)। राष्ट्रीय नाई महासभा राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष अशोक सरना ने राष्ट्रीय अध्यक्ष आजाद गाँधी के निर्देशानुसार ग्राम गोरधनपुरा निवासी संगठन के प्रदेश सचिव गौरी शंकर सैन को पदौन्नत कर प्रदेश महासचिव नियुक्त किया है।

# मालपुरा में बारिश से तबाही, मंत्री ने बाढ़ पीड़ितों के दर्द जाने

**मालपुरा,** (निसं)। गुरूवार की मध्य रात्री से शुक्रवार की शाम तक मालपुरा में हुई मुसलाधार बरसात ने मालपुरा में तबाही का मंजर मचा दिया। क्षेत्र में तबाही के मंजर व बाढ के हालातों का जायजा लेने पहुंचे केबिनेट मंत्री व क्षेत्रिय विधायक कन्हैयालाल चौधरी ने दो दर्जन से अधिक गांव-ढाणियों मे पहुंच बाढ त्रास्दी से पीडित लोगों से मिल उन्हे हर सम्भव मदद व राहत पहुंचाने का विश्वास दिलाते हुये उनके आंसू पोंछ उनके दुख दर्द में हमेशा तैयार रहने का ढाढस बंधाया।

मंत्री ने बाढ से टूटे मकानों व गांवों के सम्पर्क रास्तों सहित पानी के साथ बह जाने वाले किसानों के उन खेतों का भी जायजा लिया। जहां किसानों को करोडों रूपयों का आर्थिक नुकसान हुआ। जिला कलेक्टर सौम्या झां ने लावा सहित एक दर्जन गांवों का दौरा कर प्रशासनिक टीम के साथ बाढ के हालातों का जायजा लिया। मंत्री के साथ मौजूद जनप्रतिनिधियों व गांवों के प्रबुद्धजनों ने किसानों की व ग्रामीणों की पीडा व बर्बादी की कहानी फोटो विडियो के साथ मंत्री के सामने रखते हुये राज्य सरकार से बाढ पिडित परिवारों को आर्थिक सहायता दिलवाने की मांग की।

केबिनेट मंत्री व क्षेत्रिय विधायक कन्हैयालाल चौधरी ने दो दर्जन से अधिक गांव-ढाणियों में पहुंच बाढ त्रास्दी से पीड़ित लोगों से मिल हर सम्भव मदद व राहत पहुंचाने का विश्वास दिलाया।

- 50 से अधिक गांव-ढाणी दूसरे दिन भी डूबे रहे अंधेरे में

जिस पर केबिनेट मंत्री ने मौके पर मौजूद कार्यवाहक एसडीएम कपिल शर्मा, तहसीलदार राहुल पारीक सहित प्रशासनिक अधिकारियों को बाढ त्रास्दी का जायजा लेते हुये नुकसान की रिपोर्ट तैयार करने के मौके पर ही निर्देश दिये।

डीआर छोगालाल गुर्जर ने बताया कि भीपुर गांव में पांच दर्जन से अधिक मकान धराशाही हो गये तो कई मकानों में रखी सरसों व अनाज की बोरियां पानी के बहाव में बह जाने से करोडों रूपयों का नुकसान हुआ। नागफणी व हालोलाव, रामसागर बांध आदि के टूट जाने के बावजूद प्रशासन द्वारा त्वरित बचाव कार्य करने में शिथिलता बरती गई। रामसागर बांध की गहराई व अन्य कार्यो के लिये स्वीकृत 2 करोड 41 लाख रूपये के कार्यो का अधिकारियों द्वारा जायजा ले मॉनिटरिंग नहीं करने के चलते यह बांध कार्य पूर्ण होने से पहले ही टूट गया जो कि घटिया निर्माण की पोल खोल रहा है। बाढ के हालातो से तीन दर्जन से अधिक गांव ढाणियों की सडके व मुख्य रास्ते टूट जाने से आवागमन बंद हो गया। सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारी क्षेत्र में हुई भारी तबाही के बावजूद टूटे हुये रास्तों व क्षतिग्रस्त सडकों को तैयार करवाने में घोर लापरवाही बरतने की जानकारी सामने आई। एक दर्जन से अधिक गांवों के स्कूल व सरकारी भवन पानी से लबालब भर जाने से कभी भी टूटकर धराशाही होने का खतरा मंडरा रहा है। शनिवार की देर शाम तक उपखण्ड क्षेत्र के 50 से अधिक गांव ढाणी दूसरे दिन भी अंधेरे में डूबे रहे। लावा गांव में शनिवार को दोपहर बाद एक युवक का शव तैरता मिला। जिसे ग्रामीणों ने तालाब से बाहर निकाला तो उसकी पहचान रामजीलाल खारोल के रूप में की गई। वही लावा के नारायणपुरा गांव में बाढ से जनजीवन प्रभावित होने के बावजूद अधिकारियों द्वारा सुध नहीं लेने से गुस्सायें ग्रामीणों ने डिग्गी-सोहेला मार्ग पर जाम लगा दिया।

### विश्व जूनोसिस दिवस पर रेबीज टीकाकरण

**टोंक,** (निसं)। राजकीय बहुउद्दीय पशु चिकित्सालय टोंक द्वारा विश्व जूनोसिस दिवस पर इण्डियन इम्यूनोलोजिकल कम्पनी हैदराबाद के सहयोग से एक दिवसीय रेबीज टीकाकरण दिवस शिविर का आयोजन कर श्वान व बिल्ली जैसे जानवरों में रेबीज रोग की रोकथाम हेतु निशुल्क टीकाकरण किया गया। इस अवसर पर चिकित्सालय प्रांगण के अतिरिक्त श्वान प्रेमी स्वयं सेवक प्रज्ञा बुन्देल ने पूरे शहर में लगभग 113 निराश्रित श्वानो (कुत्तों) को रेबीज टीकाकरण किया गया। चिकित्सालय में इस अवसर पर एक विश्व एक स्वास्थ्य, जूनोसिस रोके'' कार्यक्रम पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। जो संयुक्त निदेशक डॉ. छोटू लाल बैरवा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। कार्यक्रम के तहत पशुधन सहायकों की टीम द्वारा टीकाकरण कार्य सम्पादित किया गया।

# पर्यावरण संरक्षण एवं शुद्धि के लिए वृक्षारोपण जरूरी : संजय शर्मा

**राजगढ,** (निसं)। राजस्थान सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण एवं शुद्धि के लिए वृक्षारोपण आज की नितांत आवश्यकता है। ग्लोबलाइजेशन के दौर में अधिक संख्या में पौधा रोपण कर मुख्यमंत्री के सपनों को साकार करें। शर्मा ने ये उदगार भोरंगी गौशाला धाम वन क्षेत्र माचाडी मार्ग राजगढ पर शनिवार प्रात: 10 बजे वृक्षारोपण के शुभारंभ पर व्यक्त किया।

इससे पूर्व वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा का गौशाला धाम के कार्यकर्ताओं ने माल्यार्पण एवं साफा बांधकर अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि राज्य में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 5 करोड़ पौधारोपण के लक्ष्य के लिए अधिक से अधिक संख्या में पौधारोपण कर वृक्ष बनने तक पौधे की सार संभाल करें। वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने बरगद एवं नीम का पौधा भी लगाया। उन्होंने एक पौधा अपनी मां के नाम लगाने का सभी कार्यकर्ताओं का आवाहन किया। इस अवसर पर उन्होंने राजगढ क्षेत्र में चौमुखी विकास के कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर अनेक संस्थाओं की ओर से समस्याओं के निराकरण को लेकर ज्ञापन सोपे।

वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने बरगद एवं नीम का पौधा लगाया।

- अनेक संस्थाओं की ओर से समस्याओं के निराकरण को लेकर ज्ञापन सौंपे

इस दौरान उपखंड अधिकारी सुश्री सीमा खेतान नगर पालिका अध्यक्ष सतीश दुहारिया,महंत प्रकाश दास, अवधूत दत्त आश्रम महंत एवं गौशाला से जुडे अमन भारती महाराज, आशीष शर्मा, विवेक दीक्षित, प्रशांत शर्मा, प्रेमनाथ धामाणी, राहुल दीक्षित, जनप्रतिनिधि समाजसेवी एवं नगर पालिका पार्षद मौजूद रहे।

# पौधारोपण कर शहीद मुकेश कुमार का जन्मदिवस मनाया

**शाहपुरा,** (निसं)। शाहपुरा उपखंड के ग्राम रामपुरा के कोबरा बटालियन शौर्य पदक से सम्मानित शहीद मुकेश कुमार बुनकर के पिता रामसहाय बुनकर, माता कमलादेवी, वीरांगना बीना देवी, आबकारी निरीक्षक पुत्र बृजेश बुनकर, भाई विकास जेवरिया, सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. पूरणमल बुनकर, बेटी मोनिका, ममता, ऋषिका सहित परिवारजनों और ग्रामीणों ने शहीद की जयंती पर प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर और 100 छायादार और फलदार पेड लगाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

शहीद मुकेश कुमार की जयंती पर 100 छायादार और फलदार पेड़ लगाकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

सामाजिक कार्यकर्ता डॉ पूरणमल बुनकर ने बताया कि शहीद मुकेश कुमार बुनकर का 2007 में सीआरपीएफ में चयन हुआ था। वर्ष 2009 में अरुणाचल प्रदेश में चुनावी ड्यूटी के दौरान बूथ केंद्र पर नक्सलीयों ने हमला कर पेटियां ले जाने का प्रयास किया। इस पर शहीद मुकेश कुमार बुनकर ने अपने साथियों के साथ नक्सलियों के छक्के छुडा दिए। उनकी जाबांजी को देखते हुए सीधा कोबरा बटालियन में चयन कर लिया गया।

वर्ष 2012 में झारखंड के रांची में 50 नक्सलियों ने बटालियन पर हमला कर दिया। नक्सलियों से मुठभेड में शहीद मुकेश के 4 गोलियां लगी फिर भी शहीद मुकेश ने चार नक्सलियों को मार गिराया। घायल मुकेश दिल्ली उपचार दौरान 8 दिन बाद 24 सितंबर 2012 को अमर हो गए। वीरांगना बीना देवी को 9 अप्रैल 2015 को दिल्ली में आयोजित शौर्य दिवस पर तात्कालीन गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने मरणोपरांत शौर्य वीरता मेडल से भी सम्मानित किया था। इस दौरान बाबूलाल जेवरिया, सीतादेवी, भानूप्रताप, अभिषेक नारवाल, आशु, दीपशिखा जेवरिया, मिष्टी आदि ने शहीद अमर रहे, भारत माता की जय, हिंदुस्तान जिंदाबाद के नारों से क्षेत्र गुंजायमान हो गया।

# प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

**कोटपूतली,** (निसं)। ग्राम पवाना अहीर स्थित मूलचंद प्रभूदयाल राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में सरपंच पूरणमल खटीक की अध्यक्षता व गिरधारी लाल यादव के मुख्य आतिथ्य में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ।

समारोह में अतिथियों द्वारा बोर्ड परीक्षा कक्षा 10 व 12 में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाली प्रतिभाओं का तिलक लगाकर, माल्यार्पण व साफा पहनाकर सम्मान किया गया। इस मौके पर नेहा वर्मा 88 प्रतिशत, सोनल मीणा 86 प्रतिशत, जेन्सी यादव 82 प्रतिशत, मंजू कुमावत 81 प्रतिशत, तनुज्या 78 प्रतिशत, संगम आर्य 78 प्रतिशत, सपना सैन 77 प्रतिशत, खुशबू मीणा 76 प्रतिशत, पुष्पेन्द्र यादव 76 प्रतिशत, भावेश आर्य ए ग्रेड को सम्मानित किया गया। जिसके बाद ग्राम पवाना अहीर में रैली द्वारा जागरूकता का संदेश देते हुए प्रोत्साहन दिया गया। जगह-जगह ग्रामीणों ने रैली का स्वागत अभिनन्दन किया और ठंडा पेय पिलाते हुए हौंसला बढाया। मुख्य अतिथि गिरधारी लाल यादव ने विद्यालय परिवार को बधाई देते हुए कहा कि जब से प्राचार्य महेश चंद यादव ने कार्य संभाला है उन्होंने अपनी कार्यशैली अनुरूप बेहतर प्रदर्शन किया है। प्राचार्य किसी भी प्रकार का अवकाश का उपभोग किये बिना समर्पित भाव से नियमित विद्यालय आकर स्वयं भी शिक्षण कार्य करते हैं। साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को मदद करने की घोषणा भी मुख्य अतिथि ने की। प्राचार्य महेश चंद यादव ने ग्रामीणों को भरोसा दिलाया कि गांव के समस्त लोगों का अच्छा सहयोग रहा है तथा इसी तरह अच्छा प्रदर्शन आगे भी जारी रहेगा। अतिथियों द्वारा अच्छी पढाई कर अनुशासित नागरिक बनने की प्रेरणा प्रदान की गई। प्रवक्ता रामकरण यादव ने बताया कि भामाशाह सेठ परिवार द्वारा इस बार विद्यालय में 35 लाख 65 हजार रुपये का भौतिक विकास कार्य कराया गया है जिसके परिणामस्वरूप अगले माह सरकार व विभाग द्वारा सेठ परिवार को राज्य स्तर पर भामाशाह सम्मान प्रदान किया जायेगा।

- प्रतिभाओं का तिलक लगा व माल्यार्पण कर सम्मान

# पावटा में दूसरे दिन भी सफाई व्यवस्था बे-पटरी, सफाईकर्मी हड़ताल पर

**पावटा,** (निसं)। पावटा प्रागपुरा नगरपालिका क्षेत्र में शनिवार को दूसरे दिन पूरा पालिका क्षेत्र गंदगी के ढेर में तब्दील हो गया। आलम यह रहा कि एनएच सहित पूरे मुख्य बाजारों, वार्डो, कॉलोनियों में कूडे के ढेर लग गए। इसके कारण संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा बढ गया है, वहीं मच्छरों का भी प्रकोप बढ गया है।

जानकारी के मुताबिक नगरपालिका के सफाई कर्मियों को दो महिने से वेतन न मिलने व पीएफ नंबर नहीं मिलने के कारण वे शुक्रवार सुबह से हडताल पर चले गए। जिसके चलते दो दिन से सफाईकर्मी हडताल पर है। जिस कारण पावटा प्रागपुरा पालिका क्षेत्र में सफाई व्यवस्था दो दिन से चरमराई हुई है। सफाई कर्मियों को वेतन न मिलना नगरपालिका की कार्यप्रणाली पर सवाल खडे करता है। शनिवार को एनएच 48 सहित पावटा प्रागपुरा पालिका क्षेत्र के विभिन्न स्थानों में गंदगी के ढेर लग गए। ऐसे में यहां पहुंचने वाले हजारों लोगों को गंदगी के चलते परेशानियां झेलनी पडीं। दुकानों के आगे सजे गंदगी के ढेर लोगों का मुंह चिढाते नजर आए। पावटा प्रागपुरा पालिका क्षेत्र में शुक्रवार सुबह से ही गंदगी के ढेर लगने शुरू हो गए। गंदगी के ये ढेर नगरपालिका की कार्यप्रणाली पर भी सवालिया निशान उठा रहे हैं। शनिवार को पालिका क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर सफाई कर्मियों के कचरा न उठाने के कारण गंदगी पसरी रही। नप के सफाई कर्मियों को समय पर वेतनमान न मिलने के कारण उन्होंने सफाई करने से मनाही कर दी। सफाई कर्मियों ने साफ कर दिया है कि जब तक वेतन नहीं मिलता तब तक सफाई व्यवस्था ऐसी ही रहेगी। यह पहली मर्तबा नहीं है जब सफाई कर्मी वेतन को तरसे हों। इससे पहले भी कई बार सफाईकर्मी वेतन की मांग उठा चुके हैं लेकिन ठेकेदार और नगरपालिका की नाकामी के चलते गरीब सफाई कर्मी परेशानियों से जूझ रहे हैं। मसलन शहर में गंदगी के ढेर लगना लाजमी है।

सफाईकर्मियों ने वेतन नहीं मिलने पर कार्य बहिष्कार कर विरोध जताया।

- गंदगी के ढेर में तब्दील हुए मुख्य बाजार

## सार-समाचार

### विधार्थियों को शिक्षण सामग्री बांटी

**खाटूश्यामजी,** (निसं)। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय खाटूश्यामजी में प्रधानाचार्य बाबूलाल जांगिड के सेवानिवृत्त होने पर अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के ओएसडी प्रमोद शर्मा के मुख्य आतिथ्य तथा खाटू ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष श्याम सुंदर पूनिया की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम विधार्थियों को संजय केजरीवाल द्वारा विधार्थियों को पाठ्य पुस्तकें व शिक्षण सामग्री प्रदान की गई। इसके साथ ही एक पौधा मां के नाम अभियान में प्रमोद शर्मा ने पीपल का पेड लगाकर कार्यक्रम का आगाज किया। इस दौरान शर्मा ने कहा कि प्रधानाचार्य जांगिड का कार्यकाल शानदार रहा। इन्होंने राजकीय सेवा में उत्कृष्ट कार्य किए लेकिन अब इन्हें सेवानिवृत्त के बाद भी समाज को सकारात्मक दिशा में ले जाने का कार्य निरंतर करते रहना चाहिए। वहीं सभी से वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित कर पौधा लगाने व उनकी जिम्मेदारी के साथ साथ संभाल करने का संकल्प लेना चाहिए। इस मौके पर प्रधानाचार्य अर्जुन लाल, श्रवण रूलाणिया, कालूराम शर्मा, शकुंतला शर्मा, संजना देवी, गणेशराम,हितांशु भारद्वाज, प्रियांशु भारद्वाज सहित अनेक लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन फूलाराम भादू ने किया।

### भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा आज

**राजगढ,** (निसं)। भगवान जगन्नाथ महाराज ऐतिहासिक रथयात्रा रविवार रात्रि को चौपड बाजार मंदिर से श्रद्धा एवं भक्ति के साथ रवाना होगी। घंटे घडियाल एवं बैंडबाजे के साथ भगवान जगन्नाथ जानकी संग विवाह रचाने हजारों श्रद्धालुओं की मौजूदगी में प्रस्थान करेंगे। दूल्हे बने भगवान जगन्नाथ की अनुपम छवि को देखने राजगढ मय पूर्वी राजस्थान के अनेक शहरों से श्रद्धालु दर्शन लाभ करने आते हैं। इंद्र विमान पर आरुढ दौरान रथ यात्रा के मार्ग में दर्जनों मंदिरों के पुजारी दूल्हे बने भगवान जगन्नाथ की आरती उतार कर अगवानी करते हैं। इस दौरान उपखंड प्रशासन नगर पालिका एवं पुलिस प्रशासन, मेला कमेटी की ओर से रथ यात्रा एवं मेले में आने वाले दर्शनार्थियों की सुरक्षा को लेकर प्रबंध किए गए हैं। बाल्मिक समाज के जगदीश सारसर के नेतृत्व में शक्ति एवं कला सबको रोमांचित करता है। समाजसेवी लोगों की ओर से रथ यात्रा में शीतल पानी के साथ मीठे शरबत एवं ठंडाई की व्यवस्था की जाती है। रथ यात्रा के मार्ग में निर्माण विभाग विद्युत निगम एवं अन्य विभागों की ओर से व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। रथ यात्रा के दौरान पेट के बल परिक्रमा देने वाले बालक एवं अन्य भक्तों का जज्बा देखते ही बनता है। मंदिर के महंत पूर्ण दास एवं मदन मोहन शास्त्री, रोहित शर्मा ने बताया कि 7 जुलाई को रथ यात्रा, 8 से 11 जुलाई तक गंगाबाग में मेला,12जुलाई को जगन्नाथ जानकी वरमाला महोत्सव, 13 व 14 जुलाई को गंगाबाग में भराभर का मेला आयोजित होगा। 15 जुलाई को रात्रि भगवान जगन्नाथ जानकी संग विवाह रचाकर गंगा बाग से चौपड बाजार को लौटेंगे।

### सड़क दुर्घटना में बाइक सवार की मौत

**टोंक,** (निसं)। सदर थाना क्षेत्र के तारण गांव से गुजर रही सवाईमाधोपुर नेशनल हाईवे पर शनिवार को अल सुबह एक बाइक से गाय टकराने से बाइक सवार की मौत हो गई। मौके पर पंहुची पुलिस प्रशासन की टीम ने गम्भीर हालत में पडे युवक को जिला सअादत अस्पताल टोंक में भर्ती कराया, जिसे डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव परिजनो को सुपुर्द कर दिया। प्राप्त सूत्रो के अनुसार मृतक का नाम हसंराज गुर्जर पुत्र प्रहलाद गुर्जर निवासी कुहाडा खुर्द तह. उनियारा जो अपनी बुआ को छोडने उसके ससुराल से बाइक से गया था तथा ग्राम तारण पर रोड लाईट खराब होने से बैठी गाय नहीं दिखी, जिससे वह गाय से जा टकराया और गम्भीर घायल हो गया, जिसे अस्पताल में डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। इसी प्रकार शुक्रवार की रात्रि को इसी मार्ग के आगे 7 किमी दूर ग्राम घांस के पास एक कार से दो गाय टकरा गई, टक्कर इतनी तेज लगी की गाय रैलिग से टकरा गई। जिससे दोनो गायों की मौत हो गई। पुलिस प्रशासन व ग्रामीणों की सहायता से गायों को केन से रोड से हटाया गया। इस दौरान कार चालक कार लेकर चला गया।

### डॉ. श्यामा प्रसाद की जयंती पर कार्यक्रम

**चाकसू,** (निसं)। विधानसभा चाकसू क्षेत्र में भारतीय जन संघ के संस्थापक और प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन का नेतृत्व जिला संयोजक सुमन कुमावत ने किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश अध्यक्ष रक्षा भंडारी और प्रदेश महामंत्री राधा भारद्वाज ने शिरकत की। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करके की गई। उपस्थित जनसमूह ने उनके राष्ट्रवादी विचारों और देश के प्रति उनके योगदान को याद किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने उनके जीवन और कार्यों पर प्रकाश डालते हुए, उनकी विचारधारा से प्रेरणा लेने का आव्हान किया। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा चलाए जा रहे एक पेड माँ के नाम अभियान के तहत वृक्षारोपण का आयोजन किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ मातृत्व का सम्मान करना है। चाकसू विधानसभा क्षेत्र में इस अभियान के तहत कई पौधे लगाए गए। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों और स्थानीय नागरिकों ने भी पौधारोपण में भाग लिया।

### अभिभावकों की बैठक आयोजित

**निवाई,** (निसं)। राजकीय कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. पानमल पहाडिया की अध्यक्षता में अभिभावकों की बैठक आयोजित हुई। प्राचार्य प्रो. पानमल पहाडिया ने बताया कि नियमित अध्ययनरत स्नातक, प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष छात्राओं को अस्थाई रूप से अगली कक्षा में क्रमोन्नत कर दिया गया है। सभी छात्राएं ई-मित्र में 19 जुलाई को ऑनलाईन शुल्क जमा करवा सकते हैं। बीए पार्ट द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की छात्राओं का सभी विषयों का अध्ययन कार्य प्रारंभ हो गया है।

# विभिन्न किस्म के 251 पौधे लगाये

**कोटपूतली,** (निसं)। तालुका विधिक सेवा समिति के अध्यक्ष व अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश समर्थ लाल मीणा के नेतृत्व में शनिवार को महात्मा गाँधी स्कूल कंवरपुरा में वृक्षारोपण किया गया। इस मौके पर विभिन्न किस्म के 251 पौधे लगाये गये। एडीजे समर्थ लाल मीणा ने कहा कि व्यक्ति को अपने जीवन में वृक्ष अवश्य लगाने चाहिये।

बेहतर स्वास्थ्य और शुद्ध हवा के लिए वृक्ष जरूरी होते हैं, उन्होंने हर वर्ष लगातार बढ रहे तापमान का जिक्र करते हुए कहा कि इसकी मुख्य वजह पेडों की अंधाधुंध कटाई है। बार एशोसिएशन अध्यक्ष एड. दयाराम गुर्जर ने कहा कि जैव विविधता एवं मानव विकास के लिए पेडों का होना अतिआवश्यक तथा पर्यावरण शुद्धि व वर्षा होने के लिए पेडों का होना बेहद जरूरी है। क्षेत्रीय वन अधिकारी रेंजर सतपाल ने पौधारोपण की विधि पर प्रकाश डाला। सरपंच जगदीश यादव व प्राचार्य महावीर यादव ने अतिथियों का माला व साफा पहनाकर स्वागत किया। पौधारोपण में नरेगा श्रमिकों, विद्यालय परिवार, बार एशोसिएशन के सदस्यों, वन विभाग टीम व ग्रामीणों ने सहयोग किया। विद्यालय परिवार व अभिभाषक संघ सदस्यों ने एक-एक पेड लगाकर उनके रख रखाव व संरक्षण की जिम्मेदारी ली। इस दौरान सुबेसिंह सिंह यादव, पूर्व सरपंच महेश यादव, पूर्व सरपंच संजय यादव, पूर्व अध्यक्ष अशोक यादव, सचिव हेमंत शर्मा, कोषाध्यक्ष ज्योति शर्मा, मुकेश यादव, अमीलाल यादव, रंजीत वर्मा, सत्यवीर पायला, अनिल कुमार आर्य, अविनाश यादव समेत अधिकारी-कर्मचारी, नरेगा श्रमिक, विद्यालय स्टॉफ व ग्रामीण मौजूद रहे।

- बेहतर स्वास्थ्य और शुद्ध हवा के लिए वृक्ष जरूरी : समर्थ लाल

मैं मानद कप्तान जीतू राय, एसएम, वीएसएम, ओलंपियन निशानेबाज, पद्मश्री प्राप्त, ध्यानचंद खेल रत्न और अर्जुन पुरस्कार प्राप्त। मैं आपको बताना चाहता हूं कि भारतीय सेना के साथ मेरा 17 साल छह महीने का साथ एक जुलाई 2024 को खत्म हो गया। - **जीतू राय**

**एशियाई खेलों के स्वर्ण पदक विजेता, अपने रिटायर की घोषणा करते हुए।**

# खेल जगत

**आज का खिलाड़ी**

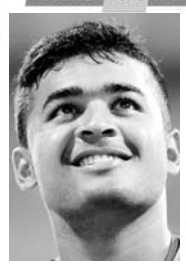

**रियान पराग**

**शुभमन गिल** की कप्तानी भारत की युवा क्रिकेट टीम जिम्बाब्वे के दौरे पर है। जहां दोनों टीमों के बीच 5 मैचों की टी20 सीरीज का आगाज हो चुका है। वहीं जिम्बाब्वे के खिलाफ पहले मैच में भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया है। इस दौरान तीन खिलाडियों ने भारत के लिए डेब्यू किया है। इसमें रियान पराग, ध्रुव जुरेल और अभिषेक शर्मा का नाम शामिल है। बता दें कि, ये तीनों खिलाड़ी घरेलू क्रिकेट के साथ-साथ आईपीएल में भी शानदार प्रदर्शन कर चुके हैं। रियान पराग और अभिषेक शर्मा ने आईपीएल 2024 में धमाकेदार प्रदर्शन किया था।

**क्या आप जानते हैं ?...** जिम्बाब्वे के तातेन्द्रा तेबु ने मई 2004 में श्रीलंका के विरुद्ध अपनी टीम की कप्तानी करके सबसे कम उम्र का टैस्ट कप्तान बनने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

# जिम्बाब्वे के खिलाफ 116 रन नहीं बना सके वर्ल्ड चैम्पियन

## भारत पहले टी-20 मैच में 13 रन से हारा, रजा और चतारा को 3-3 विकेट

हरारे, 6 जुलाई। टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के एक हफ्ते बाद भारत को जिम्बाब्वे से हार का सामना करना पड़ गया। टीम इंडिया को जिम्बाब्वे ने 5 मैचों की टी-20 सीरीज के पहले मुकाबले में 13 रन से हराया।

हरारे में भारतीय टीम 116 रन का टारगेट चेज नहीं कर सकी। टीम इंडिया के खिलाफ टी-20 इतिहास का सबसे छोटा स्कोर डिफेंड हुआ है। टीम के कप्तान सिकंदर रजा और तेंदाई चतारा ने 3-3 विकेट लिए। शनिवार को भारत ने टॉस जीतकर फील्डिंग चुनी। जिम्बाब्वे ने 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 115 रन बनाए। विकेटकीपर क्लाइव मदांदे ने नाबाद 29 रन बनाए, उन्होंने 10वें विकेट के लिए तेंदाई चतारा के साथ 25 रन की अहम पार्टनरशिप की थी। टीम इंडिया 19.5 ओवर में 102 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। कप्तान शुभमन गिल ने सबसे ज्यादा 31 रन बनाए। वॉशिंगटन सुंदर आखिर में 27 रन बनाकर आउट हुए। आवेश खान ने 16 रन का योगदान दिया। बाकी 8 कोई भी बैटर 7 से ज्यादा रन नहीं बना सका, हालांकि इस टीम में वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम का कोई खिलाड़ी शामिल नहीं रहा।

# भांवरी-ओलिवेटी की जोड़ी विम्बलडन से हुई बाहर

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारत के युकी भांबरी और फ्रांस के उनके जोड़ीदार अल्बानो ओलिवेटी जर्मनी के केविन क्राविएट्ज़ और टिम पुएट्ज़ से तीन सेटों में हारने के बाद विंबलडन टेनिस चैंपियनशिप के पुरुष युगल के दूसरे दौर से बाहर हो गए। भांबरी और ओलिवेटी की जोड़ी ने अच्छी शुरुआत की और पहला सेट जीतकर बढ़त बनाई लेकिन इसके बाद वह अपनी लय बरकरार नहीं रख पाए और आठवीं वरीयता प्राप्त जर्मन जोड़ी से 2 घंटे 5 मिनट तक चले मैच में6-4 4-6 3-6 से हार गए। भांबरी और ओलिवेटी ने पहले दौर में कजाखस्तान के अलेक्जेंडर बुब्लिक और अलेक्जेंडर शेवचेंको को हराया था। भारत की निगाहें अब रोहन बोपन्ना पर टिकी हैं जिन्होंने ऑस्ट्रेलिया के मैथ्यू एबडेन के साथ जोड़ी बनाई है। ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन और यहां दूसरी वरीयता प्राप्त यह जोड़ी दूसरे दौर में जर्मनी के हेंड्रिक जेबेंस और कॉन्स्टेंटिन फ्रैंटजेन से भिड़ेगी। ओलंपिक में जगह बना चुके सुमित नागल और एन श्रीराम पहले ही टूर्नामेंट से बाहर हो गए थे।

# इंडिया-पाकिस्तान मैच का क्रेज बढ़ा, 23 हजार टिकट बिके

एजबेस्टन, 6 जुलाई। भारत और पाकिस्तान मैच को लेकर फैंस की दीवानगी हर तरफ देखने को मिलती है। किसी भी खेल में इन देशों की टीमें जब आमने-सामने होती हैं तो मुकाबला काफी दिलचस्प हो जाता है। एक बार फिर फैंस को अपने चहेते खिलाड़ियों को खेलते हुए देखना का मौका मिलने वाला है। दरअसल, इंग्लैंड में वर्ल्ड चैंपियंस ऑफ लीजेंड्स 2024 खेली जा रही है। जिसमें कुल 6 टीमें हिस्सी ले रही हैं। शनिवार को भारतीय चैंपियन और पाकिस्तान चैंपियन के बीच हाईवोल्टेज मुकाबला होने जा रहा है। इस मैच में भारत के पूर्व क्रिकेटर युवराज सिंह, सुरेश रैना, हरभजन सिंह, आरपी सिंह, इरफान पठान जैसे खिलाड़ी मौजूद रहेंगे। वहीं पाकिस्तान की ओर से शाहिद अफरीदी, यूनिस खान, शोएब मलिक, मिस्बाह उल हक मैच का हिस्सा होंगे। एजबेस्टन क्रिकेट ग्राउंड पर भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले बहुप्रतीक्षित वर्ल्ड चैंपियनिप ऑफ लीजेंड्स मैच के लिए सभी 23000 सीटें बिक चुकी हैं। डब्ल्यूसीएल की आधिकारिक विज्ञप्त के अनुसार 3 जुलाई को एजबेस्टन में शुरू हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स 18 जुलाई तक चलेगी। इंडिया चैंपियंस के खिलाड़ी सुरेश रैना ने कहा कि, पाकिस्तान के साथ खेलना हमेशा सम्मान की बात होती है और अब आज का मैच कोई अपवाद नहीं है। मैदान पर हमारी टीम जोश से भरी हुई है और अपना बेस्ट देने के लिए तैयार है। हमें उम्मीद है कि हमारे प्रदर्शन से फैंस को गर्व महसूस होगा।

**भारत -** युवराज सिंह (कप्तान), हरभजन सिंह, सुरेश रैना, इरफान पठान, यूसुफ पठान, रॉबिन उथप्पा, अंबाती रायुडू, गुरकीरत मान, राहुल शर्मा, नमन ओझा, राहुल शुक्ला, आरपी सिंह, विनय कुमार, धवल कुलकर्णी, सौरभ तिवारी, अनुरीत सिंह, पवन नेगी।

# पुर्तगाल को हराकर फ्रांस सेमीफाइनल में पहुंचा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। फ्रांस ने पुर्तगाल को पेनल्टी शूटआउट में 5-3 से हराकर यूरोपीय फुटबाल चैंपियनशिप (यूरो 2024) के सेमीफाइनल में जगह बनाई और क्रिस्टियानो रोनाल्डो का खिताब के साथ टूर्नामेंट से विदाई लेने का सपना तोड़ दिया। इस मुकाबले को रोनाल्डो बनाम काइलियन एमबापे के बीच जंग के रूप में देखा जा रहा था लेकिन आखिर में फ्रांसीसी खिलाड़ी अपने आदर्श फुटबॉलर पर भारी पड़ा। दोनों टीम ने एक दूसरे को कड़ी चुनौती दी लेकिन अतिरिक्त समय तक भी कोई टीम गोल नहीं कर पाई। इसके बाद पेनल्टी शूटआउट का सहारा लिया गया जिसमें पुर्तगाल के जोआओ फेलिक्स का शॉट गोल पोस्ट से टकरा गया। इसके बाद थियो हर्नांडेज़ ने निर्णायक किक को गोल में बदलकर फ्रांस को सेमीफाइनल में पहुंचा दिया। फ्रांस को यूरो 2021 के अंतिम 16 में और विश्व कप 2022 के फाइनल में पेनल्टी शूटआउट में हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन यहां किस्मत उसके साथ थी। पुर्तगाल की इस हार से 39 वर्षीय रोनाल्डो ने यूरोपीय चैंपियनशिप से भी विदा ली। वह पहले ही घोषणा कर चुके थे कि वह आखिरी बार इस टूर्नामेंट में भाग ले रहे हैं। रोनाल्डो ने रिकॉर्ड छह बार यूरोपीय चैंपियनशिप में हिस्सा लिया। फ्रांस सेमीफाइनल में स्पेन से भिड़ेगा जिसने एक अन्य क्वार्टर फाइनल मैच में मेजबान जर्मनी को हराया।

# चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए पाक नहीं जाएंगी टीम इंडिया

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम के आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के 2025 संस्करण में हिस्सा लेने के लिए अगले साल पाकिस्तान जाने की संभावना नहीं है। एक रिपोर्ट के अनुसार, मेन इन ब्लू आठ-टीम आईसीसी इवेंट के लिए पाकिस्तान की यात्रा नहीं करेगा, जो 19 फरवरी से 9 मार्च तक खेला जाएगा। उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, भारत की पाकिस्तान यात्रा के बारे में कोई भी फैसला भारत सरकार द्वारा लिया जाएगा। सूत्र ने बताया कि हालांकि टूर्नामेंट के विवरण पर अभी तक चर्चा नहीं की गई है, लेकिन इसकी बहुत कम संभावना है कि भारतीय टीम पाकिस्तान की यात्रा करेगी। अंततः निर्णय भारत सरकार पर निर्भर है। हालाँकि, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) इस मुद्दे को इस महीने श्रीलंका में होने वाली आईसीसी बैठक में उठाने की योजना बना रहा है। आगे कहा गया है कि इस मामले पर सरकार का निर्णय अंतिम होगा, क्योंकि हमने अभी तक आंतरिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की है। चूंकि यह एक आईसीसी इवेंट है, इसलिए हमारे पास कोई भी एकतरफा निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। हालाँकि, अगली बैठक के दौरान अधिक विवरण सामने आ सकते हैं।

### नाम परिवर्तन

मैं सेना नम्बर 16014898एल हवलदार बनवारी लाल डागुर, 5 राजरिफ, ग्राम व पोस्ट जटनंगला, तहसील हिन्डौन सिटी, जिला करौली (राजस्थान) का मूल निवासी हूँ। मेरे सर्विस दस्तावेज में मेरे पिता जी का नाम प्रकाश (PARKASH) दर्ज है जो कि गलत है। मेरे पिता जी का सही नाम प्रकाश चंद (PRAKASH CHAND) है। अतः मेरे सर्विस दस्तावेज में मेरे पिताजी का सही नाम प्रकाश चंद (PRAKASH CHAND) दर्ज किया जावें।

### पहले मैच में हार के बाद राधा यादव का बयान, कहा-

# हमने गेंदबाजी में कुछ गलतियां की

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारतीय स्पिनर राधा यादव ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 12 रन की हार के बाद स्वीकार किया कि उनके गेंदबाजों ने कुछ गलतियां की जिसका टीम को खामियाजा भुगतना पड़ा।। तजमिन ब्रिट्स (81) और मारिजान कैप (57) ने भारतीय गेंदबाजों की एक नहीं चलने दी जिससे दक्षिण अफ्रीका चार विकेट पर 189 रन बनाने में सफल रहा।

इसके जवाब में भारतीय टीम चार विकेट पर 177 रन ही बना पाई। राधा ने मैच के बाद संवाददाताओं से कहा,"यह जानना महत्वपूर्ण था कि इस विकेट पर किस लेंथ और किस गति से गेंदबाजी करनी है। हमने गेंदबाजी इकाई के रूप में कुछ गलतियां की। हमने उन्हें 10 से 15 रन अधिक बनाने दिए। हमें उन्हें यॉर्कर लेंथ पर गेंद करनी चाहिए थी।" उन्होंने रविवार को होने वाले दूसरे मैच के बारे में कहा,"हमें अपनी रणनीति पर अमल करना होगा और जल्द ही विकेट के व्यवहार को समझना होगा। इससे हमारे लिए काम आसान हो जाएगा।" दक्षिण अफ्रीका को इससे पहले वनडे श्रृंखला और एकमात्र टेस्ट मैच में हार का सामना करना पड़ा था और उसकी स्टार बल्लेबाज तज़मिन ब्रिट्स ने कहा कि उनकी टीम को इस जीत की सख्त जरूरत थी जिससे उनका अगले साल बांग्लादेश में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए आत्मविश्वास बढ़ेगा।

ब्रिट्स ने कहा,"हमें इस तरह की जीत और टीम में आत्मविश्वास बढ़ाने की सख्त जरूरत है। इस तरह के आत्मविश्वास से हम न केवल सेमीफाइनल में जगह बना सकते हैं बल्कि विश्व कप भी जीत सकते हैं। इस मैच में जीत दर्ज करना शानदार रहा लेकिन अगले दो मैच जीतना और बेहतर होगा।

# ओलंपिक की तैयारी के लिए पेरिस डायमंड लीग में विश्व स्तरीय खिलाड़ियों के सामने होंगे साबले, जेना

नई दिल्ली, 6 जुलाई। भारत के शीर्ष स्टीपलचेस एथलीट अविनाश साबले और भाला फेंक खिलाड़ी किशोर जेना रविवार को एक दिवसीय डायमंड लीग के पेरिस चरण में अपनी ओलंपिक तैयारियों को बेहतर करने की उम्मीद करेंगे। मौजूदा ओलंपिक और विश्व चैंपियन भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने पिछले कुछ समय से परेशान कर रही जांघ की समस्या के कारण इसमें हिस्सा नहीं लेने का फैसला किया है।

साबले और जेना दोनों ही फॉर्म में नहीं हैं और उन्होंने ओलंपिक से पहले ज्यादा प्रतियोगिताओं में हिस्सा नहीं लिया है। पर अब वे पेरिस की परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की कोशिश करेंगे। ओलंपिक में एथलेटिक्स स्पर्धायें एक अगस्त से शुरू होंगी। 29 वर्षीय साबले ने अभी तक दो 3000 मीटर स्टीपलचेस स्पर्धाओं में हिस्सा लिया है। उन्होंने पोर्टलैंड में 8:21.85 और पंचकुला में 8:31.75 का समय निकाला था जबकि उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय 8:11.20 है।

एशियाई खेलों के मौजूदा स्वर्ण पदक विजेता ने कहा, "मैंने पिछले दो साल में गलतियां की हैं। मैं दो विश्व चैंपियनशिप (2022 और 2023) में पूरी तरह फिट था। लेकिन दोनों में अच्छा नहीं कर सका। मैं सुधार करना चाहता हूं और उम्मीद करता हूं कि यह मेरा सर्वश्रेष्ठ ओलंपिकहोगा।"

# अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की संगीत सेरेमनी में इन क्रिकेटर्स ने की शिरकत

मुंबई, 6 जुलाई। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट 12 जुलाई को शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं, लेकिन उनकी शादी से पहले की रस्में मार्च से ही चल रही हैं। अंबानी परिवार ने शुक्रवार को नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर में इस कपल के लिए एक भव्य संगीत समारोह का आयोजन किया। जिसमें बॉलीवुड सेलिब्रिटी के साथ क्रिकेटर्स ने भी शिरकत की। अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के संगीत समारोह में टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतने वाले सूर्युकमार यादव और हार्दिक पंड्या भी नजर आए। हालांकि, हार्दिक इस दौरान अपनी भाभी पंखुड़ी भाई क्रुणाल और सहयोगी खिलाड़ी ईशान किशन के साथ नजर आए।

# म्यांमा के खिलाफ मैत्री मैचों के लिए भारत की 23 सदस्यीय महिला टीम की घोषणा

नई दिल्ली, 6 जुलाई। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ ने शनिवार को म्यांमा के खिलाफ यांगून में नौ और 12 जुलाई को होने वाले दो मैत्री मैचों के लिए 23 सदस्यीय सीनियर महिला टीम की घोषणा की।

मुख्य कोच चाओबा देवी ने एआईएफएफ की विज्ञप्त में कहा, "टीम में सीनियर और जूनियर खिलाड़ियों का मिश्रण है। मैं टीम के संयोजन से संतुष्ट हूं। पिछले महीने उज्बेकिस्तान के साथ खेलने के बाद हमने 10 दिन अंदर अपना राष्ट्रीय शिविर शुरू कर दिया। "

उन्होंने कहा, "सभी खिलाड़ी फिट हैं जो अच्छी बात है। खिलाड़ी अपने क्लबों में ट्रेनिंग ले रही थीं। भारतीय महिला फुटबॉल टीम का पिछला दौरा उज्बेकिस्तान का जिसमें वह मेजबान टीम से एक मैच में 0-3 से हार गयी थी और दूसरे मैच में 0-0 से ड्रा खेला था।

**भारतीय टीम :** गोलकीपर: श्रेया हुड्डा, एलंगबाम पंथोई चानू, मैबाम लिनथोइंगम्बी देवी। डिफेंडर: लोइटोंगबाम आशालता देवी, हेमम शिल्की देवी, संजू, वांगखेम लिनथोइंगम्बी देवी, अरुणा बाग।

# प्रज्ञाननंदा और गुकेश टाईब्रेकर में हारे, कारुआना ने जीता खिताब

बुखारेस्ट, 6 जुलाई। भारत के आर प्रज्ञाननंदा और डी गुकेश को चार खिलाड़ियों के बीच खेले गए टाइब्रेकर में हार का सामना करना पड़ा जिसमें दुनिया के दूसरे नंबर के खिलाड़ी फैबियानो कारुआना ने तीनों रैपिड गेम जीतकर सुपरबेट क्लासिक में अपने खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया। कारुआना क्लासिकल प्रारूप में नीदरलैंड के अनीश गिरी से हार गए, जिससे मुकाबला रोचक बन गया क्योंकि गुकेश, प्रज्ञाननंदा और फ्रांस के अलीरेजा फिरौजा सभी उनकी बराबरी पर पहुंच गए।

प्रज्ञाननंदा मुख्य बाजी में अलीरेजा के सामने एक समय बेहद मुश्किल स्थिति में फंसे हुए थे। यदि फ्रांसीसी खिलाड़ी क्लासिकल दौर की इस बाजी को जीत जाता तो फिर वह कारुआना से आगे निकल जाते और विजेता का फैसला करने के लिए टाइब्रेकर की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन कारुआना हार गए, जबकि गुकेश और प्रज्ञाननंदा ने अपनी अपनी बाजियां ड्रॉ खेली जिससे विजेता का फैसला करने के लिए चार खिलाड़ियों के बीच टाइब्रेकर की स्थिति बन गई। कारुआना ने दिखाया कि आखिर उन्हें क्यों टाइब्रेकर का मास्टर कहा जाता है।

उन्होंने साबित कर दिया कि वे युवा पीढ़ी से बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। अमेरिका के इस खिलाड़ी ने टाइब्रेकर में अपने तीनों प्रतिद्वंदियों गुकेश, प्रज्ञाननंदा और अलीरेजा को हराकर 68500 अमेरिकी डॉलर का पहला पुरस्कार जीता।

इससे पहले प्रज्ञाननंदा टूर्नामेंट में अपनी पहली हार की तरफ बढ़ रहे थे लेकिन अलीरेजा की एक गलती का फायदा उठाकर वह बाजी ड्रा करने में सफल रहे। गुकेश ने वेस्ली सो के साथ अंक बांटकर टाइब्रेकर में खेलने का हक पाया था।

# माही के बर्थडे पर बनाया 100 फीट ऊंचा कट आउट

नई दिल्ली, 6 जुलाई। पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी के 43वें जन्मदिन के मौके पर फैंस की दिवानगी देखते ही बन रही है। अपने थला के जन्मदिन के मौके पर तेलुगु फैंस ने माही का 100 फीट कट आउट बनाया है। रांची में 7 जुलाई 1981को जन्में एमएस धोनी की फैन फॉलोइंग पूरी दुनिया भर में है। आईपीएल के समय हर मैदान धोनी के फैंस से भरे होते हैं। पहले अपनी कप्तानी में टी20 वर्ल्ड कप के अलावा वनडे वर्ल्ड कप और आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी देश के नाम की। इसके बाद आईपीएल में भी धोनी का जलवा आज भी बरकरार है। अपनी टीम चेन्नई सुपर किंग्स को पांच बार चैंपियन बनाया है।

# घरेलू क्रिकेट सत्र की तैयारियों के लिए आरसीए एडहॉक कमेटी की हुई बैठक

जयपुर 6 जुलाई। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक विधायक जयदीप बिहाणी की अध्यक्षता मे आज जयपुर मे राजस्थान क्रिकेट संघ एडहॉक कमेटी कि मीटिंग आयोजित हुई जिसमे सभी सदस्यो ने बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र से पुर्व राजस्थान के खिलाडियो को उचित तैयारियो व विभिन्न आयु वर्ग कि टीमो के सभावितो हेतु राज्य कि क्रिकेट प्रतियोगिताओ व अन्य गतिविधियो को जल्द से जल्द शुरू करने का निर्णय किया गया। जयदीप बिहाणी जी ने बताया की कमेटी ने आगामी दिनो मे क्रिकेट पिच व मैदान के रखरखाव की अहमियत को देखते हुए 3 दिवसीय मैदान व पिच क्युरेटर सेमीनार के आयोजन सहित राज्य स्तरीय अंडर 19 क्रिकेट प्रतियोगिता के आयोजन किये जाने पर सहमती प्रदान की। कमेटी ने आरसीए स्टाफ को आगामी क्रिकेट गतिविधियो की तैयारीयो हेतू निर्देश भी दिए। इस अवसर पर आरसीए एडहॉक कमेटी सयोजक जयदीप बिहाणी व सदस्य विमल शर्मा, रतन सिंह व धर्मवीर सिंह शेखावत मौजुद थे।

# वर्ल्ड जूनियर स्क्वैश में भारतीय टीम की कोच होंगी जयपुर की सुरभि मिश्रा

### अच्छी तैयारी, इस बार करेंगे पहले से अच्छा प्रदर्शन

जयपुर, 6 जुलाई। पूर्व अंतरराष्ट्रीय स्क्वैश खिलाड़ी और भारतीय स्क्वैश टीम की कोच सुरभि मिश्रा का कहना है कि भारतीय टीम अच्छी तैयारी के साथ वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए जा रही है। हम हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं और अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। गुलाबी नगर की सुरभि मिश्रा को ह्यूस्टन में 12 से 23 जुलाई तक आयोजित होने वाली डब्ल्यूएसएफ वर्ल्ड जूनियर स्क्वैश चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम का कोच नियुक्त किया है। सुरभि 8 जुलाई को भारतीय दल के साथ दिल्ली से ह्यूस्टन के लिए उड़ान भरेंगी।

पिछले दस साल से लगातार भारतीय टीम के साथ जुड़ी सुरभि ने मीडिया से बातचीत में कहा कि फेडरेशन की ओर से बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है। उन्होंने कहा कि भारतीय खिलाड़ी अच्छी तैयारी और पूरे फॉर्म में हैं। टीम की प्रैक्टिस और परफॉरमेंस को देखते हुए कह सकते हैं कि वर्ल्ड चैंपियनशिप में हम पहले के मुकाबले इस बार कई पदक जीतकर लौटेंगे। सुरभि ने कहा कि वर्ल्ड चैंपियनशिप में दुनिया की शीर्ष टीमें हिस्सा ले रही हैं।

वहां हर मुकाबला चुनौतीपूर्ण होगा। लेकिन हमें पदक जीतने के लिए इजिप्ट, मलेशिया, इंग्लैंड, पाकिस्तान और मेजबान अमेरिका जैसी मजबूती टीमों से टक्कर लेनी होगी। सुरभि की अगुवाई में ही भारतीय दल ने पिछले वर्ष चीन में हुए एशियाई खेलों में दो स्वर्ण, एक रजत और दो कांस्य सहित पांच पदक अपने नाम किए थे। एशियाई खेलों के इतिहास में भारत का स्क्वैश में यह अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

### 40 देशों की टीमें खेलेंगी

सुरभि ने बताया कि जूनियर वर्ल्ड कप में 40 देशों की टीमें हिस्सा लेंगी। इसमें 12 से 17 जुलाई तक व्यक्तिगत चैंपियनशिप के मुकाबले आयोजित किए जाएंगे, वहीं 18 से 23 जुलाई तक टीम चैंपियनशिप के मुकाबले होंगे। चैंपियनशिप में भारत

का 12 सदस्यीय दल हिस्सा लेगा। इसमें बॉयज और गर्ल्स कैटेगरी में छह-छह खिलाड़ी शामिल हैं।

### जयपुर का अवलोकित भी टीम में

वर्ल्ड चैंपियनशिप के लिए भारतीय दल में जयपुर के अवलोकित सिंह को भी शामिल किया गया है। सुरभि ने बताया कि अवलोकित को पिछले माह चेन्नई में हुई ट्रॉयल के आधार पर टीम में चुना गया है। अवलोकित वर्तमान में जूनियर रैंकिंग में नम्बर सात के खिलाड़ी हैं। अवलोकित ने स्क्वैश खेल की शुरुआत जयपुर में सवाई मानसिंह स्टेडियम स्थित राजस्थान स्क्वैश एकेडमी से की। वे पिछले कई साल से सुरभि मिश्रा से ही प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस दौरान अवलोकित ने राष्ट्रीय स्तर पर कई खिताब अपने नाम किए हैं।

### सुरभि खुद जीत चुकी हैं वर्ल्ड जूनियर में पदक

सुरभि मिश्रा खुद वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप में देश के लिए पदक जीत चुकी हैं। उन्होंने बताया कि 2009 में चेन्नई में हुई वर्ल्ड चैंपियनशिप में उन्होंने गर्ल्स टीम चैंपियनशिप में कांस्य पदक हासिल किया। यह इस टूर्नामेंट में देश का पहला पदक था। इसी चैंपियनशिप में दीपिका पल्लीकल ने व्यक्तिगत स्पर्धा में भी कांस्य पदक हासिल किया था। उन्होंने बताया कि भारत ने 2012 में कतर में बॉयज टीम चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता था। पिछले वर्ष आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न में हुई जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत की गर्ल्स टीम शीर्ष आठ में रही, वहीं 2023 में हुई बॉयज जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारत ने पांचवां स्थान हासिल किया था।

### भारतीय टीम

**बॉयज-** शौर्य बावा (दिल्ली), युवराज वाधवानी (मुम्बई), अयान वजीरअली (मुम्बई), अरिहन्त के. एस. (तमिलनाडु), अवलोकित सिंह (जयपुर), तवनीत सिंह मूंदड़ा (मध्य प्रदेश)।

**गर्ल्स-** अनाहत सिंह (दिल्ली), उन्नित त्रिपाठी (उत्तर प्रदेश), निरुपमा दुबे (महाराष्ट्र), शमीना रियाज (तमिलनाडु), टियाना परसरामपुरिया (महाराष्ट्र), सहर नैयर (चंडीगढ़)।

**कोच-** सुरभि मिश्रा और हरिंदर पाल सिंह संधू।

# वन रक्षक भर्ती परीक्षा पेपर लीक केस में 11 आरोपी गिरफ्तार

## पुलिस ने 2022 में हुई इस परीक्षा के फर्जीवाड़े का खुलासा कर दिया है

- **आरोपियों ने हरेक अभ्यर्थी से 8 लाख रू. लिये थे।**
- **आरोपी मोबाइल में प्रश्न पत्र लाए थे तथा अभ्यर्थियों को बोल-बोलकर जवाब लिखवाए गए थे।**
- **इन सभी अभ्यर्थियों का वन रक्षक पद पर चयन हो गया था।**

बांसवाड़ा, 6 जुलाई (निसं)। पुलिस ने वनरक्षक भर्ती परीक्षा-2022 में पेपर लीक मामले का खुलासा करते हुए 11 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। महानिरीक्षक पुलिस एस. परिमला, जिला पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाल के निर्देशन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. राजेश भारद्वाज, एसओजी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लाखन सिंह मीना एवं पुलिस उप अधीक्षक एसओजी बाबूलाल मुरारिया के नेतृत्व में टीम गठित की गयी थी।

जिला पुलिस अधीक्षक हर्षवर्धन अग्रवाल ने बताया कि डमी कैंडिडेट बिठाकर परीक्षा दिलाने के मामले की जाँच अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लीव रिजर्व रेंज धनफूल मीना कर रहे थे। जांच के दौरान प्रवीण पुत्र हीरालाल मालवीया, निवासी तिलक नगर प्रतापगढ़, हाल शास्त्री नगर हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा व सविता डोडियार पत्नी प्रवीण मालवीया निवासी तिलक नगर प्रतापगढ़, हाल शास्त्री नगर हाऊसिंग बोर्ड, बांसवाड़ा, को 28 जून को गिरफ्तार किया गया था। अनुसंधान के दौरान प्रवीण मालवीया व उसकी पत्नी सविता डोडियार ने बताया कि वनरक्षक भर्ती सूचना 2020 में निकली थी, जिसकी परीक्षा 13 नवंबर 2022 को दो पारियों में हो रही थी। सकन सिंह खड़िया ने परीक्षा के एक दिन पहले फोन कर बताया कि वनरक्षक भर्ती परीक्षा में बैठने वाले अभ्यर्थियों से बात कर 8 लाख रुपये प्रति कैंडिडेट की व्यवस्था कर सकते हो तो उनको बुला लो, कल की परीक्षा के पेपर लेकर आयेंगे।

इस पर मालवीया ने भीलकुआ निवासी छगन पारगी के माध्यम से सुक्राम पुत्र रमेश डामोर निवासी बगायचा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका बड़ोदिया, सुभाष पुत्र रमेश डिंडोर निवासी कोठारिया थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका टिमेड़ा, वीरसिंह पुत्र कन्हैयालाल कटारा निवासी नवागांव थाना कुशलगढ़, हाल अध्यापक राउमावि उलटन धरियावाद, शीला पत्नी ईश्वरलाल पणदा निवासी मगरदा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, निरमा पत्नी सुक्राम डामोर निवासी बकायचा थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, शिल्पा पत्नी भावचंद मईड़ा निवासी नागदा बड़ी थाना कुशलगढ़, हाल वनरक्षक रेंज डूंगरा, संगीता पुत्री पवन कुमार गरासिया निवासी रोहनिया रामसिंह थाना सज्जनगढ़, हाल वनरक्षक नाका कुशलगढ़, ईश्वरलाल पुत्र नाथु पणदा निवासी मगरदा थाना कुशलगढ़ को शास्त्री नगर किराये के मकान में बुलाया। तेरह नवंबर की सुबह हरीश उर्फ हीराराम पुत्र सरतनाराम सारण निवासी अरटवाव गुड़ामलानी बाड़मेर व अभिमन्यु सिंह पुत्र हिम्मत सिंह चौहान निवासी चिखला थाना कुआ जिला डूंगरपुर, हाल कनिष्ठ अभियंता शिक्षा विभाग मुख्य खंड शिक्षाधिकारी चिखली जिला डूंगरपुर दोनों घर आये और अपने मोबाइल में लाये परीक्षा का पेपर सभी अभ्यर्थियों को बोलकर हल करवाया जिससे सभी अभ्यर्थियों का वनरक्षक भर्ती 2022 में चयन हो गया। पुलिस ने सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

पुलिस टीम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. राजेश भारद्वाज, एसओजी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लाखन सिंह मीना, एसओजी पुलिस उप अधीक्षक बाबूलाल मुरारिया, सहायक उपनिरीक्षक अमरसिंह व चन्द्रवीर सिंह, एसओजी हैड कांस्टेबल संतोष कुमार, एसओजी कांस्टेबल लक्ष्मणलाल, एसओजी चालक कांस्टेबल अरविन्द कुमार, कांस्टेबल कैलाशचंद्र शामिल थे।



*लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला के दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार कोटा आगमन पर शहर भर में जगह-जगह उनका भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। बिड़ला के स्वागत के लिए शहर भर में स्वागत द्वार बनाए गये तथा स्वागत मंचों के जरिये पुष्प वर्षा भी की गई।*

# दूसरी बार लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद कोटा पहुँचे ओम बिड़ला का भव्य स्वागत

## हिंडोली से कोटा तक भव्य रोड शो, स्वागतद्वार बनाकर जगह-जगह शानदार स्वागत हुआ

- **रोड शो में शामिल लोगों ने ओम बिड़ला की तस्वीर वाली टी शर्ट पहन रखी थीं।**
- **भाजपा के स्थानीय नेताओं व कार्यकर्ताओं ने स्पीकर बिड़ला को 51 किलो का पुष्पहार पहनाया तथा साफा पहनाकर शाल ओढ़ाया।**
- **बिड़ला के साथ, प्रदेश सरकार के मंत्री मदन दिलावर, हीरालाल नागर तथा क्षेत्र में भाजपा विधायकों ने भी रोड शो में शिरकत की।**

जयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। लोकसभा में दूसरी बार अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार अपने लोकसभा क्षेत्र कोटा-बूंदी पहुंचने पर ओम बिड़ला का भाजपा कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। हैलिकॉप्टर से बूंदी के हिंडोली विधानसभा क्षेत्र पहुंचने के बाद हिंडोली से बूंदी तक पहले चरण का रोड शो हुआ।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला खुली जीप में भाजपा के स्थानीय नेताओं के आम जनता का अभिवादन करते हुए हिंडोली से बूंदी की तरफ रवाना हुए। उनके स्वागत में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं और आमजन की भीड़ उमड़ी, साथ में गाड़ियों का भी लंबा काफिला था। जगह-जगह उनका फूल बरसाकर और मालाएं पहनाकर स्वागत किया गया। बिड़ला के रोड शो का दूसरा चरण कोटा में हुआ। ओम बिड़ला लोकसभा में दूसरी बार अध्यक्ष बनने वाले राजस्थान के दूसरे नेता हैं। इससे पहले कांग्रेस के बलराम जाखड़ कांग्रेस की सरकार के वक्त लोकसभा के दो बार अध्यक्ष बने थे। दूसरी बार इस पद पर काबिज होने से ओम बिरला राजस्थान में भाजपा का बड़ा चेहरा बन कर उभरे हैं।

कोटा संवाददाता के अनुसार, कोटा शहर में बिड़ला के स्वागत के लिए प्रवेश द्वार लगाए गए। प्रवेश द्वार के दोनों तरफ़ से पन्नियों की बरसात और नगाड़ों से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला का भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं, पुरूषों ने सिर पर साफे बांधे हुए थे और कई लोगों ने ओम बिड़ला की तस्वीर छपी टीशर्ट पहन रखी थी। लोगों ने इस अवसर को एक भव्य उत्सव के रूप में मनाया। कोटा शहर में विभिन्न संस्थाओं, व्यापारियों, जनप्रतिनिधियों, भाजपा पदाधिकारियों ने लोकसभा अध्यक्ष का जोश के साथ स्वागत किया। जगह-जगह पर स्वागत द्वार व मंच बनाए गए और आतिशबाजी भी की गई।

कोटा प्रभारी मंत्री गौतम कुमार दक, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा, प्रदेश मंत्री अनुसुइया, शिक्षामंत्री मदन दिलावर, ऊर्जामंत्री हीरालाल नागर, कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा, लाडपुरा विधायक कल्पना देवी, पूर्व कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, रामगोपाल बैरवा सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने लोकसभाध्यक्ष को साफा, शॉल, 51 किलो का पुष्पहार एवं श्रीराम मंदिर का चिन्ह देकर उनका भव्य स्वागत किया।

## कश्मीर में दो...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

मुठभेड़ कुलगाम के मोदरगाम गांव में उस समय शुरू हुई जब सुरक्षा बलों की संयुक्त टीमें आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद इलाके में घेराबंदी और तलाश अभियान (कासो) चला रही थीं।

एक सुरक्षा अधिकारी ने कहा, जब सेना की संयुक्त टीम पर गोलीबारी शुरू हुई तो अभियान एक मुठभेड़ में बदल गया। शुरुआती गोलीबारी में सेना की एलीट यूनिट का एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल जवान को एक चिकित्सा सुविधा में ले जाया गया जहाँ उसकी मौत हो गई।

## केन्द्रीय बजट...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

विशेष सत्र आयोजित किया गया था। नए सांसदों ने शपथ ली और 27 जून को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित किया।

# मु.मंत्री भजनलाल ने जयपुर शहर के विभिन्न प्रोजैक्ट्स का निरीक्षण किया



*मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को हीरापुरा बस टर्मिनल (अजमेर रोड) पर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मु.मंत्री ने, मानसरोवर से अजमेर रोड तक मैट्रो विस्तार के निर्माण कार्यों का भी अवलोकन कर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये।*

- **मुख्यमंत्री ने हीरापुरा बस टर्मिनल तथा जयपुर मैट्रो फेज़ प्रथम-डी के निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया।**
- **सांगानेर में, मु.मंत्री ने 300 बेड की क्षमता वाले अस्पताल का निर्माण कार्य शीर्घ करने का निर्देश दिया।**
- **मु.मंत्री आर.यू.एच.एस. भी गए तथा स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया और वहाँ भर्ती मरीजों से भी बात की।**

जयपुर, 6 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आमजन के आवागमन एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का धरातल पर जायजा लेने के लिए शनिवार को जयपुर शहर के विभिन्न प्रोजेक्ट्स का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माण कार्यों एवं व्यवस्थाओं के संबंध में अधिकारियों से चर्चा की तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने सबसे पहले अजमेर रोड स्थित हीरापुरा बस टर्मिनल पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों से प्रोजेक्ट के संबंध में विस्तृत जानकारी ली। इस दौरान मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि यात्रियों के लिए पेयजल की उचित व्यवस्था, बैठने हेतु छायादार स्थान, सफाई व्यवस्था सहित विभिन्न मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए ताकि अगस्त माह से बसों का संचालन प्रारम्भ किया जा सके।

मुख्यमंत्री शर्मा ने जयपुर विकास प्राधिकरण एवं नगर निगम के अधिकारियों को मानसून में भारी बारिश से होने वाली समस्याओं से बचाव के लिए पूर्व में ही माकूल व्यवस्था करने के निर्देश दिए, जिससे आमजन को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। शर्मा ने मानसरोवर में जयपुर मेट्रो फेज 1-डी के तहत मानसरोवर से अजमेर रोड चौराहा तक मेट्रो विस्तार के प्रगतिरत निर्माण कार्य का अवलोकन किया।

इस दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि विकास कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए शीघ्र इस प्रोजेक्ट को पूर्ण किया जाए। उन्होंने नवनिर्मित हीरापुरा बस टर्मिनल तक मेट्रो सुविधा के विस्तार के संबंध में चर्चा की। साथ ही, मेट्रो के फेज-2 के लिए रूट निर्धारित करने तथा डीपीआर बनाने के लिए टेण्डर शीघ्र किए जाने के संबंध में निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सांगानेर में खुली जेल का निरीक्षण किया। इसके बाद उन्होंने 300 बेडेड अस्पताल बनाने के लिए जयपुर विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को एक सप्ताह में भूमि आवंटन की कार्यवाही पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस कार्य की शीघ्र डीपीआर तैयार करें, जिससे दीपावली से पहले निर्माण कार्य का शिलान्यास किया जा सके।

शर्मा इसके बाद राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंस (आरयूएचएस) पहुंचे। यहां उन्होंने मॉडर्न डायग्नोस्टिक सेंटर, आईसीयू कॉम्प्लेक्स, आई ओटी यूनिट का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को आरयूएचएस में चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर बनाने, चिकित्सकों की नियुक्ति करने, मरीजों के परिजनों के ठहरने की उचित व्यवस्था करने के संबंध में निर्देश दिए।

## राज्यपाल व विधानसभा...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

मीडिया हैण्डिल "एक्स" पर डाली गई एक पोस्ट में संविधान के एक प्रावधान का हवाला दिया, जिसमें कहा गया है कि कोई विधायक, सदन का विधिवत सदस्य बनने से पूर्व शपथ अथवा प्रक्रियानुसार पुष्टि के लिए राज्यपाल या उनकी तरफ से इस कार्य के लिए नियुक्त किए गए किसी व्यक्ति के समक्ष अपनी सहमति प्रकट करता है। उन्होंने स्पीकर द्वारा दिए अन्य नियमों के हवाले भी खारिज करते हुए लिखा कि "क्या कोई भी नियम संविधान से ऊपर हो सकता है?" लेकिन राज्यपाल ने जब शपथ दिलाने अथवा यह जिम्मेदारी किसी और को देने से इंकार कर दिया था, तब पिछले हफ्ते बनर्जी और सरकार विधानसभा भवन के बाहर धरने पर बैठ गए थे।

किन्तु, राज्यपाल ने आज सुबह ही एक फरमान जारी कर डेपुटी स्पीकर को शपथ दिलाने के लिए अधिकृत किया था। हालांकि, स्पीकर ने तब तक विधानसभा का एक विशेष सत्र आयोजित करने का आदेश दे चुके थे। जिसमें यह घोषणा की गई कि सदन की कार्यवाही का संचालन सिर्फ राज्यपाल की सहमति पर ही निर्भर नहीं हो सकता। स्पीकर बिमान बनर्जी ने राष्ट्रपति की मदद भी मांगी और राज्यपाल पर अहंकारपूर्ण बर्ताव का आरोप लगाया। गतिरोध तब और गहरा गया जब राज्यपाल ने उक्त दोनों विधायकों को शपथ ग्रहण के लिए अपने आवास पर आमंत्रित किया। स्पीकर व तृणमूल ने इस बात पर जोर दिया कि बोस को विधानसभा में आना चाहिए। बनर्जी ने कहा, "हम उनका व संविधान का सम्मान करते हैं, परन्तु वे हमें आदर नहीं दे रहे हैं। उन्हें विधानसभा में आना चाहिए और शपथ ग्रहण करना चाहिए अथवा प्राधिकार अध्यक्ष को प्रदान किया जाना चाहिए। हम यहाँ संवैधानिक तौर पर बैठे हुए हैं- हम निर्वाचित हैं, आपकी तरह मनोनीत पद पर नहीं है।" शुभेन्दु अधिकारी ने कहा, इस बीच भाजपा ने भी शपथ ग्रहण समारोह की आलोचना की है उसने दावा किया कि उन्हें विशेष सत्र के बारे में नहीं कहा गया था। "मेरे पास इस संबंध में सूचना नहीं थी और कोई नोटिस भी प्राप्त नहीं हुआ था। प्रत्येक राज्य में शिष्टाचार के तौर पर विपक्ष के नेता को बुलाया जाता है परन्तु यहाँ हमसे कोई चर्चा नहीं की गई।" अधिकारी, जो पूर्व में मु.मंत्री ममता बनर्जी के खास सहयोगी रह चुके हैं वो विसं. चुनावों से ठीक कुछ सप्ताह पूर्व भाजपा में शामिल हुए थे वो अब विपक्ष के नेता हैं।

संवैधानिक कानून के जानकार विशेषज्ञों का मत है कि बंगाल के राज्यपाल संवैधानिक रूप से गलत कदम उठा रहे हैं क्योंकि वे अनावश्यक रूप से सिर्फ संकट उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। पहली बात यह है कि उन्होंने शपथ ग्रहण कराने में विलम्ब किया जबकि दोनों विधायक 5 जून को ही चुनावों में जीत चुके थे और उसके बाद यह है कि वे विधायकों को उनके निवास पर शपथ ग्रहण करने के लिए बुला रहे थे जो कि नियमानुसार नहीं है। यह बहुत ही अजीब बात है कि राज्यपाल नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलवाने के लिए उपाध्यक्ष की नियुक्ति करते हैं और अध्यक्ष को नज़रअंदाज करते हैं विशेषज्ञों ने यह भी कहा कि यह सब झमेला समस्या का संकट उत्पन्न करने के लिए किया जा रहा है।

## तेलंगाना में रैवन्त रेड्डी ने ...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

उपस्थिति में कांग्रेस में शामिल होने के बाद, अब पार्टी के नेता व कार्यकर्ता धीरे ही सही परन्तु कांग्रेस में आ रहे हैं। बी.आर.एस. को जोर का झटका उस समय लगा जब शुक्रवार को विधान परिषद के छः एम.एल.सी. नेताओं ने एक प्रायवेट होटल में बैठक की और कांग्रेस में सम्मिलित होने का निर्णय किया। कांग्रेसी सूत्रों के हवाले से खबर है कि "मध्य रात्रि को लगभग 1 बजे ये नेतागण तेलंगाना कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष व मुख्यमंत्री ए.रेवन्त रेड्डी के आवास पर पहुंचे थे जो कुछ देर पूर्व ही नई दिल्ली से वापस आए थे, उनसे मिलकर इन नेताओं ने पार्टी में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की।"

रेवन्त रेड्डी ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया और सभी छः नेताओं को तेलंगाना की ए.आई.सी.सी. प्रभारी दीपा दास मुंशी, राज्य के राजस्व मंत्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी एवं पार्टी के अन्य नेताओं की उपस्थिति में पार्टी में शामिल कर लिया। बी.आर.एस. के छः विधायकों द्वारा दलबदल कर कांग्रेस में शामिल होने के बाद 40 सदस्यीय विधान परिषद में सत्ताधारी पार्टी की सदस्य संख्या बढ़कर अब 10 हो गई है जबकि इस विपरीत बी.आर.एस. के विधायकों की संख्या 25 से ङटकर 19 रह गई है। इसके अत्तिरिक्त, इसमें चार मनोनीत एम.एल.सी. हैं जिसमें से दो सदस्य ए.आई.एम.आई.एम. से हैं तथा भाजपा एवं पी.आर.टी.यू. दोनों से एक-एक सदस्य हैं और एक निर्दलीय है जबकि दो सीट रिक्त चल रही है।

राज्य विधानसभा में, कांग्रेस पहले ही बी.आर.एस के छः एम.एल.ए. को तोड़ चुकी है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री के.टी. रामाराव ने दलबदल करवाने को लेकर कांग्रेस की आलोचना की। सोशल मीडिया एक्स पर डाली गई एक पोस्ट में के.टी.आर. ने कहा "दलबदल करना कांग्रेस के घोषणा पत्र के खिलाफ जिसने इस मामले को लेकर संविधान की दसवीं अनुसूची में संशोधन करने का वादा किया था, जिसमें निर्वाचित सदस्यों के दलबदल कर एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाने पर स्वतः अयोग्य करने की मांग की गई है। के. केशव राव ने कांग्रेस में शामिल होने के बाद राज्यसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। रामराव ने कहा कि वे इस निर्णय का स्वागत करते हैं परन्तु बी.आर.आस. के उन विधायकों का क्या होगा जिन्होंने दलबदल किया और कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ा था तथा उन आधा दर्जन अन्य विधायकों का क्या होगा जो दलबदल करके कांग्रेस में सम्मिलित हुए हैं?" के.टी.आर. ने यह भी पूछा और राहुल गांधी पर निशाना साधा कि क्या उन्होंने इसी तरह से संविधान को सही ठहराया है।

के.टी.आर. ने अपने एक्स पोस्ट पर पूछा "यदि आप बी.आ.एस. के विधायकों से इस्तीफा नहीं ले सकते तो आप पर देश कैसे भरोसा करेगा कि कांग्रेस के घोषणा पत्र अनुसार दसवीं अनुसूची में संशोधन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं? यह कैसा न्याय पत्र हैं?" बी.आर.एस. ने पिछले साल हुए विधानसभा चुनावों में 39 सीटे जीती थी और सत्ता से बाहर हो गई। परन्तु उनकी संख्या छः विधायकों को कांग्रेस में दलबदल कर जाने के बाद कम हो गई और एक एम.एल.ए. की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। 119 सदस्यों वाली विधानसभा में जिस समय विधानसभा का गठन हुआ था कांग्रेस के सदस्यों की संख्या 65 थी जो अब बढ़कर 71 हो गई है।

# गहलोत राज में राज्य भंडारण निगम द्वारा अरबों...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

रकम मिलेगी। श्री शुभम लॉजिस्टिक ने बीकानेर में 29 गोदाम किराये पर लिए और उन्हें ए.एल.पी. के अधीन मानते हुए किराया राशि मात्र 15 प्रतिशत ही भंडारण निगम को दी, इससे विभाग को करीब 6 करोड़ रुपये की हानि हुई।

एम.ओ.यू. में एक शर्त यह भी थी कि, गोदामों में जमा स्टॉक का बीमा श्री शुभम लॉजिस्टिक कंपनी को ही करवाना था, लेकिन कंपनी ने इंश्योरेंस नहीं कराया, इस कारण करीब 3000 करोड़ रु. स्टॉक बिना किसी बीमा के रखा हुआ था। इस गंभीर लापरवाही के बावजूद कंपनी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। कंपनी द्वारा गोदामों पर स्टाफ तैनात नहीं करने के कारण सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई थी, इनके वेतन के 4 करोड़ रु. कंपनी से वसूले जाने चाहिए थे। मंत्री का आरोप है कि, वेयर हाऊस मैनेजमेंट सिस्टम के लिए डब्ल्यू.ई. एक्सेल सॉफ्टेवयर कंपनी चंडीगढ़ से 3.7 करोड़ रुपये का सॉफ्टवेयर एकल निविदा में खरीदा गया, अगर यह टैंडर खुली शर्तों में होता तो करीब 2.5 करोड़ रु. की बचत होती।

डॉ. किरोडीलाल का कहना है कि गहलोत राज में हुआ यह टैंडर शुरू से ही विवादों में रहा, क्योंकि इसकी शर्तें कुछ इस प्रकार तय की गई थी कि इन दोनों कंपनियों के अलावा कोई इस निविदा में भाग ही नहीं ले सके। हैरानी की बात यह थी कि इस टैंडर के खिलाफ राजस्थान हाईकोर्ट में भी एक याचिका दायर हुई थी, जिस पर अदालत ने टैंडर पर रोक लगा दी थी। इसके बाद तत्कालीन गहलोत सरकार व राज्य भंडारण निगम ने श्री शुभम लॉजिस्टिक कंपनी को टैंडर देने के लिए राजस्थान उच्च न्यायालय के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी और अदालत ने कुछ समय के लिए हाईकोर्ट के आदेश पर अस्थाई रोक हटायी थी, इसी बीच विभाग ने कंपनियों के साथ अनुबंध कर लिया। आज भी इस प्रकरण पर अंतिम फैसला आना शेष है।

**राज्य सरकार को भेजी गई सी.ए.जी. रिपोर्ट :-** सी.ए.जी. की रिपोर्ट में कहा गया है कि, एम.ओ.यू. की शर्तों के क्लॉज 15 में लिखा है कि अनुबंधित कंपनी को सरकार द्वारा निर्धारित गोदामों की 70 प्रतिशत की उपयोगिता सुनिश्चित करनी थी। इस रिपोर्ट में भी माना गया कि इस शर्त की पालना नहीं करने पर, जुलाई 2023 तक राज्य सरकार को इस कंपनी से 64.08 करोड़ रुपये की पेनल्टी वसूलनी जानी थी, लेकिन इस रकम में से मात्र 46.54 करोड़ रु. ही वसूले गए, जबकि 17.64 करोड़ रु. अभी भी बकाया है। खास बात यह है कि दोनों कंपनियों को भंडारण निगम को 24.34 करोड़ रु. की बैंक गारंटी देनी थी, लेकिन इन कंपनियों ने मात्र 22.20 करोड़ रु. ही जमा करवाए। जब लेखाकारों ने भंडारण निगम अधिकारियों से इस बारे में जवाब मांगा तो उन्होंने कहा कि, यह प्रकरण अदालत में आर्बिट्रेशन में है, इसका फैसला लंबित है। लेखाकारों ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि, भंडारण निगम का यह जवाब स्वीकार योग्य नहीं है। उन्होंने आगे यह भी टिप्पणी की है कि, जब वर्ष 2021-22 में ही पता चल गया था कि दोनों कंपनियां गोदामों की 70 फीसदी उपयोगिता सुनिश्चित करने में फेल साबित हो ही रही तो फिर वर्ष 2022 से 2024 तक इन कंपनियों के साथ राजस्व साझा का अनुबंध जारी क्यों रखा गया?

ऑडिट रिपोर्ट की शर्त 15 में यह भी तय था कि, भंडारण निगम और श्री शुभम लॉजिस्टिक के बीच राजस्व साझेदारी क्रमशः 71:29 फीसदी की रहेगी, परन्तु यह राजस्व 15:85 के क्रम में मिला। ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया है कि भंडारण निगम ने, श्री शुभम लॉजिस्टिक को 'एग्री लॉजिस्टिकल पार्क' (ए.एल.पी.) में 75.96 करोड़ रु. का बिजनेस दिया, इस कारण कंपनी के राजस्व का प्रतिशत 29 प्रतिशत के बजाय 85 पहुंच गया। इससे पता चलता है कि भंडारण निगम ने इन कंपनियों को जुलाई 2020 से मार्च 2023 के बीच 26.22 करोड़ का अतिरिक्त बिजनेस दिया। उल्लेखनीय है कि ऑडिट रिपोर्ट के अनुसार कि गोदाम किराया, संधारण व स्टाफ वेतन का 32 प्रतिशत निगम ने दोनों कंपनियों को वसूलने दिया, जो कि करीब 49.74 करोड़ रु. की रकम थी।

जब निगम प्रशासन से लेखाकारों ने इस संदर्भ में पूछताछ की तो उन्होंने जवाब दिया कि, ए.एल.पी. में 85 प्रतिशत बिजनेस देने का फैसला बोर्ड ऑफ डायरैक्टर्स की मीटिंग में लिया गया था और ऐसा वर्ष 2010 से हो रहा है। लेखाकारों ने इस जवाब को भी संतुष्टिपूर्ण नहीं माना है।

ऑडिट रिपोर्ट में कहा गया कि, इन दोनों कंपनियों ने गोदामों में रखी गई कृषि उपज की एवज में 2430 करोड़ रु. का अपर्याप्त बीमा कराया, जिससे किसानों को फसल खराबे की स्थिति में भारी नुकसान झेलना पड़ सकता है। जब इस मुद्दे पर लेखाकारों ने भंडारण निगम से सवाल किया तो जवाब मिला कि प्रशासन ने दोनों कंपनियों को ई-मेल लिखा है और जवाब आने पर ऑडिटर्स को बता दिया जायेगा। लेखाकारों की टिप्पणी है कि निगम प्रशासन का यह जवाब, इंश्योरेंस लागू करवाने का फैलियर साफ जाहिर करता है।

ऑडिट रिपोर्ट में सामने आया है कि, दोनों कंपनियों ने अनुबंध के मुताबिक अतिरिक्त भंडारण क्षमता को बनवाने और उपयोग की एवज में 9.41 करोड़ रु. की अतिरिक्त परफॉरमेंस सिक्यूरिटी राशि जमा नहीं करायी। लेखाकारों को इस मुद्दे पर विभाग ने जवाब दिया है कि, हमने दोनों कंपनियों को कई बार बैंक गारंटी जमा करवाने के लिए पत्र लिखे हैं, लेकिन अभी तक भी यह लंबित है और प्रक्रिया जारी है। ऑडिटर्स ने इस जवाब को भी उपयुक्त नहीं पाया है। ऑडिट रिपोर्ट में टिप्पणी की गई कि एक वर्ष बीतने के बाद भी बैंक गारंटी वसूली नहीं होना भंडारण निगम का एक बड़ा फेलियर है। ऑडिट रिपोर्ट में लिखा गया है कि, गोदामों पर सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने की एवज में कंपनियों से 4.17 करोड़ रु. का वेतन राशि वसूलने में भी भंडारण निगम फेल साबित हुआ है। इसके अलावा भी अन्य कई मदों में करीब 6 करोड़ रु. की वसूली नहीं की गई है।

दोनों कंपनियों की बैंक गारंटी उपलब्ध नहीं कराने और कृषि उपज के स्टॉक का इंश्योरेंस नहीं करवाने और टैंडर की अन्य शर्तों की पालना नहीं करने पर उठे विवाद पर राज्य भंडारण निगम ने इन कंपनियों का भुगतान रोक दिया था। इसके बाद 3 अगस्त 2023 को इन कंपनियों ने भंडारण निगम की सहमति से राजस्थान हाईकोर्ट पहुंचकर आर्बिट्रेटर की नियुक्ति करवाई।

बताया जा रहा है कि आर्बिर्टेटर ने फैसला दिया है कि, भंडारण निगम इन कंपनियों को भुगतान कर दे, इसके बाद कंपनियां भी अपनी शेष बैंक गारंटी विभाग को जमा करवा दें। हैरानी की बात है कि ऑडिटर्स की कड़ी टिप्पणियों के बावजूद भी राज्य भंडारण निगम ने आर्बिट्रेशन" के माध्यम से इस मामले का निपटारा क्यों करना उचित समझा। इससे भी बड़ी ताज्जुब की बात है कि, सी.ए.जी. व अन्य वार्षिक ऑडिट रिपोर्ट्स में कंपनियों व भंडारण निगम की कार्यशैली पर कई सवाल खड़े किए जाने के बावजूद भी आर्बिट्रेटर द्वारा इस तरह का अवॉर्ड दिया गया, जिससे प्रतीत होता है कि कंपनियों को बहाल किया जा रहा है। वर्तमान में यह प्रकरण सुप्रीम कोर्ट के समक्ष भी लंबित है। इस प्रकरण में आर्बिट्रेटर द्वारा दिए गए अवॉर्ड को भी राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है।

## अमेरिका में...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

गई। फिलाडेल्फिया, बोस्टन और कनेक्टिकट में गोलीबारी की घटनाओं में तीन लोग मारे गए। क्वींस सेक्शन में एक अपार्टमेंट में आठ साल के एक लड़के की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। पिछले साल भी स्वतंत्रता दिवस के मौके पर छुट्टी के दिन गोलीबारी में एक दर्जन से ज्यादा लोग मारे गए थे।

## काफी रोचक...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

कश्मीर भू-भाग में आती हैं। भाजपा किसी को भी मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं करेगी, चुनावों में प्रचार व वोट के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चेहरे का इस्तेमाल किया जाएगा।

संभावना है कि भाजपा, पूर्ववर्ती रियासत के डोगरा राजा महाराजा हरिसिंह की विरासत को मुद्दा बनाकर चुनाव लड़ना चाहेगी जिन्होंने भारत संघ में शामिल होने का फैसला किया था। भजपा पार्टी के प्रचार मुद्दों की रणनीति में पी.डी.पी. की महबूबा मुफ्ती को अनन्तनाग-राजौरी के चुनावों में हुए नुकसान को तथा अभी कुछ समय पूर्व समाप्त हुए लोकसभा चुनावों में हार के मुद्दे को भुनाना चाहती है।

भाजपा के करीबी सूत्रों का कहना है कि भाजपा चुनावों में जम्मू व कश्मीर बैंक घोटाला तथा प्रचार में रोशनी घोटाला कांड को भी उठाएगी।

## अल्पसंख्यक...

**( प्रथम पृष्ठ का शेष )**

में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिये अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा आर्थिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों को 20 लाख रुपये की छात्रवृति देती है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोनः2386031, 2386032, फैक्सः0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोनः2200660, फैक्सः 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोनः 2413092, 2418945, फैक्सः 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोनः 2627612, फैक्सः0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोनः 226422, 226423, फैक्सः 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोनः 230200, 230400, फैक्सः 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोनः 256906, 256907, फैक्सः01562-256908